जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 17 संख्याः 79 प्रभात हिण्डौन सिटी, मंगलवार 21 जनवरी, 2025 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

'अमेरिका का स्वर्णिम युग आज से, अभी से शुरू हो रहा है, अमेरिका फिर से विश्व की सबसे बड़ी महाशक्ति बनेगा'

अमेरिका के 47 वें राष्ट्रपति पद की शपथ लेते हुए डॉनल्ड ट्रम्प ने महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं

- ट्रम्प ने अमेरिका की दक्षिणी सीमा पर आपातकाल लगाने की घोषणा की, यहाँ मैक्सिको से भारी घुसपैठ होती है।
- ''रिमेन इन मैक्सिको'' पॉलिसी को लागू करने की घोषणा की।
- पकड़ो और छोड़ो प्रथा को समाप्त किया जाएगा।
- मैक्सिकन ड्रग कार्टल को विदेशी आतंकवादी घोषित करेंगे।
- नैशनल एनर्जी इमरजैंसी घोषित।
- फ्री स्पीच के लिए अमेरिका में सैंसर शिप पर रोक।
- थर्ड जैंडर समाप्त, अब सिर्फ मेल और फीमेल जैंडर ही होंगे।
- पनामा नहर को वापस लेने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

वॉशिंगटन, 20 जनवरी। अमेरिका में एक बार फिर ट्रंप युग लौट आया है। रिपब्लिकन नेता डॉनल्ड ट्रंप ने अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण कर ली है। इस शपथ के साथ ही ट्रंप अमेरिका 47वें राष्ट्रपति बन गए हैं।ट्रंप के शपथ लेने के बाद कुछ देर तक कैपिटल बिल्डिंग के रोटुंडा में तालियों की गड़गड़ाहट गूंजती रही। इससे पहले उन्होंने 2017 से 2021 तक अमेरिका के 45वें राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया था। ट्रंप ने स्थानीय समयानुसार दोपहर 12:01 बजे भारतीय समयानुसार सोमवार रात 10:30 बजे शपथ ली। मुख्य न्यायाधीश जॉन रॉबर्ट्स ने उन्हें शपथ दिलाई।

शपथ के बाद ट्रम्प ने 30 मिनट तक देश को संबोधित किया। अपने पहले भाषण में उन्होंने कहा, अमेरिका का स्वर्ण युग अभी शुरू हो रहा है। इस दिन से हमारा देश फिर से समृद्ध होगा और पूरी दुनिया में इसका सम्मान किया जाएगा। मैं अमेरिका को सबसे पहले रखूंगा। हमारी संप्रभुता को पुनः प्राप्त किया जाएगा। हमारी सुरक्षा बहाल की जाएगी। हम फिर से अमेरिका को महान बनाएंगे। न्याय के तराजू को फिर से संतुलित किया जाएगा। जस्टिस डिपार्टमेंट और हमारी सरकार का क्रूर, हिंसक और अनुचित हथियारीकरण समाप्त हो जाएगा।

ट्रंप ने अपने भाषण के दौरान कहा, ''मैं इस विश्वास और आशा के साथ राष्ट्रपति पद पर वापस आ रहा हूं कि हम राष्ट्रीय सफलता के एक रोमांचक नए युग की शुरुआत में हैं... देश में बदलाव की लहर चल रही है।'' उन्होंने कहा कि सरकार विश्वास के संकट का सामना कर रही है। उन्होंने कहा कि कट्टरपंथी और भ्रष्ट प्रतिष्ठान ने कई वर्षों से देश पर कहर बरपाया है। ट्रंप ने कहा कि अमेरिकी सरकार अब बुनियादी सेवाएं प्रदान नहीं कर सकती है, उन्होंने पश्चिमी उत्तरी कैरोलिना को तबाह करने वाले तूफान के विनाशकारी नतीजों की ओर इशारा किया। उन्होंने तर्क दिया कि दक्षिणी सीमा पर स्थिति नियंत्रण से बाहर है। राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा, ''आज से यह सब बदल जाएगा।''

डॉनल्ड ट्रंप अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति बने

डॉनल्ड ट्रंप ने आव्रजन (इमिग्रेशन)पर अपनी आगामी कार्यकारी कार्रवाई का जिक्र करते हुए कहा कि वह दक्षिणी सीमा पर आपातकाल की घोषणा करेंगे और अपने पहले कार्यकाल में लागू की गई कई नीतियों को फिर से लागू करेंगे। उन्होंने कहा कि वह पकड़ो और छोड़ो की प्रथा को समाप्त करेंगे और मैक्सिकन ड्रग कार्टेल को विदेशी आतंकवादी संगठन घोषित करेंगे।

डॉनल्ड ट्रंप ने कहा, हमारी प्राथमिकता एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करने की होगी जो गौरवान्वित, समृद्ध और स्वतंत्र हो। अमेरिका को पहले से कहीं ज्यादा महान, मजबूत और कहीं ज्यादा असाधारण होना चाहिए।

राष्ट्रपति की शपथ लेने के बाद ट्रंप ने कहा, अमेरिका का स्वर्णिम युग अभी से शुरू हो रहा है। इस दिन से हमारा देश फलेगा-फूलेगा और सम्मान पाएगा। मैं बहुत सरलता से अमेरिका को सर्वप्रथम रखूंगा।

ट्रंप ने कहा कि अमेरिका में सबको बोलने की आजादी रहेगी। किसी भी तरह का कोई प्रतिबंध नहीं रहेगा। सरकारी सिस्टम से कट्टर सोच को खत्म कर दूंगा।

राष्ट्रपति बनते ही ट्रंप ने मेक्सिको बॉर्डर पर नेशनल इमरजेंसी का ऐलान

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कांग्रेस का नया मुख्यालय क्या प्रियंका गांधी का दफ्तर बनेगा उनकी राजनीतिक गतिविधि के लिए?

नया मुख्यालय, जिसका नामकरण इन्दिरा भवन किया गया है, में केवल ग्राउण्ड फ्लोर नियमित रूप से कांग्रेस कवर करने वाले पत्रकारों के लिए खुला होगा। इन पत्रकारों को विशेष ''पास'' दिये जायेंगे, प्रवेश के लिए

- आम कार्यकर्ता और आम पत्रकारों का आना-जाना अभी भी पुराने मुख्यालय, 24, अकबर रोड से शायद होगा।
- इन्दिरा भवन, एक 'कॉरपोरेट ऑफिस'' जैसा लगता है, जहां आम कार्यकर्ता का आवागमन वर्जित सा होगा।

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 20 जनवरी। बड़ी भव्यता एवं कलात्मकता से संपन्न कांग्रेस का नया मुख्यालय एक म्यूजियम ज्यादा लगता है, जो कांग्रेस पार्टी के इतिहास, इसकी अतीत की उपलब्धियों तथा नेताओं, पार्टी के मूल तत्वों को खोजने के इसके प्रयासों, तथा उन नेताओं के बारे में जानकारी देता है, जो पार्टी का हिस्सा थे, यहां तक कि, जो बाद में पार्टी छोड़ भी गये।

यह मुख्यालय ठीक उसी तरह से एक कॉर्पोरेट आफिस जैसा दिखाई देता और महसूस होता है, जैसे जवाहर भवन दिखाई दिया करता था।

जवाहर भवन इस कदर अभिजात्य लगता था कि उसे पार्टी कार्यालय कहा ही नहीं जा सकता था और बाद में तो वह राजीव गांधी फाउण्डेशन तथा विविध प्रकार के अन्य कार्यालयों तथा फाउन्डेशनों का ठिकाना बन गया था, जो गांधी परिवार से सम्बद्ध थे।

कार्यकर्ताओं, जो किसी राजनैतिक पार्टी का आधार होते हैं, को इसके

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'सारी तैयारी है जल्दी ही यू.सी.सी. के क्रियान्वयन की घोषणा होगी'

उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कोड मैनुअल पर मंत्रिमंडलीय स्वीकृति के बाद कहा

- मुख्यमंत्री धामी ने कहा, हमने 2022 में उत्तराखण्ड के लोगों से वादा किया था कि सरकार बनने के बाद जल्द से जल्द यू.सी.सी. बिल लाया जाएगा। उत्तराखण्ड देश का पहला राज्य है जहां यू.सी.सी. का क्रियान्वयन होने जा रहा है।
- भाजपा शासित लगभग सभी राज्य यू.सी.सी. की दिशा में कोई ना कोई कदम उठा चुके हैं, इनमें गुजरात, मध्य प्रदेश, असम, यू.पी. प्रमुख हैं। जल्दी ही हरियाणा, महाराष्ट्र व यू.पी. में भी यह प्रक्रिया शुरू होगी।

- श्रीनंद झा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 20 जनवरी। उत्तराखंड देश का पहला ऐसा राज्य बनने जा रहा है, जहां यूनीफॉर्म सिविल रोड (यू सी सी) लागू हो रहा है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की कैबिनेट ने आचार संहिता को मंजूरी दे दी है।

मुख्यमंत्री ने कहा, हमने 2022 में उत्तराखंड की जनता से वादा किया था कि सरकार बनने के बाद जल्दी ही यू सी सी लाया जाएगा। वह वादा निभाया गया है। यू सी सी का ड्राफ्ट तैयार होकर पारित कर दिया गया है और राष्ट्रपति से भी इसे मंजूरी मिल गई है और अब यह तैयार है। ट्रेनिंग की प्रक्रिया लगभग पूरी होने को है और हर पहलू की समीक्षा कर ली गई है, जल्दी ही इसके क्रियान्वयन की तारीख घोषित कर दी जाएगी।

यू सी सी के तहत पर्सनल लॉज़ का सैट लागू करना होता है, जो सभी नागरिकों पर समान रूप से लागू होता है, चाहे वे किसी भी जाति या धर्म के हों, स्त्री हों या पुरुष हों। इसके तहत शादी -विवाह, गोद लेने, विरासत व उत्तराधिकार जैसे मामले आते हैं।

पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में असम तक कई भाजपा शासित राज्यों ने यू सी सी के क्रियान्वयन के लिए कदम उठाए हैं। वर्ष 2022 में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने यू सी सी के क्रियान्वयन के लिए एक कमेटी बनाने की घोषणा की थी। उनका कहना था कि इससे बाहरी लोग आदिवासी महिलाओं से विवाह नहीं कर पाएंगे, जो वे उनकी जमीन हड़पने के लिए करते हैं।

असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा सरमा ने इसलिए यू सी सी का पास कि, क्योंकि इससे मुस्लिम समुदाय में एक से ज्यादा विवाह पर रोक लगेगी।

उन्होंने कहा यू सी सी नहीं लागू हुआ तो कई शादियां करने की प्रथा चलती रहेगी। एक आदमी तीन-चार शादियां करेगा, इससे महिलाओं के मौलिक अधिकार का हनन होगा।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दस लाख डॉलर खर्च करके ट्रम्प के मेहमान बने अंबानी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जनवरी। ना तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, ना ही भारत के टॉप उद्योगपति गौतम अडानी और मुकेश अंबानी को यू.एस. प्रेसिडैंट ट्रंप के कार्यकाल के उद्घाटन के लिए निमंत्रण मिला था।

- ट्रम्प के शपथ ग्रहण समारोह में मुकेश व नीता अंबानी के नज़र आने पर यह चर्चा थी कि वे आमंत्रित हैं, पर वास्तविकता यह है, कि उन्होंने दस लाख डॉलर (8.65 करोड़ रु.) में यह निमंत्रण खरीदा था।

भारतीय मीडिया में, डॉनल्ड ट्रंप के दूसरे शपथ ग्रहण समारोह में मुकेश अंबानी के शामिल होने का लेकर भारी हलचल थी, कि उन्हें कितना बड़ा सम्मान दिया गया है। तथापि, एक महत्वपूर्ण बात किसी ने नहीं बताई कि, शायद जानबूझकर, कि अंबानी और उनकी पत्नी को निमंत्रण नही मिला था,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ट्रेनी डॉक्टर रेप मर्डर केस के फैसले से नाखुश है आम जनता

लोगों को स्थानीय पुलिस पर भरोसा नहीं है और उनका मत है कि सी.बी.आई. ने भी विश्वासघात किया

- लोगों का कहना है कि ट्रेनी डॉक्टर के शरीर पर जितनी चोटें थीं वह एक व्यक्ति का काम नहीं है, जांच में बड़े लोगों को बचाया जा रहा है।
- मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा, आरोपी संजय रॉय को फांसी होनी चाहिए, लोग पूछ रहे हैं कि वे आरोपी को फांसी दिलाने पर क्यों आमादा हैं क्या उन्हें डर है कि संजय रॉय कोई बड़ा राजफाश कर देगा।
- मृतक ट्रेनी डॉक्टर के पिता ने भी जांच व फैसले पर नाखुशी जताई और कहा कि उन्हें सारे प्रकरण से दूर रखा गया, आनन-फानन में उनकी बेटी का दांह संस्कार कर दिया गया।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जनवरी। कोलकाता में सियालदाह की एक शहर अदालत ने, पांच माह पूर्व सरकारी अस्पताल आर.जी. कर मैडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल में हुए, एक जूनियर डॉक्टर के रेप व हत्या के मामले में फैसला दे दिया है। न्यायाधीश ने कहा कि उपलब्ध सबूतों के आधार पर वो, नागरिक स्वयंसेवक संजय रॉय को उम्रकैद की सजा दे रहे हैं।

इस फैसले ने स्पष्ट रुप से राज्य प्रशासन के उच्चतम स्तर पर अनियमितताओं को लेकर संदेह का पिटारा खोल दिया है। लोग स्थानीय पुलिस पर अपने अविश्वास और सी.बी.आई. द्वारा विश्वासघात को खुलेआम व्यक्त कर रहे हैं।

अभियोग पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए, राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने तुरंत टिप्पणी की कि, यह मृत्युदंड का फैसला नहीं है, इस बात से वो संतुष्ट नहीं हैं। उन्होंने वही बात दोहराई जो उन्होंने हत्या के तुरंत बाद आरोपी संजय की गिरफ्तारी के तुरंत बाद कही थी।

सबसे बड़ा संदेह यह था कि मुख्यमंत्री आरोपी को तुरंत फांसी पर लटकाने पर क्यों जोर दे रही हैं। क्या वो मुख्य आरोपी द्वारा भविष्य में किए जाने वाले संभावित खुलासों तथा सभी साक्ष्यों को मिटाने के लिए ऐसा कर रही हैं। शहर अदालत के इस फैसले को चुनौती दी जाएगी, मृत डॉक्टर के माता-पिता सुप्रीम कोर्ट से हस्तक्षेप की मांग कर रहे हैं।

तथापि, जानकार लोगों का मानना है कि यह स्पष्ट रुप से उच्च संपर्क वाले कुछ लोगों को बचाने का मामला है, जिनका उल्लेख दबी ज़ुबान में किया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अपना केस लड़ने के लिए टॉप लॉ फर्मों की सेवाएं ली अडानी ने

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जनवरी। अमेरिका की लॉ फर्म, कर्कलैण्ड एण्ड एलिस तथा क्विन इमैनुअल, एस.ई.सी. (सिक्यूरिटीज़ एण्ड एक्सचेंज कमिशन) एवं ईस्टर्न डिस्ट्रिक्ट ऑफ न्यूयॉर्क के खिलाफ अडानी ग्रुप पर सोलर एनर्जी अनुबंध हासिल करने के

- अडानी पर 250 मिलियन डॉलर की रिश्वत देने का आरोप लगाकर न्यूयॉर्क के ईस्टर्न डिस्ट्रिक्ट तथा सिक्युरिटीज एण्ड एक्सचेंज कमीशन ने केस दर्ज किया है।

लिए 250 मिलियन डॉलर की रिश्वत देने के आरोपों के मामले में अडानी ग्रुप का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। हालांकि, ए.जी.ई.एल. (अडानी ग्रीन एनर्जी लि.) के संस्थापक गौतम अडानी तथा दो अन्य ने कहा कि उन पर यू.एस. एफ.

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'फागी रोड पर मुहाना मोड़ से रिंग रोड तक अतिक्रमण क्यों नहीं हटे'

जयपुर, 20 जनवरी। राजस्थान हाईकोर्ट ने फागी रोड पर मुहाना मोड से रिंग रोड तक स्थित 200 फीट चौड़ी सडक़ से अतिक्रमण नहीं हटाने के मामले में, जेडीए सचिव को तीन फरवरी को तलब किया है। अदालत ने जेडीए सचिव से पूछा है कि मौके पर अतिक्रमण होना स्वीकार करने के बाद भी कार्रवाई

- हाईकोर्ट ने जेडीए सचिव को 3 फरवरी को पेश होकर स्पष्टीकरण देने को कहा।

क्यों नहीं की गई। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस भुवन गोयल की खंडपीठ ने ये आदेश बंशीलाल योगी की जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। जनहित याचिका में अधिवक्ता प्रहलाद शर्मा ने बताया कि मास्टर प्लान, 2025

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'राजस्थान सरकार टैक्स की आय के जनकल्याणकारी उपयोग के लिए प्रतिबद्ध है'

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने उद्योग, व्यापार, कर सलाहकार व सेवा क्षेत्र के प्रतिनिधियों से बजट पूर्व चर्चा की

- मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने अल्प अवधि में कुशल वित्तीय प्रबंधन के साथ राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया है। जिसके कारण 2024 में जी.एस.डी.पी. की वृद्धि दर 12.56 प्रतिशत दर्ज की गई।
- उन्होंने कहा कि उद्योग एवं सेवा क्षेत्र राजस्थान की अर्थव्यवस्था में तीन-चौथाई योगदान करते हैं। राज्य सरकार इन दोनों क्षेत्रों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर रही है।

जयपुर, 20 जनवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य में उद्योग के लिए अपार संभावनाएं हैं तथा उद्योग एवं सेवा क्षेत्र राजस्थान की अर्थव्यवस्था में तीन-चौथाई योगदान देते हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इन दोनों क्षेत्रों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर रही है, जिससे प्रदेश की अर्थव्यवस्था को 350 बिलियन डॉलर तक ले जाने के संकल्प को पूरा किया जा सके।

शर्मा सोमवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में उद्योग, व्यापार, कर सलाहकार संघों एवं सेवा क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ दो सत्रों में आयोजित बजट पूर्व चर्चा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि औद्योगिक वृद्धि से अर्थव्यवस्था के मजबूत होने के साथ ही, लोगों को रोजगार के अवसर भी मिलते हैं। उन्होंने कहा, प्रदेश की निवेश -अनुकूल नीतियों से एमएसएमई के पंजीकरण तेजी से बढ़ रहे हैं। पिछले एक साल में करीब 5 लाख सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के पंजीकरण हुए हैं तथा एमएसएमई इकाइयों के पंजीयन में राजस्थान का चौथा स्थान है। उन्होंने कहा कि देश का सबसे बड़ा राज्य राजस्थान अब बड़े अवसरों की भूमि बन रहा है। सौर एवं पवन ऊर्जा उत्पादन में भी प्रदेश अग्रणी राज्य बन गया है।

शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार ने अल्प अवधि में ही कुशल वित्तीय प्रबंधन के साथ राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया है, जिसके फलस्वरूप

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को उद्योग, व्यापार, कर सलाहकार संघों एवं सेवा क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ बजट पूर्व चर्चा की।

हाईकोर्ट के परीक्षा रजिस्ट्रार को अवमानना नोटिस जारी

जयपुर, 20 जनवरी। राजस्थान हाईकोर्ट ने एडीजे भर्ती-2020 में वकील कोटे के 85 पदों पर केवल चार अभ्यर्थियों को ही एडीजे के पद पर नियुक्ति के लिए चयनित करने से जुड़े मामले में अदालती आदेश का पालन नहीं करने पर, हाईकोर्ट के परीक्षा रजिस्ट्रार पीपी सिंह को अवमानना नोटिस जारी कर जवाब देने के लिए कहा

- एडीजे भर्ती 2020 में अदालती आदेश का पालन नहीं करने पर यह नोटिस दिया गया।

है। जस्टिस पंकज भंडारी व शुभा मेहता की खंडपीठ ने यह आदेश नरेन्द्र मोहन की अवमानना याचिका पर दिया। सुनवाई के दौरान, खंडपीठ ने आश्चर्य जताया कि मामले में आदेश दिए एक साल का समय हो गया है और हाईकोर्ट प्रशासन की एसएलपी सुप्रीम कोर्ट ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

जीवन एक फूल है और प्रेम उसका मधु। –ह्यूगो

एक कबीर और चाहिए

हाल ही में जयपुर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में प्रदर्शित वृत्त चित्र कबीर पथ देखने का अवसर मिला। इस वृत्त चित्र में कबीर के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया। साथ ही उनके द्वारा रचित समाज के पाखंड का पर्दाफाश करने वाले बहुत सारे दोहे भी सम्मिलित थे। फिल्म को देखते समय एक विचार मन में आया कि जितनी प्रासंगिकता कबीर की आज से 600 वर्ष पूर्व थी उससे कहीं अधिक आज है। कबीर का जन्म 1398 में काशी में हुआ था।

वे वैरागी साधु थे। उनका विवाह लोई से हुआ। उनकी दो संतान थी, पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था। उनका पालन पोषण नीमा और नीरू ने किया जो जाति से जुलाहे (बुनकर) थे।

वे औपचारिक रूप से शिक्षित नहीं थे, किंतु उन्हें मानव स्वभाव, मनुष्य के ईश्वर के साथ संबंध और समाज के विभिन्न विषयों की गहन जानकारी थी। उनके द्वारा कहा गया एक-एक शब्द विचारोत्तेजक होता था। उन्होंने कई ऐसी बातें कहीं जिनकी कल्पना भी आज के समय में करना लगभग असंभव है। उस समय न तो लोकतंत्र था न ही संविधान, जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करता हो। इसके बावजूद न केवल कबीर जैसा व्यक्ति हुआ, अपितु 119 वर्ष तक जीवित रहकर अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को सुधारने और उसे दिशा दिखाने का कार्य करता रह सका। उनके दोहे बडे सारगर्भित थे और बहुत कम शब्दों में अत्यंत गहरी बात कह देते थे। कबीर सांप्रदायिक सद्भाव उत्पन्न करने का कार्य करते रहे। आज की स्थितियों को देखते हुए अविश्वसनीय लगता है और कभी-कभी तो लगता है कि यदि कबीर वर्तमान समय में हुए होते तो अब तक न जाने उनके विरुद्ध कितनी एफ आई आर, भावनाएं आहत करने के नाम पर दर्ज हो चुकी होतीं। शायद वे 'मॉब लिंचिंग' के शिकार हो गए होते।

कहा तो यह भी जाता है कि जब कबीर बीमार हुए तो उन्होंने स्वयं को एक कमरे में बंद कर लिया। बाहर हिंदू और मुसलमान आपस में इस बात पर लड़ रहे थे कि उनका अंतिम संस्कार किस विधि से किया जाय? हिंदुओं का कहना था कि वे हिंदू थे इसलिए उनके शरीर का दाह संस्कार किया जाय जबकि मुस्लिम चाहते थे कि कबीर को दफनाया जाए क्योंकि वे मुस्लिम थे। दोनों पक्ष इस बारे में झगड़ा कर ही रहे थे, तभी किसी ने कहा कि दरवाजा खोलकर उन्हें देख तो लो कि उनकी क्या स्थिति है? जब लोग दरवाजा खोल कर कमरे में गए तो उन्होंने देखा कि वहां पर कबीर का शरीर नहीं बल्कि एक चादर थी जिस पर बहुत सारे फूल रखे हुए थे। इनमें से चादर तो मुसलमान अपने साथ ले गए और उन्होंने उसे उनकी मजार बनाकर चढ़ाया। फूलों को हिंदुओं और मुसलमानों ने आधा-आधा बांट लिया। मुसलमान के द्वारा फूल उनकी मजार पर चढ़ा दिए गए और हिंदुओं द्वारा उनके समाधि स्थल पर चढ़ाए गए।

वे सामाजिक कुरीतियों और धर्म के नाम पर चलने वाले पाखंड के घोर विरोधी थे। उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से दोनों धर्मों के पाखंडपूर्ण व्यवहार पर करारी और तीखी चोट की। उदाहरण के लिए, उन्होंने हिंदुओं द्वारा मूर्ति पूजा को निशाना बनाते हुए कहा :–

''पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहाड़,
तातें या चक्की भली, पीस खाए संसार।''

इसी प्रकार उन्होंने मस्जिदों से दी जाने वाली अज़ान के बारे में यह लिखा :–

''कांकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई चुनाय,
ता ऊपर मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।''

क्या आज किसी कवि में यह साहस हो सकता है ? कोई साहस कर भी ले, तो क्या उसके विरुद्ध कोई कानूनी कार्रवाई नहीं होगी? अधिक संभावना तो यही है कि ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध फतवा जारी कर दिया जाएगा। इसे समाज सुधार बताने के बजाय धर्म पर हमला घोषित कर दिया जाएगा।

कबीर का मानना था कि हर इंसान में ईश्वर का निवास होता है। उसे मंदिर-मस्जिद में ढूंढना सही नहीं है।

उन्होंने यह भी कहा कि भगवान ना तो काबा में मिलेगा ना काशी में बल्कि वह तो हर इंसान में मिलेगा।

उनकी ये पंक्तियां देखिए:–

'मोको कहां ढूंढे रे बंदे मैं तो तेरे पास में
न मंदिर में न मस्जिद में, न काबा न कैलाश में।''

उनका मानना था कि ईश्वर को किसी धर्मस्थान में ढूंढना व्यर्थ है, वह तो हर मनुष्य में है। यदि मनुष्य का मन शुद्ध और निर्मल है तो वह ईश्वर के ही समान है। उन्होंने हर इंसान में ईश्वर के स्वरूप को देखा और उसी की सेवा करने पर बल दिया।

किसी भी नदी या कुंड में स्नान करके पाप धोने की परंपरा पर भी उन्होंने कटाक्ष किया। उस जमाने में उन्होंने यह स्पष्ट रूप से कहा कि किसी भी व्यक्ति के पाप, किसी पानी से धोने से नहीं समाप्त हो सकते। इसके लिए मनुष्य को कुछ अच्छा कर्म करना होता है और उनकी दृष्टि में अच्छे कर्म से ही पाप धुल सकते हैं न कि किसी जगह जाकर नहाने या डुबकी लगाने से। आजकल जबकि महाकुंभ हर मीडिया चैनल पर छाया हुआ है, उस समय यदि इस प्रकार की बात कोई लिख या कह देता तो उसे शायद जीवित नहीं छोड़ा जाता।

कबीर ने यह बात कही कि इंसान किसी भी वर्ग, जाति, धर्म का क्यों न हो, सबके खून का रंग लाल ही होता है तो फिर कोई व्यक्ति किसी दूसरे से छुआछूत कैसे कर सकता है और कैसे दूसरे से घृणा कर सकता है? ऐसा करते समय क्या वह दूसरे में ईश्वर के दर्शन नहीं करता?

उनका कहा यह दोहा देखिए:–

''काहे को कीजे पांडे छूत विचार
छूत ही ते उपजा सब संसार
हमरे कैसे लोहू तुमरे कैसे दूध
तुम कैसे बामन पांडे हम कैसे सूद (शूद्र)।''

कबीर ने यह बात कही कि इंसान किसी भी वर्ग, जाति, धर्म का क्यों न हो, सबके खून का रंग लाल ही होता है तो फिर कोई व्यक्ति किसी दूसरे से छुआछूत कैसे कर सकता है और कैसे दूसरे से घृणा कर सकता है? ऐसा करते समय क्या वह दूसरे में ईश्वर के दर्शन नहीं करता?

कबीर का मानना था कि केवल किताब में पढने से कोई पंडित नहीं हो जाता और बडी बडी पोथियां पढने वाले भी मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। केवल प्रेम शब्द को अपने जीवन में अपना लेने पर व्यक्ति वास्तविक ज्ञानवान हो जाता है। उनकी पंक्तियां इस प्रकार हैं :–

''पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ ,पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का पढ़े, सो पंडित होय।''

वर्तमान समय में भी हम देखें तो पाएंगे कि अधिकांश भ्रष्टाचार और घोटाले अधिक पढ़े-लिखे व्यक्तियों द्वारा ही किए जा रहे हैं। कम पढा-लिखा व्यक्ति तो छल-कपट जानता ही नहीं है। ये पंक्तियां उस व्यक्ति के द्वारा लिखी गई थीं, जो नितांत निरक्षर अवश्य था किंतु जो मन की गहराइयों में डुबकियां लगाता था। यह इस बात की ओर भी संकेत करती हैं कि हमें अपनी शिक्षा पद्धति में ऐसा परिवर्तन करना चाहिए जो प्रेम के मानवीय गुण को विद्यार्थियों में प्रारंभ से ही प्रतिष्ठापित करे।

आज यदि इन पंक्तियों के मर्म को समझ कर व्यक्ति व्यवहार करना प्रारंभ कर दे तो सारे समाज में वातावरण प्रेम मय हो जाए और पढने के बाद भी जो लोग एक-दूसरे के जान के दुश्मन हो रहे हैं ऐसी प्रवृत्ति अपने-आप समाप्त हो जाए।

जो लोग सदैव दूसरों में बुराई ढूंढते रहते हैं उनको संबोधित करते हुए कबीर ने कहा:–

''बुरा जो खोजन मैं चला, बुरा न मिलया कोय,
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।''

इसी प्रकार जो व्यक्ति दिन भर माला फेरते रहते हैं किंतु उल्टे-सीधे काम करने से नहीं हिचकते, उनके बारे में यह कहा:–

''माला फेरत जग मुआ, मिटा न मन का फेर
कर का मनका डारि के, मन का मनका फेर।''

कबीर दास जी का कहना था कि हाथ की माला को छोड़कर अगर मन की माला को फेरें तो मन कहीं अधिक शुद्ध हो सकता है। मन की शुद्धता को बनाए रखने पर जोर देते हुए ही कबीर ने यह लिखा था। आज जब सार्वजनिक जीवन में अधिकांश लोगों की कथनी और इन करनी में बहुत अन्तर है, उन्हें कबीर की इस वाणी पर गंभीरता से विचार कर अपने आचरण को परिवर्तित करना चाहिए। इससे सार्वजनिक जीवन में शुचिता बढ़ेगी।

सबके प्रति आदर भावना रखने की बात उन्होंने कितने सरल शब्दों में कह दी :–

''तिनका कबहुं न निंदिये, जो पांव न तर होय
कबहुं उड़े आँखिन पड़े पीर घनेरी होय।''

किसी छोटे से छोटे व्यक्ति की भी निंदा कभी मत कीजिए। पता नहीं कब वह आपके लिए अत्यंत पीडा का कारण बन जाए? यह उपदेश व्यक्तियों को किसी की भी निंदा करने से बचाने का काम करता है। यह आजकल बहुत आवश्यक है जब प्रतिदिन हम लोगों को गरिमा विहीन तरीके से एक दूसरे की निंदा करते हुए देखते हैं।

कबीर ने यह भी कहा था:–

''धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।''

यह उक्ति आज के समय न केवल प्रासंगिक है अपितु आवश्यक भी, क्योंकि कई युवा कम से कम समय में अमीर बनने के चक्कर में अपराध की दुनिया में कदम बढ़ा रहे हैं।

आज से 600 साल पहले धर्मांधता होते हुए भी कबीर जैसा सरल, निरक्षर व्यक्ति निर्भीकता से अपनी बात कह पाया, यह तत्कालीन शासकों की विभिन्न मतों के प्रति उदारता को ही दर्शाता है। भले ही कई लोग उस समय के शासकों को लगातार कोसते हों, वे आज के तथाकथित शासकों से तो इस मामले में बेहतर ही थे।

वे धार्मिक प्रतीकों के विरुद्ध थे और खुल पर अपनी बात कहते थे। आज, जब धर्मांधता चरम पर है, दोनों ही धर्मों के कट्टर लोग धर्म, जाती, भाषा, लिंग के नाम पर लोगों को विभाजित करके उन्हें लडाने के काम में लगे हैं, देश को एक बार फिर कबीर की आवश्यकता है जो सबको खरी-खरी बात कहने का साहस जुटा पाए। सरकार और समाज को ऐसे व्यक्ति के प्रति सहिष्णुता दर्शानी होगी। जब सभी धर्मों और जातियों के लोग कबीर की बात के मर्म को समझेंगे, तब ही इंसानियत का बोलबाला होगा। लोगों को यह भी समझ में आएगा कि केवल आडंबर और पाखंड से न देश का भला होने वाला है न स्वयं उनका।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

कुंभ मेला : हिंदू धर्म के मतों, संप्रदायों व समुदाय का समागम

राजेश्वर सिंह

हिंदू धर्म के नाम से जिस आस्था को हम जानते हैं, उसके क्रमिक विकास का परिचय हमें वैदिक वांग्मय, उपनिषद, पुराण, स्मृति, षटदर्शन, रामायण, महाभारत व श्रीमद्भागवत आदि से प्राप्त होता है। यद्यपि हिंदू धर्म में एक सर्वोच्च धर्म ग्रंथ, एक सर्वोच्च धर्म स्थल, व एक सर्वोच्च धर्माधिकारी की व्यवस्था नहीं है, किंतु चूंकि वेद का सार उपनिषद् में व उपनिषद् का सार श्रीमद्भगवद्गीता में समाहित है अत: श्रीमद्भगवद्गीता को हिंदू धर्म का आधारभूत ग्रंथ माना जा सकता है।

हिंदू धर्म में जिन तीन ग्रन्थों, उपनिषद, श्रीमद्भगवद्गीता व ब्रह्म सूत्र को प्रस्थानत्रयी माना जाता है, उन पर सर्वप्रथम शंकराचार्य ने भाष्य लिखा व अद्वैत मत का प्रवर्तन किया। इसके उपरांत यह परंपरा प्रारंभ हुई कि आचार्य की उपाधि उसी को दी जाएगी जो प्रस्थानत्रयी पर भाषण लिखेगा। केवल आचार्य को ही उक्त भाष्य के आधार पर मत प्रवर्तन व मठ स्थापना का अधिकार था।

शंकराचार्य के उपरांत रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत, मध्वाचार्य ने द्वैतवाद, निंबार्काचार्य ने द्वैताद्वैतवाद, वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैतवाद इत्यादि मतो का प्रवर्तन किया व मठ स्थापित किए। शंकराचार्य ने पंचदेवोपासना का भी प्रचलन किया, जिसके आधार पर शिव, विष्णु, शक्ति, सूर्य व गणेश की पूजा प्रारंभ हुई। वस्तुत: ये पंचदेव पंच महाभूतों का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिव आकाश तत्व, विष्णु जल तत्व, शक्ति अग्नि तत्व, सूर्य वायु तत्व व गणेश पृथ्वी तत्व के प्रतीक हैं।

पंचदेव उपासना के अतिरिक्त शंकराचार्य ने दशनाम संन्यास परंपरा का भी प्रचलन किया जिसमें गिरि, पर्वत, सागर उपाधि धारी संन्यासी ज्योतिर्मठ से, पुरी, भारती, सरस्वती उपाधिकारी श्रृंगेरी मठ से, तीर्थ, वन और अरण्य उपाधिकारी गोवर्धन मठ से तथा तीर्थ और आश्रम उपाधिधारी द्वारका मठ से संबंधित हैं। कालांतर में यह दशनाम संन्यासी 13 अखाडों में संगठित हुए जिनमें आव्हान, अटल, महानिर्वाणी, आनंद, जूना व अग्नि अखाड़े शैवमत के, दिगंबर, निर्मोही व निर्वाणी अखाड़े वैष्णव मत के, बड़ा पंचायती व नया पंचायती अखाड़े उदासीन मत के तथा निर्मल अखाड़ा सिक्ख मत का है। इसके अलावा 1954 में अखाड़ा परिषद भी अस्तित्व में आई जिसकी व्यवस्थाओं को सभी अखाड़े मान्यता देते हैं। अखाड़ों में आचार्य महा मंडलेश्वर, महा मंडलेश्वर, श्रीमहंत तथा अन्य पदाधिकारी होते हैं जिनका विधिवत रूप से लोकतांत्रिक पद्धति से चुनाव होता है। हिंदू धर्म का प्रत्येक मंदिर संस्थागत या वैचारिक रूप से किसी न किसी मत, मठ संप्रदाय अथवा अखाड़े से जुड़ा हुआ है, जो हिंदू धर्म की आंतरिक सुव्यवस्था व सुदृढ़ सांगठनिक संरचना का परिचायक है। इस प्रकार हिंदू धर्म विभिन्न मतों एवं संप्रदायों का समुच्चय या समूह है।

हिंदू धर्म, धर्म को जिस तरह से परिभाषित करता है, वह इसे मानव धर्म का स्वरूप प्रदान करता है। धर्म को विभिन्न स्मृतियों व ग्रन्थों में जिस तरह से परिभाषित किया गया है, उसमें संयम, नैतिकता, सत्याचरण, पवित्रता, सत्कर्म, करुणा, दया, प्रेम, परोपकार, दान, अक्रोध, धैर्य, क्षमा, विद्यार्जन इत्यादि सम्मिलित हैं।

धर्माचरण से मनुष्य स्व, पर और परम के एकत्व का अनुभव करता है, स्व को सर्व में और सर्व को स्व में देखने में समर्थ हो जाता है तथा शांति व सुख को प्राप्त करता है जो भौतिक, तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि से भी मानवीय अस्तित्व का चरम उद्देश्य व परम आवश्यकता है। इस प्रकार धर्म मनुष्य के लौकिक व पारलौकिक कर्तव्यों का मूलभूत व मार्गदर्शक सिद्धांत है। हिंदू धर्म के विभिन्न मतों व संप्रदायों में धर्म के इस मूलभूत तत्व को इष्ट देवता, मंदिर, धर्म ग्रंथ व पूजा पद्धति इत्यादि का आस्थामूलक बाह्य स्वरूप प्रदान किया गया है, जिसका उद्देश्य यह है कि सामान्य जन भी धर्म के गूढ व गहन सिद्धांतों को सरलता व सहजतापूर्वक समझ कर धर्माचरण में प्रवृत्त हो सके तथा शांति व सुख को प्राप्त कर सके।

समय के साथ अन्य धर्मों की तरह हिंदू धर्म में भी ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास, जातिवाद व अस्पृश्यता आदि कुरीतियां आई, जिन्हें बुद्ध, महावीर, भक्ति आंदोलन के संतों, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी इत्यादि महापुरुषों ने चुनौती दी, जिनके प्रति आमतौर पर हिंदू समाज सहिष्णु रहा व समय-समय पर आत्मालोचन, आत्म सुधार व आत्म परिष्कार में प्रवृत्त भी हुआ। हिंदू धर्म व हिंदू समाज की मूल चेतना व मुख्य धारा आदिकाल से आज तक प्रकृति प्रेमी, मानवतावादी, समतामूलक, उदार, सहिष्णु व सर्व समावेशी रही है तथा जीव में शिव को देखने में विश्वास करती है।

ज्योतिष के अनुसार नवग्रहों में सूर्य आत्म तत्व का, चंद्रमा मन का व बृहस्पति ज्ञान का कारक ग्रह है। इन तीन ग्रहों की विशिष्ट ब्रह्मांडीय स्थितियों में भारत में चार स्थान, प्रयाग, हरिद्वार, उज्जयिनी व नासिक पर कुंभ का आयोजन होता है। कुंभ मेला पंचमहाभूतों, पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश व वायु से प्रत्यक्ष संपर्क में रहकर आत्मा, मन व ज्ञान के निखार व परिष्कार का पावन अवसर प्रत्येक आस्थावान हिंदू को प्रदान करता है ताकि वह एकाग्र व सुसंगठित मन, वचन व कर्म से अपने लौकिक कर्तव्यों का निर्वहन करे तथा मानव जीवन के परम लक्ष्य, जन्म-मरण के चक्र से विमुक्ति की दिशा में अग्रसर हो।

इस प्रकार कुंभ मेला हिंदू धर्म के विविध मतों, संप्रदायों तथा विराट हिंदू समाज का विशाल समागम है, जो व्यापक जन समुदाय को मानव जीवन के मूल उद्देश्य को समझकर उसके अनुकूल जीवन पद्धति विकसित व व्यवस्थित करने का बोध प्रदान करता है। इस अवसर पर वीतरागी संतों तथा विद्वान महापुरुषों द्वारा प्रतिदिन जो तत्व चर्चा की जाती है तथा लोक मंगल के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जाता है, उसका समुचित प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए तथा मुख्य फोकस इसी पर होना चाहिए, ताकि कुंभ मेला आयोजन का मुख्य लक्ष्य गौण ना हो जाए और यह विराट धार्मिक सामाजिक व सांस्कृतिक आयोजन अपने मूलभूत उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल सिद्ध हो सके।

–राजेश्वर सिंह,
आईएएस (सेवानिवृत्त)।

जलदाय विभाग की लापरवाही के चलते ग्रामीण पेयजल की समस्या से परेशान

खेतड़ी में पेयजल पाइप लाइन से पांच दिन से व्यर्थ बह रहा है पानी

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी क्षेत्र में पानी की बड़ी समस्या है, वहीं दूसरी ओर जलदाय विभाग के अधिकारियों की लापरवाही के चलते पांच दिन से पाइप लाइन लीकेज होने के कारण पानी व्यर्थ बह रहा है। पाइप लाइन में पानी व्यर्थ बहने से आमजन को पेयजल की समस्या का सामना करना पड़ रहा है।

जानकारी के अनुसार मुख्य बस स्टैंड स्थित दरवाजे के पास करीब पांच दिन से परियोजना की पाइप लाइन में लिकेज होने से पानी व्यर्थ बह रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि मुख्य सड़क से कस्बे में पानी की पाइप लाइन जा रही है, उससे कस्बे के वार्डों में पानी की सप्लाई होती है, लेकिन पिछले करीब पांच दिन से पाइप लाइन लीकेज होने के कारण लाखों लीटर पानी व्यर्थ बह गया। समस्या को लेकर विभागीय अधिकारियों को अवगत भी करवाया गया, लेकिन अभी तक कोई समाधान नहीं किया। ग्रामीणों ने बताया कि पाइप लाइन से पानी लीकेज होने के कारण कई वार्डों में पानी की सप्लाई पूरी तरह से नहीं हो पा रही है और न ही पानी का प्रेशर आ रहा है। उन्होंने बताया कि कस्बे में भी पानी की किल्लत मची हुई है, लेकिन पाइप लाइन का रखरखाव करने वाली कंपनी लापरवाह बनी हुई है, जिससे ग्रामीणों को पानी के लिए परेशान होना पड़ रहा है।

ग्रामीणों ने बताया कि चार दिन से भी पानी की सप्लाई नहीं होती। पानी की लाइन को ठीक करवाने के लिए कई बार शिकायत भी कर चुके हैं, लेकिन फिर भी कंपनी लापरवाह बनी हुई है। पाइप लाइन में पानी का लीकेज सड़क किनारे होने से आने जाने वालों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। पानी सप्लाई शुरू होने पर ऊपर तक पानी का फव्वारा निकलता है, जिससे ऊपर से गुजर रही 11 केवी बिजली लाइन से बड़ा हादसा होने का अंदेशा बना हुआ है। ग्रामीणों ने बताया कि जल्द ही पाइप लाइन को दुरूस्त नहीं किया तो ग्रामीणों की ओर से विभाग कार्यालय के सामने विरोध-प्रदर्शन किया जाएगा।

इस संबंध में अधिशासी अभियंता सुनील कुमार ने बताया कि लाइन में लीकेज होने पर सप्लाई बंद करवा दी गई है, टीम को मौके पर भेजकर जल्द ठीक करवाया जाएगा।

- **कस्बे में पानी की किल्लत, पाइप लाइन का रखरखाव करने वाली कंपनी लापरवाह बनी**

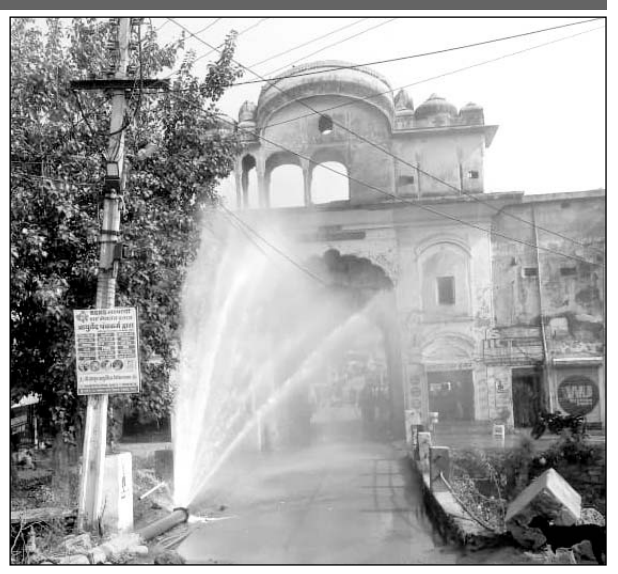

पानी सप्लाई शुरू होने पर ऊपर तक पानी का फव्वारा निकलता है।

संस्थापन अधिकारी के 351 और प्रशासनिक के 799 कर्मचारियों का प्रमोशन

शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारियों की पदोन्नति

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा विभाग ने प्रदेशभर में कार्यरत संस्थापन अधिकारियों और प्रशासनिक अधिकारियों के पदों पर पदोन्नति कर दी है। अब इनके पदस्थापन की तैयारी की जा रही है। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय और प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय के अलावा प्रदेशभर के कार्यालयों में इनका पदस्थापन अगले कुछ दिनों में शुरू हो सकता है। पिछले दिनों कर्मचारियों ने आंदोलन करके पदोन्नति की मांग की थी।

निदेशालय से जारी आदेश में संस्थापन अधिकारी 351 और प्रशासनिक अधिकारी 799 पदों पर नियमित पदोन्नति की गई है। अब वर्ष 2024-25 तक की पदोन्नति हो गई है। जयपुर में शिक्षा संकुल में शिक्षा सचिव कृष्ण कुणाल, निदेशक आशीष मोदी, संयुक्त शासन सचिव मनीष गोयल एवं संयुक्त शासन सचिव दिनेश शर्मा की कमेटी ने पदोन्नति प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया।

- **पिछले दिनों कर्मचारियों ने आंदोलन करके पदोन्नति की मांग की थी**

शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ के प्रदेशाध्यक्ष कमल नारायण आचार्य ने बताया कि 54 दिनों तक दिए धरने के परिणाम आ रहे हैं। शिक्षा विभाग के मंत्रालयिक कर्मचारियों की विभागीय पदोन्नति प्राथमिकता है। आज संस्थापन अधिकारियों 351 और प्रशासनिक अधिकारियों की 799 पदों पर वर्ष 2024-25 की नियमित डीपीसी अब तक कि सबसे बड़ी डीपीसी हो गई है। संघ के संरक्षक मदन मोहन व्यास और राजेश व्यास ने इस निणय का स्वागत किया है। व्यास ने बताया कि पदोन्नति के लिए संघ ने 20 फीट लंबा ज्ञापन दिया था। 54 दिन धरना दिया गया था।

बालिका स्कूल मर्ज करने पर छात्राओं का प्रदर्शन

जोधपुर, (कासं)। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय चौपासनी हाउसिंग बोर्ड दूसरा पुलिया को दूसरे स्कूल में मर्ज करने पर सोमवार को यहां अध्ययनरत छात्राओं ने विरोध जताया। छात्राओं ने स्कूल बंद कर प्रदर्शन किया और धरने पर बैठ गई। बाद में शिक्षा अधिकारी वहां पहुंचे और छात्राओं को इस संबंध में शिक्षा निदेशालय को पत्र लिखकर व्यवस्थाओं को यथावत रखने का आग्रह करने का आश्वासन दिया। तब छात्राओं ने अपना धरना समाप्त किया।

जानकारी के अनुसा शिक्षा विभाग ने हाल ही में आदेश जारी कर जोधपुर की 30 से लेकर 45 साल पुरानी स्कूलों को बंद कर अन्य स्कूलों में मर्ज कर दिया है। इनमें 550 और 450 बच्चियों के नामांकन के अलावा ग्रामीण क्षेत्र की प्राइमरी व मीडिल स्कूलों को भी नियमों को ताक में रखकर बंद किया गया। कई बालिका स्कूलों को बालक स्कूलों में मर्ज किया गया है। इसको लेकर विरोध प्रदर्शन शुरू हो गया है। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय चौपासनी हाउसिंग बोर्ड दूसरा पुलिया को भी राज्य सरकार द्वारा मर्ज करने का आदेश जारी हुआ है जिसको लेकर छात्राओं ने इसका विरोध किया और स्कूल के बाहर प्रदर्शन किया। मौके पर शिक्षा अधिकारी पहुंचे और छात्राओं को भरोसा दिलाया कि इस संबंध में शिक्षा निदेशालय को पत्र लिखकर व्यवस्थाओं को यथावत रखने का आग्रह किया जाएगा।

राशिफल मंगलवार 21 जनवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र रात्रि 11:37 तक, धृति योग रात्रि 3:49 तक, बव करण दिन 12:40 तक, चन्द्रमा दिन 10:03 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज द्विपुष्कर योग और राजयोग सूर्योदय से दिन 12:40 तक है। आज कालाष्टमी है, आज राष्ट्रीय माघ मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:54 से 11:14 तक, लाभ-अमृत 11:19 से 1:57 तक, शुभ 3:17 से 4:17 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:56

मेष
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्य में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आय में वृद्धि होगी। आज विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कन्या
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च में वृद्धि होगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

तुला
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तिय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

मीन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

ब्लॉक स्तरीय संवाद कार्यशाला आयोजित

करौली । महिला अधिकारिता विभाग द्वारा महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से संचालित 'बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना' एवं 'सशक्त नारी व सशक्त समाज' के संकल्प को साकार करने की दिशा में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की ब्रांड एम्बेसडर प्रोफेसर अनिता मीणा की अध्यक्षता एवं यूनिसेफ के एक्शनएड कार्यक्रम के जिला समन्वयक दिनेश कुमार बैरवा के सानिध्य में राजस्थान मरू उड़ान कार्यक्रम के तहत ब्लॉक स्तरीय संवाद कार्यशाला राजकीय देवनारायण बालिका छात्रावास करौली में आयोजित किया गया।

महिला अधिकारिता विभाग की सुपर वाइजर गोमती मीणा ने बताया कि संवाद कार्यक्रम में जिला समन्वयक दिनेश कुमार बैरवा ने वर्तमान में महिला एवं बालिकाओं की स्थिति, बढ़ते लिंगानुपात, महिलाओं एवं बालिकाओं पर बढ़ते अपराध, बाल विवाह, बालश्रम, बाल तस्करी, यौन शोषण, लिंग आधारित भेदभाव की रोकथाम एवं बाल संरक्षण को प्रभावी बनाने हेतु जोर दिया। उन्होंने कहा कि आज भी समाज में बालिकाओं को बालकों की तुलना में अलग नजरिये से देखा जाता है। बालिकाओं पर ज्यादा नियंत्रण रखतें है। जबकि बालको को खुली छूट दे दी जाती है। जिससे समाज में एक तरफा अपराध भी बढ़ने की संभावना रहती है। उन्होंने साइबर अपराध, पोक्सो एक्ट, पोश एक्ट, जे जे एक्ट सहित विभिन्न प्रकार की के अपराधों से संबंधित विधिक जानकारी प्रदान की। प्रोफेसर अनिता मीणा ने महिला एवं बालिकाओं को महिला सशक्तिकरण एवं सुरक्षा के संबंध में जानकारी दी एवं व्यावसायिक कौशल विकास कर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने, बालिका व महिलाओ से सम्बधित सरकारी योजनायें व मानसिक स्वास्थ्य आदि के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने महिलाओं को नि:शुल्क कौशल विकास के कोर्स एवं आत्मनिर्भर हेतु स्वरोजगार हेतु अनुदान आधारित ऋण योजनाओं की भी जानकारी दी। साथ ही बच्चों, किशोर एवं महिला, पुरूषों में बढ़ रहे हृदय रोग के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई एवं बाल विवाह की रोकथाम की शपथ भी दिलाई।

अन्तर्राज्यीय कृषक भ्रमण कार्यक्रम के तहत जिले के किसान होंगे सशक्त

करौला ,(निसं)। किसानों को खेती की नई तकनीक सिखाने के लिए जिले के प्रगतिशील किसानों को विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों व कृषि विश्वविद्यालयों आदि संस्थानों का भ्रमण करवाया जा रहा है।

इसी क्रम में आत्मा योजना के अन्तर्गत 50 किसानों के दल को 20 से 26 जनवरी तक 7 दिवसीय अन्तर्राज्यीय भ्रमण के लिए कलेक्ट्रेट परिसर से सोमवार को जिला कलक्टर नीलाभ सक्सेना एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी शिवचरण मीना ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

जिला कलक्टर ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि वे भ्रमण करने वाले सभी संस्थानों के विषय विशेषज्ञों से अच्छी तरह से संवाद करें व संस्थानों द्वारा लगाई गयी प्रदर्शनियों का अवलोकन करें, कृषि में किये जा सकने वाले नये नवाचारों का अध्ययन करें तथा भ्रमण में सीखी गई कृषि तकनीकों का अपने-अपने गावों में अधिकाधिक प्रचार-प्रसार कर वंचित किसानों को इसके लिए प्रोत्साहित करें। जिससे कृषि प्रधान जिले करौली के कृषक आधुनिक उन्नत कृषि तकनीक अपनाकर अधिक से अधिक लाभ अर्जित करने में सक्षम हो सकें।कृषि विभाग की आत्मा परियोजना के उपनिदेशक एवं पदेन परियोजना निदेशक धर्मसिंह मीना ने बताया कि जिले की सभी पंचायत समितियों से चयनित 50 प्रगतिशील युवा किसानों को अन्तर्राज्यीय कृषक भ्रमण कार्यक्रम के तहत मध्यप्रदेश की नीमच मंडी, भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान इन्दौर, महाराष्ट्र के जैन इरिगेशन सिस्टम लिन, जैन प्लास्टिक पार्क जलगांव, गुजरात के नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय औषधीय पादप एवं सुगन्धित पौध अनुसंधान संस्थान बोराईनी, आनन्द कृषि विश्वविद्यालय, अमूल डेयरी अनुसंधान केन्द्र इत्यादि संस्थानों का भ्रमण करवाया जाएगा। प्रगतिशील कृषक उक्त संस्थानों के वैज्ञानिकों व विषय विशेषज्ञों से संवाद कर प्रदर्शनी का अवलोकन करेंगे तथा विभिन्न कृषि, उधानिकी, पशुपालन, खेती आदि से संबंधित नवाचार की तकनीक को जानेंगें। उन्होंने बताया कि किसान विभिन्न फसलों के उन्नत बीज,किस्म,सिंचाई जल प्रबंधन,मृदा संरक्षण,संतुलित उर्वरक व कीटनाशी उपयोग,समेकित खेती प्रणाली,जैविक खेती,व्यवसायिक पशुपालन एवं उच्च उधानिकी तकनीक युक्त फल व सब्जियों की खेती व अन्य गतिविधियों के बारे में विस्तार से समझेंगे। उक्त भ्रमण हेतु कैलादेवी के सहायक कृषि अधिकारी गिर्राज प्रसाद मीना, प्रभारी एवं ससेडी के कृषि पर्यवेक्षक अनिल कुमार गुर्जर को सहप्रभारी नियुक्त किया गया है। भ्रमण दल को रवाना करते समय कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक वी.डी. शर्मा, आत्मा योजना के उपनिदेशक धर्म सिंह मीना, उद्यानिकी के उप निदेशक चेतराम मीना एवं आत्मा के उप परियोजना निदेशक हरभजन मीना सहित अन्य अधिकारी,कार्मिक एवं कृषक उपस्थित रहे।

समीक्षा बैठक आयोजित

भरतपुर । जिला कलक्टर डॉ. अमित यादव ने कहा कि सभी विभाग विकास कार्यों को तय समय में गुणवत्ता के साथ पूरा किया जाना सुनिश्चित करें। बजट घोषणाओं एवं विकास कार्यों की प्रगति की नियमित मॉनिटरिंग कर मौके पर प्रति सप्ताह जांच की जाए। जिला कलक्टर सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित साप्ताहिक समीक्षा बैठक में विभागवार प्रगति की समीक्षा करते हुए उपस्थित अधिकारियों को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि विकास कार्यों में देरी होने से आमजन को उनका समय पर लाभ नहीं मिल पाता है, ऐसे में सभी विभाग निर्धारित तिथि तक कार्यों को गम्भीरता से लेते हुए गुणवत्ता से पूर्ण कराऐं। उन्होंने आरएसआरडीसी द्वारा आरबीएम अस्पताल, लोहागढ स्टेडियम एवं उपखण्ड मुख्यालयों पर चल रहे निर्माण कार्यों में समय पर कार्य पूरा नहीं करने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए समय पर कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि भविष्य में सभी कार्यों की प्रति सप्ताह मौका निरीक्षण कर प्रगति लाऐं अन्यथा व्यक्तिश: जिम्मेदारी तय की जाएगी।

सार-समाचार

नरेंद्र पांचवी बार बने प्रदेश उपाध्यक्ष

सूरौठ । राजस्थान शारीरिक शिक्षा शिक्षक संघ का दो दिवसीय 35 वें प्रांतीय अधिवेशन आयोजित किया गया अधिवेशन में कस्बा सूरौठ निवासी विनीत कुमार मीना को पहली बार शारीरिक शिक्षक संघ का निर्विरोध प्रदेश उपाध्यक्ष, व नरेन्द्र बाबा कों पांचवी बार वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया गया राजस्थान शारीरिक शिक्षा शिक्षक संघ के मुख्य संरक्षण यतीश चंद्र शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष कर्णफूल मीना व जिला अध्यक्ष भूपाल सिंह मीना डॉ.मोहन चौधरी और किशन पलसानिया को वरिष्ठ उपाध्यक्ष बनाया गया करौली जिले के काफी संख्या में शारीरिक शिक्षकों ने इस सम्मेलन में भाग लिया , दो दिवस तक चले सम्मेलन में शारीरिक शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं पर विचार विमर्श किया ,कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मंच को अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों ने सुशोभित किया क्रीड़ा भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व ओलंपियन में गोपाल सैनी ने शारीरिक शिक्षकों को संबोधित करते हुए सरकार से मांग की विद्यालय में शारीरिक शिक्षा और योग शिक्षा को अनिवार्य रूप से घोषित करना चाहिए ,सैनी ने कहा कि शारीरिक शिक्षकों को अन्य गैर शैक्षिणक कार्यो से मुक्त और विद्यालयों में खेल बजट और छात्रों का दैनिक भत्ता बढ़ाया जाए महत्वपूर्ण मांगो का ज्ञापन तैयार कर राज्य सरकार को भिजवाने के लिए सौंपा गया, दूसरे सत्र में प्रदेश स्तरीय कार्यकारिणी का गठन किया गया बाईजट्ट राजकीय विद्यालय में कार्यरत हैं नरेंद्र बाबा सूरौठ,करौली जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाजना सपोटरा में कार्यरत शारीरिक शिक्षक विनीत कुमार मीना सूरौठ कों सर्वसम्मति प्रदेश उपाध्यक्ष बनाया, और महात्मा गांधी सूरौठ के वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक भूपाल सिंह मीना को जिला अध्यक्ष बनाएं जाने पर शारीरिक शिक्षकों ने संरक्षण यतीश चन्द शर्मा का आभार व्यक्त किया मीना सूरौठ कस्बे के मूल निवासी हैं एवं 2015 से प्रदेश कार्यकारिणी में सदस्य के रूप में शारीरिक शिक्षक संगठन में कार्य कर रहे हैं ।

सुरेन्द्र को मिली पीएचडी की उपाधि

नादौती । कैमरी गांव निवासी प्रोफेसर सुरेन्द्र सिंह गुर्जर ने मालवांचल यूनिवर्सिटी इंदौर से नर्सिंग में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। प्रोफेसर सुरेन्द्र सिंह पिछले 12 वर्षों से राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश सहित कई राज्यों के विभिन्न मेडिकल यूनिवर्सिटी में असिस्टेंट प्रोफ़ेसर और एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्य कर चुके है। वर्तमान में कजाकिस्तान के कारागंदा मेडिकल यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत है। डॉ सुरेन्द्र सिंह को डॉ जितेन्द्र चिचोलकर के सानिध्य में चाइल्ड हेल्थ नर्सिंग विषय के उच्च निष्ठा अनुकरण और नवजात पुनर्जीवन दक्षताओं में सुधार में इसकी भूमिका विषय में शोध कर पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। इंजी. भूपेन्द्र खटाना अधैत ने बताया कि उन्होंने इस उपलब्धि का श्रेय अपने पिता पीसीसी सदस्य शीशराम खटाना, ताऊजी रजन पटेल, के अलावा मार्गदर्शन करने वाले सभी लोगों को दिया है ।

विश्व कप जीतने पर खेल प्रेमियों ने खुशी मनाई

भरतपुर। भरतपुर- 13 से 19 जनवरी तक दिल्ली के इन्दिरा गांधी स्टेडियम में आयोजित प्रथम खो-खो विश्व कप में दोनों ही वर्ग पुरूष/महिला भारतीय टीम को विजेता बनने पर भरतपुर खो-खो संघ के खेल प्रेमियो ने विश्वप्रिय शास्त्री पार्क स्थित घना चौपाटी पर एकत्रित होकर मिठाई खिलाकर आतिशबाजी कर खुशी मनाई। इस वर्ल्ड कप में तकनीकी अधिकारी रहे भरतपुर जिला खो-खो संघ संरक्षक डॉ संदीप देशवाल का खेल प्रेमियों ने स्वागत किया। भरतपुर जिला खो-खो संघ सचिव कृष्णा देशवाल ने बताया इस वर्ल्ड कप से राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं अपितु जिला स्तर पर भी खो-खो खेल को नया आयाम मिलेगा। इससे खो-खो खिलाड़ियों का खेल स्तर सकारात्मक रूप से बढ़ेगा और इससे खो-खो खेल का भविष्य सुनहरा होगा। इस अवसर पर डॉ राकेश चाहर, भगत सिंह सूरौता, डॉ संदीप देशवाल, मयंक चौधरी, गौरव, सिद्धू चौधरी, धर्मेश शर्मा, रामकिशोर कूम्हां आदि मौजूद रहे।

राजस्थान राज्य कर्मचारी महासंघ की बैठक आयोजित

भरतपुर । अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ जिला अध्यक्ष राजेंद्र शर्मा द्वारा आयोजित बैठक महासंघ के संरक्षक हेमराज सिंह सिनसिनवार की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

इस मौके पर महासंघ के जिला अध्यक्ष राजेन्द्र शर्मा ने केंद्र सरकार द्वारा आठवें वेतन आयोग गठित किए जाने की स्वीकृति को लेकर आभार व्यक्त किया। मीडिया प्रभारी प्रेम मंगल ने जानकारी देते हुए बताया कि अध्यक्ष राजेंद्र शर्मा ने कर्मचारी महासंघ की बैठक में कर्मचारियों की मांगो पर पुन: चर्चा की गई।

महासंघ के जिला मंत्री भूदेव छौंकर ने कहा कि राज्य सरकार शीघ्र ही कर्मचारी हित में निर्णय लेकर वेतन विसंगति पदोन्नित, पदनाम परिवर्तन, जैसी मूलभूत मांगों को लेकर महासंघ के मांग पत्र को निस्तारित करे। इस अवसर पर महासंघ के मीडिया प्रभारी प्रेम मंगल ने कहा कि 7 फरवरी को कलेक्ट्रेट के मुख्य द्वार पर एक दिवसीय धरना व प्रदर्शन कर मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर को महासंघ का मांग पत्र सौंपा जावेगा। धरने में समस्त विभागीय जिला अध्यक्ष जिला मंत्री महासंघ पदाधिकारी व बड़ी संख्या में कर्मचारी भाग लेंगे। बैठक जिला एवं ब्लॉक स्तर के पदाधिकारियों सहित बड़ी संख्या में कर्मचारी उपस्थित रहे।

> ■ महासंघ के जिला अध्यक्ष राजेन्द्र शर्मा ने केंद्र सरकार द्वारा आठवें वेतन आयोग गठित किए जाने की स्वीकृति को लेकर आभार व्यक्त किया

शारीरिक शिक्षक संघ का प्रांतीय अधिवेशन आयोजित

सूरौठ । राजस्थान शारीरिक शिक्षा शिक्षक संघ का दो दिवसीय प्रांतीय अधिवेशन कृषि विभाग के ऑडिटोरियम हॉल टोंक में आयोजित किया गया। अधिवेशन में कस्बा सूरौठ निवासी नरेंद्र बाबा को पांचवीं बार शारीरिक शिक्षक संघ का निर्विरोध प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजस्थान शारीरिक शिक्षा शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष हापू राम चौधरी व जिला अध्यक्ष लोकेश मीणा ने बताया कि करौली जिले के काफी संख्या में शारीरिक शिक्षकों ने इस सम्मेलन में भाग लिया । दो दिवस तक चले सम्मेलन में शारीरिक शिक्षकों की ज्वलंत समस्याओं पर विचार विमर्श व मंथन किया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के जलदाय मंत्री कन्हैया लाल चौधरी को शारीरिक शिक्षकों की महत्वपूर्ण मांगो का ज्ञापन तैयार कर राज्य सरकार को भिजवाने के लिए सौंपा गया। दूसरे सत्र में प्रदेश स्तरीय कार्यकारिणी का गठन किया गया।

पटवार संघ ने 9 सूत्रीय मांगों को लेकर निकाली रैली

करौला । करौली जिला मुख्यालय पर पटवार संघ द्वारा 9 सूत्रीय मांगों को लेकर मुंशी त्रिलोक चंद माथुर स्टेडियम से रैली निकालकर जिला कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन किया। साथ ही राजस्व विभाग के नाम जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा। जिसमे मांग पूरी करने की गुहार लगाई है। शाखा अध्यक्ष लाखन सिंह,अरविंद जाटव,तहसील अध्यक्ष नरेश कुमार ने बताया कि प्रदेश में पटवार संघ कि 9 सूत्रीय मांग लंबे समय से लंबित चल रही हैं जिनका निस्तारण अभी तक नहीं हुआ है।

इन मांगों को लेकर पूर्व में कई बार धरना प्रदर्शन भी किए गए उच्च अधिकारियों से वार्ता हुई। लेकिन वार्ता का कोई असर देखने को नहीं मिला। इसलिए इन मांगों को लेकर एक बार फिर 13 जनवरी से पटवार संघ प्रदेश में अनिश्चितकालीन हड़ताल पर बैठे हैं। इसको लेकर सभी विभागीय व्हाट्सएप ग्रुप से लेफ्ट हो गए और हड़ताल पर भी रहे हैं।

इन सभी मांगों को लेकर सोमवार को रैली निकाल कर विरोध प्रदर्शन किया गया। रैली प्रदर्शन के बाद जिला कलेक्टर को विभिन्न मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा। मांगों को पूरा नहीं होने पर प्रदेश स्तर पर आंदोलन की चेतावनी दी है।

पटवार संघ कि यह मांगे पटवारी पद को तकनीक पद घोषित करते हुए ग्रेड पे 3600 करने एवं गिरदावरी एप में पटवार संघ के अनुसार आवश्यक संशोधन करवाया जाए ताकि गिरदावरी पटवारी द्वारा ही किया जाना संभव हो, 1035 पटवार मंडल एवं भनोटी कमेटी में वित्तीय स्वीकृति से शेष पटवार मंडल एवं भू अभिलेख निरीक्षक भर्ती कि वित्तीय स्वीकृति जारी करने,डीसी का आयोजन, लिफाफा बंद प्रकरणों का निस्तारण की मांग,752 नवसृजित पदों के निर्धारण संबंधित मांग एक वर्ष से लंबित है इसे पूरा करने, संसाधन एवं कार्यालय फर्नीचर राज सरकार द्वारा 2024 एवं 2025 की बजट घोषणा मे प्रिंटर, लैपटॉप, टैबलेट सहित अन्य मांग को लेकर प्रदर्शन किया जा रहा है।मांग पूरी नहीं होने पर उन्होने उग्र आंदोलन कि चेतावनी दी।

विधायक ने की जनसुनवाई

करौला। रविवार को निज निवास सुंदरपुरा में करौली विधायक दर्शन सिंह गुर्जर ने जन सुनवाई कर अभाव अभियोग सुने। दक्ष प्रजापति विकास संस्थान करौली के सचिव गंगाराम प्रजापत,संयोजक छीतरलाल लाल प्रजापति ने बताया कि प्रजापति समाज के विभिन्न गांवों में विकास कार्यों पर चर्चा कि विधायक दर्शन सिंह गुर्जर ने बताया कि पाराशरी गांव के आवागमन के लिए पुल निर्माण स्वीकृत करा दिया है। महू हरनगर को उच्च प्राथमिक विद्यालय में क्रमोन्नत कराने की मांग रखी विधायक ने आगामी बजट में विद्यालय को क्रमोन्नित का भरोसा दिलाया।

आम सूचना हर आम व खास को सूचित किया जाता है कि मेरे मुव्वकील श्री जगदिश पुत्र श्री गुलाब सिंह का प्लॉट बनाप 298.95 वर्गगज है। का उपरोक्त आवासीय प्लाट ग्राम पंचायत जगीना पंचायत समिति सेवर, जिला भरतपुर, राजस्थान में स्थित है जिसका एरिया 298.95 वर्गगज है। यह कि उपरोक्त सम्पति का पट्टा संख्या 96, पुस्तक संख्या 05 जो की श्री जगदिश पुत्र श्री गुलाब सिंह के पक्ष दिनांक 08.06.2023 को जारी हुआ जिसका नवीनीकरण 05.09.2023 हुआ जो ग्राम पंचायत जगीना पंचायत समिति सेवर, जिला भरतपुर, राजस्थान द्वारा जारी किया गया जो दिनांक 19.09.2024 को उप पंजीयक भरतपुर में पुस्तक संख्या 1 जिल्द संख्या 1369 पृष्ठ संख्या 178 क्रम संख्या 202403098108362 पर पंजीबद्ध किया हुआ है। जिसके रजिस्ट्रेशन पेज (पंजीयन विवरण पृष्ठ) दस्तावेज गुम हो चुका है तथा आज दिन तक नहीं मिला। जिसकी गुमशुदगी की रिपोर्ट राजस्थान पुलिस के पोर्टल पर ऑनलाइन दर्ज है तथा मेरे मुवक्किल श्री जगदिश पुत्र श्री गुलाब सिंह ने चोला मण्डलम हाउसिंग इनवेस्टमेंट एंड फाइनेंस कंपनी लि. से ऋण प्राप्त कर रहे हैं। यदि उक्त दस्तावेज किसी को मिले तथा उक्त दस्तावेज एवं सम्पति बाबत किसी भी व्यक्ति, बैंक व वित्तीय संस्था को कोई भी आपत्ति हो तो 7 दिन के अन्दर-अन्दर मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता से नीचे लिखे पते पर सम्पर्क करें अन्यथा बाद गुजरने याद कोई भी आपत्ति मान्य नहीं होगी व सो सूचित रहे।

मुकुंद पंचारिया (एडवोकेट)
दिनांक : 15.01.2025 मो. 9829290229

ताइक्वांडो चैंपियनशिप में भरतपुर के खिलाडियों ने जीते पदक

भरतपुर । ताइक्वांडो फेडरेशन ऑफ इंडिया के मार्गदर्शन में उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन के तत्वाधान में आयोजित 7वीं नेशनल ओपन ताइक्वांडो चैंपियनशिप 2025 जो कि राजाजीपुरम मिनी इनडोर स्टेडियम लखनऊ में 16 से 20 जनवरी तक आयोजित हुई थी। कार्यक्रम में ताइक्वांडो फेडरेशन ऑफ़ इंडिया के महासचिव एडवोकेट आरडी मंगेश्वर, उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन के महासचिव राजकुमार कश्यप, राजस्थान ताइक्वांडो एसोसिएशन महासचिव लक्ष्मण सिंह हाडा, रेफरशिप टेक्निकल डायरेक्टर नेशनल रेफरी प्रयाग सिंह एवं चैंपियनशिप कोऑर्डिनेटर अभिषेक सिंह आदि अतिथि के रूप में मौजूद थे।

भरतपुर ताइक्वांडो संघ की सचिव ई दीप्ति शर्मा ने बताया कि उपस्थित सभी मंचासीन अतिथियों ने किला स्थित जयशंकर टाईगर क्लब भरतपुर के विजेता प्रतिभागियों को पदक एवं प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्कृत किया।

> ■ अतिथियों ने जयशंकर टाईगर क्लब भरतपुर के विजेता प्रतिभागियों को पदक एवं प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्कृत किया

जिसमें क्योरोगी प्रतियोगिता की सब जूनियर वर्ग में ऐश्वर्य शर्मा, युवराज सिंह ने स्वर्ण पदक, राम्या शर्मा, अभय सिंह, अभी सिंह ने कास्या पदक प्राप्त किए, कैडेट वर्ग में सौरभ सेन ने कास्या पदक प्राप्त किए, जूनियर वर्ग में विशाल जाटव ने स्वर्ण पदक, रौनक कोली ने रजत पदक एवं गुड़िया सेन ने कास्या पदक प्राप्त किया। समारोह में ताइक्वांडो फेडरेशन ऑफ़ इंडिया के महासचिव एडवोकेट आरडी मंगेश्वर ने अपने उद्बोधन में कहा कि खेल प्रतिभा तो बहुत हैं उन्हें तराशने की जरूरत है, खिलाड़ियों को आगे लाने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।

उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन के महासचिव राजकुमार कश्यप ने कहा कि हमेशा खेल को खेल की भावना से खेलना चाहिए तथा हारने वाले को कभी हताश नहीं होना चाहिए।

टूर्नामेंट में भारत के विभिन्न राज्यों के करीब 1500 से अधिक खिलाड़ियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में ताइक्वांडो फेडरेशन ऑफ़ इंडिया के महासचिव एडवोकेट आरडी मंगेश्वर, उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन के महासचिव राजकुमार कश्यप ने भरतपुर ताइक्वांडो संघ सचिव दीप्ति शर्मा एवं नेशनल रेफरी एवं टाईगर क्लब के सचिव पीयूष जयशंकर टाईगर को ऑफिशल शील्ड देकर सम्मानित किय।

ग्रामपंचायत बनाने हेतु सौपा ज्ञापन

करौला । करौली के मासलपुर क्षेत्र में स्थित मंडा खेड़ा के ग्रामीणों ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर अपने गांव को अलग ग्राम पंचायत बनाने कि मांग कि है। मासलपुर क्षेत्र के ग्राम मंडाखेडा , मलूकपुरा, सेमरपुरा, कसोलेकापुरा, पटीयानका पुरा,मेंगरा खुर्द ,हकीमपुरा गॉव निवासी राजाराम, विष्णु गुंजर ,अर्जुन लाल, हरवीर, रामसहाय, गोपाल,गजानंद सैन,राजू शर्मा आदि लोगो ने अतिरिक्त जिला कलेक्टर को सौंपे गए ज्ञापन में ग्रामीणों ने बताया कि पहले मंडाखेड़ा एक स्वतंत्र ग्राम पंचायत था लेकिन बाद में इसे खेड़िया ग्राम पंचायत में शामिल कर दिया गया। वर्ष 2011 कि जनगणना के अनुसार मंडाखेड़ा की आबादी 3000 से अधिक है और गांव में लगभग सभी बुनियादी सुविधाएं मौजूद हैं। वर्तमान में मंडाखेड़ा गांव खेड़िया ग्राम पंचायत का हिस्सा है लेकिन खेड़िया से इसकी दूरी अधिक होने के कारण ग्रामीणों को प्रशासनिक कार्यों में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीणों का कहना है कि राजस्व से संबंधित छोटे-छोटे कामों के लिए भी उन्हें लंबी दूरी तय करनी पड़ती है।

भामाशाह ने बच्चों को वितरण किए पहचान पत्र

करौली । राज्य सरकार द्वारा जारी कलेंडर के मुताबिक जनवरी माह में चुनिंदा सरकारी विद्यालयों में वार्षिक उत्सव मनाये जा रहे हैं इसी क्रम में पीईईओ रूंधपुरा के अंतर्गत आने वाले राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मरदई कलां में सोमवार को वार्षिक उत्सव मनाया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रूंधपुरा के प्रधानाचार्य ओमप्रकाश और विशिष्ट अतिथि के रूप में भामाशाह धनसिंह मीना रूंधपुरा रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता एसएमसी अध्यक्ष रामकेश गुर्जर ने कि कार्यक्रम दौरान अतिथियों द्वारा विद्यालय में शैक्षिक गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करने और भौतिक संसाधनों के विस्तार को लेकर अपने विचार रखते हुए भामाशाह द्वारा छात्रों के लिए बनवाये गये पहचान पत्रों को विद्यालय में अनुशासन के एक महत्वपूर्ण कदम बताते हुए भामाशाह का आभार व्यक्त किया।

ज्ञापन सौपा

हिण्डौन। ग्राम धंधावली के ग्रामवासियों कि ओर से उपजिला कलेक्टर हेमराज गुर्जर को धंधावली को नवीन ग्राम पंचायत बाने के लिए ज्ञापन दिया गया। ग्रामीणों का कहना है कि गांव धंधावली ग्राम पंचायत सोमला रात्रा में आता है गांव धंधावली से सोमला लगभग तीन-चार किलोमीटर पढ़ता है जिससे गांव के बुजुर्ग व महिलाओं को आने जाने में बहुत परेशानी होती है। गांव धंधावली में लगभग दो हजार से अधिक मतदाता हैं और लगभग 8000 जनसंख्या है इस ग्राम धंधावली को ग्राम पंचायत बनाया जाए। इस अवसर पर दलवीर सिंह चौधरी, हरिप्रसाद जाटव , जगमोहन जाटव , करतार सिंह चौधरी, राजेश, सतीश, सुमरन, मोहनसिंह, भरोसी , बृजमोहन, करण, रामसिंह हेमन्त सिंह, राधेश्याम, वीरेंद्र चौधरी आदि मौजूद रहे।

'मुख्यमंत्री कार्यालय सहित अन्य प्राप्त प्रकरणों का समय सीमा में निस्तारण करे'

करौली । अतिरिक्त जिला कलेक्टर हेमराज परिडवाल ने कहा कि समस्त अधिकारी राजस्थान मुख्यमंत्री कार्यालय से प्राप्त प्रकरण,संपर्क पोर्टल,लोकायुक्त कार्यालय से प्राप्त प्रकरण, संभागीय आयुक्त कार्यालय से जनसुनवाई के प्राप्त प्रकरण एवं 180 दिन से लंबित चल रहे परिवादों का समय सीमा में निस्तारण कर आमजन को राहत दिलवाना सुनिश्चित करें। अतिरिक्त जिला कलेक्टर सोमवार को कलेक्टेट सभागार मे साप्ताहिक समीक्षा व समन्वय समिति की बैठक को संबोधित करते हुए बोल रहे थे।

उन्होंने सीएमएचओं को चिकित्सालयों में दवाईयों की उपलब्धता सुनिश्चित करने,विद्युत विभाग के अधिकारी को सुचारू रूप से बिजली की आपूर्ति बनाये रखने, पीएचईडी के अधिकारी को जल जीवन मिशन के तहत बकाया कनेक्शन जारी करने, डेमेज सडकों को दुरूस्त करने, जिले मे पेयजल व्यवस्था सुचारू रूप से सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने बैठक में राजस्व, माइनिंग,सेल टैक्स,परिवहन एवं आबकारी विभाग को राज्य सरकार की मंशा के अनुसार शत प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त करने के निर्देश संबंधित अधिकारीयों को दिये। इसके अलावा अन्य लंबित प्रकरणों को समय सीमा में निस्तारण करने, ई-फाईल एवं ई-डाक की शत प्रतिषत पालना करने के निर्देष दिये। इस अवसर पर मुख्य कार्यकारी अधिकारी शिवचरण मीणा,पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक गंगासहाय मीणा,कोषाधिकारी भरतलाल मीणा, सूचना जनसंपर्क विभाग के सहायक निदेशक धर्मेन्द्र मीणा सहित अन्य जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

केन्द्रीय संचार ब्यूरो की विकसित भारत-2047 मल्टी मीडिया प्रदर्शनी का उद्घाटन

विकसित भारत के सपने को पूरा करने की हम सबकी जिम्मेदारी : कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल

उदयपुर, (निसं)। प्रधानमंत्री ने भारत को वर्ष 2047 तक विकसित बनाने का जो सपना देखा है, उसे पूरा करने की जिम्मेदारी हम सबकी है। हम जहां भी हों और जो भी करें उसे बेहतर ढंग से करने का प्रयास करेंगे तो इस सपने को पूरा करने में सहायक बनेंगे। यह उद्गार केंद्रीय कानून एवं न्याय, संस्कृति तथा संसदीय कार्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने व्यक्त किए। वे यहां केंद्रीय संचार ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर द्वारा पीएम राजकीय फतेह उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर में आयोजित विकसित भारत-2047 मल्टी मीडिया प्रदर्शनी के उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

इस अवसर पर शहर के विधायक ताराचंद जैन, प्रवर डाक अधीक्षक अक्षय भानुदास, रवींद्र श्रीमाली, राजेंद्र शेखावत आदि उपस्थित थे। मेघवाल ने प्रदर्शनी का फीता काटकर उद्घाटन किया। इसके पश्चात् आयोजित सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हम सबको सपने देखने चाहिए और वे बड़े भी होने चाहिए, मगर इससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि हमें उन सपनों को पूरा करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से प्रयास करने चाहिए।

विकसित भारत-2047 मल्टी मीडिया प्रदर्शनी का केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने उद्घाटन किया।

प्रारंभ में विभाग के सहायक निदेशक रामेश्वर लाल मीणा तथा पराग मांदले ने अतिथियों का सम्मान किया। कार्यक्रम की रूपरेखा बताते हुए रामेश्वर लाल मीणा ने कहा कि इस पांच दिवसीय मल्टी मीडिया प्रदर्शनी में केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गई है। इसके अलावा विभिन्न राजकीय विभागों के स्टॉल यहां लगाए गए हैं जहां विभिन्न योजनाओं की जानकारी व सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। इस अवसर पर सुकन्या समृद्धि योजना की लाभार्थी हयात फातिमा तथा कार्तिका सुथार को मंत्री के हाथों बचत खाते की पुस्तिका प्रदान की गई। इसके अलावा इस दौरान आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को भी अतिथियों ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इससे पूर्व विभिन्न सत्रों में सीडीपीओ प्रताप सिंह ने महिला व बाल विकास विभाग की, अक्षय

■ पांच दिवसीय मल्टी मीडिया प्रदर्शनी में केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गई है

भानुदास व ऐश्वर्य भटनागर ने डाक विभाग की, विमला वीरवाल ने महिला अधिकारिता विभाग की, शिवदयाल मीणा ने कृषि विभाग की तथा मितेश स्वर्णकार ने भारतीय स्टेट बैंक की विभिन्न योजनाओं व कार्यक्रमों की जानकारी दी। संचालन फूलसिंह गहलोत ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन प्रेम सिंह ने किया।

इस अवसर पर विभाग से पंजीकृत कला समूह लीलादेवी तेरा ताली पार्टी के कलाकारों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। प्रदर्शनी में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, महिला व बाल विकास विभाग, कृषि विभाग, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, नगर निगम, उदयपुर, डाक विभाग, महिला अधिकारिता विभाग, ग्राम विकास व पंचायती राज विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग तथा जनजातीय क्षेत्रीय विकास विभाग के स्टॉल लगाए गए हैं। इसके अलावा डाक विभाग द्वारा आधार कार्ड में संशोधन की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है। केन्द्र व राज्य सरकार की विभिन्न लोक-कल्याणकारी योजनाओं पर केंद्रित इस पांच दिवसीय प्रदर्शनी में विभिन्न अत्याधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल किया गया है। इसमें नयी पीढ़ी में लोकप्रिय मोशन गेम, वर्चुअल रियलिटी का अनुभव देने वाले वीडियो, ऑनलाइन क्विज, 360 डिग्री वीडियो के साथ-साथ फिट इंडिया कार्यक्रम के तहत विभिन्न फिटनेस उपकरण भी दर्शकों के प्रयोग के लिए लगाए गए हैं। इसके अलावा कैरीकेचर फोटो, रिंग लाइट फोटो, ऑनलाइन क्विज आदि की सुविधा भी उपलब्ध कराई है।

मल्टी मीडिया प्रदर्शनी में केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं पर पैनल लगाए गए हैं। इस अवसर पर अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जा रहा है। प्रदर्शनी चौबिस जनवरी तक सुबह दस से शाम चार बजे तक आम नागरिकों के लिए निःशुल्क खुली रहेगी।

बॉर्डर पर घूमते बुजुर्ग को हथियार समेत पकड़ा

बीकानेर, (निसं)। भारत-पाकिस्तान बॉर्डर पर बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स ने एक बुजुर्ग व्यक्ति को हथियार के साथ पकड़ा है। फिलहाल इस बुजुर्ग को खाजूवाला पुलिस के हवाले किया गया है। बीएसएफ के जवान पाकिस्तान से सटी तारबंदी के पास ही दस बी.डी. से एक बुजुर्ग जरनैल सिंह को हथियार और दो कारतूस के साथ पकड़ा है। पूछताछ में वो कुछ संतोषजनक जवाब नहीं दे पाया। ऐसे में बीएसएफ के जवानों ने उसे पकड़ लिया। बाद में खाजूवाला पुलिस को मौके पर बुलाकर उसके सुपुर्द कर दिया। खाजूवाला पुलिस ने उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। फिलहाल ये पता लगाया जा रहा है कि ये बुजुर्ग हथियार लेकर बॉर्डर के पास क्यों गया था इसके पीछे कोई बड़ा कारण है या फिर भूल से पहुंच गया। जरनैल सिंह के बैकग्राउंड का भी पता किया जा रहा है कि वो कौन है और यहां कैसे आया।

BLMCL Barmer Lignite Mining Company Limited (A Govt. of Rajasthan Enterprise)

Corporate Office: Office No. 2 & 3, 7th Floor Man Upasana Plaza C-44, Sardar Patel Marg,C-Scheme, Jaipur – 302001 (INDIA)
CIN : U14109RJ2007SGC023687
Website : www.blmcl.in, E-Mail : blmcl@blmcl.in
Ph: +91-141-2369772, Fax: +91-141-2369774

Date: 16.01.2025

EXTENSION OF NOTICE INVITING TENDER (NIT)

Notice Inviting Tender(NIT) for Tender No.: BLMCL/MD/JPR/2024-25/110 dated 12.12.2024 for **'Fabrication and fixing of MS Information Boards at CER Initiative Sites located in Barmer, Rajasthan'** was issued on 12.12.2024. The last date for receiving the prosposal and opening of bids are as under:

Sr. No.	Particulars	Earlier Date	Extended Date
1.	Last date for receipt of tender	16th January, 2025, 3.30 PM	Upto 23rd January, 2025, 3:30 PM
2.	Date of Tender Opening	17th January, 2025, 3:00 PM	24th January, 2025, 3:00 PM

Keep visiting our website for updated information, If any, before the closing date of NIT.

Raj.Samwad/C/24/10528 — Mr. Naresh Kumar Purohit, AVP (Operations)

कार्यालय नगरपालिका आमेट (राजसमन्द)

क्रमांक : एफ( )नपआ/इंजी/ई निविदा/3/2024-25/1505 दिनांक :- 17/01/2025

ई-निविदा सूचना संख्या 3/2024-25

नगरपालिका आमेट द्वारा निम्नांकित योजनाओं के विकास कार्यो हेतु समस्त विभागों में पंजीकृत संवेदकों, कम्पनी, संगठनों/संस्थानों से ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन तकनीकी व वित्तिय निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखी व डाउनलोड़ की जा सकती है।

निविदा क्रार्यक्रम	तिथि व समय
कार्य की संख्या	5
कार्यो की अनुमानित लागत	140.00 लाख
निविदा अपलोड की तिथि	20.01.2025 06:00 PM
निविदा डाउनलोड प्रारम्भ तिथि	20.01.2025 09:00 AM
ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि	05.02.2025 06:00 PM
भौतिक रूप से दस्तावेज जमा करने की तिथि	05.02.2025 01:00 PM
ऑनलाईन निविदा खोलने की तिथि	06.02.2025 04:00 PM
ऑनलाईन निविदा हेतु वेबसाईट	http://eproc.rajasthan.gov.in
दोष निवारण अवधी	नियमानुसार
UBN No.	DLB2425WSOB15219

राज.संवाद/सी/24/10552 — प्रशासक नगरपालिका आमेट — अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका आमेट

ईंट-भट्टा मालिक सहित तीन लोगों ने मजदूर को बंधक बनाया, मारपीट की

खेतड़ी, (निसं)। पचेरी कलां थाना क्षेत्र के मेघपुर-पाथरोली गांव में ओपीवाई यादव ईंट-भट्टा पर ट्रैक्टर चालक मजदूर को बंधक बनाकर बेरहमी से पीटने का मामला सामने आया है। ट्रैक्टर ड्राइवर मजदूर ने ईंट-भट्टा मालिक सहित तीन जनों के खिलाफ मारपीट कर रूपए मांगने की रिपोर्ट दर्ज करवाई है।

थानाधिकारी राजपाल सिंह ने बताया कि कोटड़ी खंडेला के ढाणी गुमान सिंह निवासी पीड़ित चिमनलाल पुत्र मूलचंद मेघवाल ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि व बलदेव मीणा पुत्र अनाराम मीणा का ट्रैक्टर चलाते हैं, जो की मेघपुर ओपीवाई ईंट-भट्टे पर ईंटे भरकर नवलगढ़ एरिया में सप्लाई करते हैं। शनिवार की शाम ईंटे भरकर मुनीम को पैसे देकर ठेकेदार के दफ्तर में पानी पीने लगा तो ठेकेदार विनोद, मुनीम

पीड़ित ट्रैक्टर ड्राइवर मजदूर।

■ पीड़ित ने पचेरी कलां थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई, मारपीट कर रूपए मांगने का आरोप लगाया

■ ईंट भट्ठा मालिक ने ट्रैक्टर ड्राइवर मजदूर पर बिल से अधिक ईंटें ले जाने के आरोप में मारपीट करने की बात कही

बलराज सहित दो-तीन लोग आकर मारपीट करने लगे। रात को बंधक बनाकर मारपीट करते रहे तथा काले रंग की स्कॉर्पियो गाड़ी में बैठक दूसरी जगह लगे। मारपीट के दौरान ट्रैक्टर मालिक से फोन करवाकर पैसे मांगने की मांग करते रहे। सुबह शौच का बहाना लेकर पीड़ित ने ट्रैक्टर मालिक को लेकर थाने में पहुंचकर रिपोर्ट दर्ज कराई है। दूसरी तरफ ईंट भट्ठा मालिक ने ट्रैक्टर ड्राइवर मजदूर पर बिल से अधिक ईंटें ले जाने के आरोप में मारपीट करने की बात कही है। पुलिस ने मारपीट से घायल हुए मजदूर का मेडिकल परीक्षण करवाकर रिपोर्ट दर्ज कर जांच अधिकारी बुहाना डिप्टी को सौंप दी गई है।

जानकारी के अनुसार पचेरी क्षेत्र में ईंट भट्ठे अधिक संख्या में हैं जो कि आए दिन बाहर से आए हुए मजदूरों के साथ मारपीट करने व पैसे नहीं देने के मामले आते रहते, लेकिन कारवाई नहीं होने से भट्ठे मालिकों के हौसले बुलंद हैं।

खड़े ट्रक में घुसी कार, सेना के जवान की मौत

बीकानेर, (निसं)। नेशनल हाईवे पर तेज रफ्तार कार सड़क किनारे खड़े ट्रक से टकरा गई। हादसे में कार सवार दो व्यक्तियों में से एक आर्मी जवान की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरा व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल व्यक्ति को पीबीएम ट्रॉमा सेंटर रेफर किया गया है।

■ हादसे में घायल व्यक्ति को पीबीएम ट्रॉमा सेंटर रेफर किया गया

जानकारी के अनुसार हादसा नापासर थाना क्षेत्र के नेशनल हाईवे संख्या-11 पर रायसर में होटल ओम बना के पास शाम करीब पांच बजे हुआ। सूचना मिलते ही नापासर थानाधिकारी लक्ष्मण सुथार, हेड कॉन्स्टेबल मूलाराम और जवानों के साथ मौके पर पहुंचे, जहां पर पुलिस ने प्राथमिकता पर फंसे हुए व्यक्ति को निकालकर बीकानेर के ट्रॉमा सेंटर भेजा। एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई थी। पुलिस ने बताया कि मृतक के पास से मिली आईडी से पता चला कि मृतक जवान का नाम हरियाणा निवासी दीपक है, जो वर्तमान में बीकानेर में सैन्य छावनी में 24 आर्टरी में तैनात था, जबकि घायल का नाम दलजीत है। पुलिस ने मृतक के शव को नापासर मॉर्च्युरी में रखवाया है और आर्मी अधिकारियों को सूचित किया गया है। घायल व्यक्ति का इलाज बीकानेर ट्रॉमा सेंटर में जारी है। थानाधिकारी के अनुसार आर्मी के अधिकारियों के आने पर ही मृतक और घायल व्यक्ति के बारे में अधिक जानकारी सामने आ सकेगी।

हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड
HINDUSTAN COPPER LIMITED
www.hindustancopper.com

विज्ञप्ति सं. एचसीएल/केसीसी/मा. सं./भर्ती/25 दिनांक: 18.01.2025

हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड, खेतड़ी कॉपर काम्पलैक्स ने योग्य उम्मीदवारों से निम्नलिखित पदों के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए है:-

क्रम सं.	पद का नाम	अनारक्षित	अनु. जाति	अन. जनजाति	अ.पि.व. (NCL)	ई.डब्ल्यू.एस.	योग
1	चार्जमैन इलेक्ट्रिकल	12	03	02	05	02	24
2	इलेक्ट्रीशियन 'ए'	17	05	04	07	03	36
3	इलेक्ट्रीशियन 'बी'	16	06	04	07	03	36
4	डब्ल्यू.ई.डी. 'बी'	02	01	00	03	01	07
	कुल रिक्तियां	47	15	10	22	09	103

आनॅलाइन आवेदन-पत्र की प्रारंभ तिथि 27.01.2025 एवं अन्तिम तिथि 25.02.2025 है। पात्र अभ्यर्थी आवेदन करें। अधिक जानकारी के लिए हि.कॉ.लि. की वेबसाइट www.hindustancopper.com के कैरियर खंड में देखें।

खेतड़ी कॉपर कॉम्पलैक्स
पो. ऑ.: खेतड़ी नगर-333504, जिला झुन्झुनू (राज.) भारत
ई-मेल : kcc_careers@hindustancopper.com, CIN: L27201WB1967GOI028825

सड़क हादसे में दो की मौत, चार घायल

मूण्डवा/नागौर, (निसं)। जिले के नागौर-अजमेर राष्ट्रीय राजमार्ग-58 पर मूण्डवा के निकट सोमवार सुबह लोडिंग जीप व ट्रक की आमने-सामने की टक्कर हो गई। हादसे में दो जनों की मौत हो गई, जबकि चार अन्य घायल हो गए। हादसे का मुख्य कारण घने कोहरे को माना जा रहा है।

लोडिंग जीप में कुछ लोग नागौर से कुचेरा की तरफ सब्जी लेकर जा रहे थे, वहीं सामने से आए ट्रक ने जीप को चपेट में ले लिया, जिससे जीप का आगे का हिस्सा चकनाचूर हो गया। हादसे की जानकारी मिलने पर मूण्डवा पुलिस मौके पर पहुंची तथा घायलों को अस्पताल पहुंचाया, वहीं मृतकों के शव वाहन में फंस गए, जिन्हें क्रेन की सहायता से निकाला गया। पुलिस के अनुसार मृतकों की पहचान आकेली रोड कुचेरा निवासी सुरेश सांखला (26) पुत्र पापालाल सांखला व रमजान (27) पुत्र फतू मोहम्मद तेली के रूम में हुई है। वहीं घायल होने वालों में कुचेरा निवासी राकेश पुत्र चेनाराम गुर्जर, हुक्माराम पुत्र बलदेवराम मेघवाल, कमल पुत्र श्रवण माली व सुनील सांखला पुत्र पापालाल है।

सिपाही पर गाड़ी चढ़ाने का प्रयास, एक गिरफ्तार

जोधपुर, (कासं)। शहर के मिल्कमैन कॉलोनी में बिना नंबरी गेटवे गाड़ी लेकर उत्पात मचाने वाले एक युवक को शास्त्री नगर पुलिस ने पकड़ा है। आरोपी ने पुलिस की गाड़ी को टक्कर मारने के साथ बाइक को क्षतिग्रस्त कर दिया। बाइक से गिरने पर कांस्टेबल जख्मी हो गया। इस पर आरोपी के खिलाफ हत्या प्रयास, राजकार्य में बाधा उत्पन्न किए जाने का केस दर्ज किया गया। आरोपी चांदणा भाखर ज्योति नगर सूंथला निवासी नंदकिशोर उर्फ नंदूपुरी पुत्र पुखराज गोस्वामी को पहले शांतिभंग में पकड़ा गया। अब उसे मुकदमे में गिरफ्तार किया है। पुलिस को सूचना मिली कि प्रतापनगर सूंथला का नंदूपुरी अपनी गेटवे गाड़ी लेकर मिल्कमैन कॉलोनी में बिना नंबरी गाड़ी लेकर घूम रहा है और उत्पात मचाता है। इस पर सब इंसपेक्टर शैतान चौधरी, कांस्टेबल श्रवण आदि वहां पहुंचे। मिल्कमैन कॉलोनी में पुलिस ने नाकाबंदी कर उसे पकड़ने का प्रयास किया तो वह पुलिस से उलझता हुआ भागने लगा। इस पर कांस्टेबल श्रवण की तरफ से उसे रोकने के लिए बाइक को लेकर खड़ा हो गया।

जरूरत पड़ी तो अप्रैल में ट्रांसफर से बैन हटा सकती है सरकार : जोगाराम पटेल

जोधपुर, (कासं)। संसदीय कार्य, विधि एवं विधिक मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा है कि भाजपा सरकार के शासन में कर्मचारियों के तबादले पूरी पारदर्शिता के साथ किए गए हैं। सरकारी कर्मचारी हमारे अपने हैं और जरूरत पड़ने पर सरकार अप्रैल में फिर से ट्रांसफर से बैन हटा सकती है। कैबिनेट मंत्री पटेल ने यह बात सोमवार को सर्किट हाउस में मीडिया से बात करते हुए कही।

पटेल ने कांग्रेस सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि पूर्ववर्ती सरकार के मुखिया ने अपने प्रदेश अध्यक्ष को लेकर नाकारा-निकम्मा जैसे शब्द काम में लिए। इतना ही नहीं उन्होंने शिक्षा मंत्री की मौजूदगी में आम शिक्षकों से पूछा कि क्या आप ट्रांसफर के लिए रिश्वत के पैसे देते हैं? इसका जवाब कांग्रेस को देना चाहिए। हमारी सरकार में किसी ने ट्रांसफर पर कोई आरोप नहीं लगाया है। पटेल ने कहा कि कांग्रेस सरकार हमारी सरकार पर सवाल उठा रही है, लेकिन हमारी सरकार ने बजट घोषणाओं को धरातल पर लाने का काम किया है। बजट को लेकर वित्तीय स्वीकृतियां जारी हो चुकी हैं। अंग्रेजी माध्यम स्कूलों

■ 'कांग्रेस ने सिर्फ चुनाव के समय वाहवाही लूटने के लिए अंग्रेजी मीडियम स्कूल शुरू किये'

■ 'हमारी सरकार 5 साल में चार लाख बेरोजगार युवाओं को सरकारी नौकरी देगी'

■ संसदीय कार्य, विधि एवं विधिक मंत्री जोगाराम पटेल ने मीडिया से बात की

को बंद करने के सवाल पर कानून मंत्री ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने अंग्रेजी मीडियम स्कूल खोले, लेकिन शिक्षकों की भर्ती नहीं की, जबकि प्रारंभिक स्तर से ही अंग्रेजी माध्यम के स्कूल को खोलना चाहिए था लेकिन कांग्रेस ने सिर्फ चुनाव के समय वाहवाही लूटने के लिए ही इन्हें शुरू किया।

मंत्री पटेल ने कहा कि इतना ही नहीं पहले से ही चल रहे हिंदी मीडियम के स्कूलों पर अंग्रेजी मीडियम के बोर्ड लगा दिए गए। इसको लेकर जब हमने जांच करवाई तो 287 विद्यालय प्रदेश में ऐसे पाए गए जिनमें जीरो या दस से कम नामांकन थे। क्या ऐसे विद्यालय चलने चाहिए थे, लेकिन कांग्रेस ने इस तरफ कभी ध्यान नहीं दिया। इसकी समीक्षा की जा रही है। इसको लेकर कांग्रेसी डरे हुए हैं। इसके साथ उन्होंने कहा कि कांग्रेस अंतर्कलह से भरी हुई है। कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए कहा कि उन्होंने पेपर माफिया नकल माफिया को पनपाया, लेकिन हमारी सरकार ने एसआईटी गठित कर उन्हें खत्म करने का काम किया। उन्होंने कांग्रेस की पूर्ववर्ती सरकार से सवाल पूछा कि उनके कार्यकाल में कितना बिजली उत्पादन किया गया, जबकि आज भाजपा सरकार के समय में बिजली उत्पादन उनसे कहीं गुना अधिक है। हमारी सरकार 5 साल में चार लाख बेरोजगार युवाओं को सरकारी नौकरी देगी। हमारी सरकार ने जो बजट घोषणा की वो ऐतिहासिक बजट है, जिसे धरातल पर लाए हैं।

राजस्थान सरकार
निदेशालय खान एवं भूविज्ञान विभाग, राजस्थान, उदयपुर

क्रमांक-निदे/अ.ख.अ.नीलामी/नीलामी (ML Bajri 03)/2025/ई-09786

ई-नीलामी विज्ञिप्त

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान अप्रधान खनिज रियायत नियमावली, 2017 के अध्याय-III के तहत विभाग के अप्रधान खनिज बजरी के खननपट्टों के आंवटन के लिए निम्नांकित प्लॉट ई-नीलामी के माध्यम से दिये जाने हेतु इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म पर खुली बोली आमंत्रित की जाती है। संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः-

जिला	तहसील	राजस्व ग्राम	प्लॉटस की संख्या
सिरोही	शिवगंज	माडानी, सवली व नारादरा	1
		उम्मेदगढ़	1
		नारादरा	2
		लोटीवाड़ा बड़ा	1
भीलवाड़ा	काछोला, कोटड़ी	थलकलां, हस्ताड़ा	1
जोधपुर	पीपाड़ शहर	पीपाड़ शहर, खुड़ेचा व नानण	1
		नानण व जालीवाड़ा कलां	1
जालोर	जालोर व आहोर	रतनपुरा व लेटा	1
	आहोर	थावला व मादड़ी थावला	1 1
		भागली पुरोहितान व सनवाड़ा	2
		सनवाड़ा	1
		सनवाड़ा, मादड़ी व थावला	1
		सनवाड़ा, छिपरवाड़ा व थावला	1
		दयालपुरा प्रथम	1
योग			17

विशेष नोटः-
1 प्लॉटों का विस्तृत विवरण, अमानत राशि, बोली प्रस्तुत करने की तिथि व समय इत्यादि का विवरण, ई-ऑक्शन की शर्ते विभागीय वेबसाइट www.mines.rajasthan.gov.in एवं इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म प्रदाता कंपनी MSTC Ltd. की वेबसाइट www.mstcecommerce.com पर उपलब्ध है।

DIPR/C/570/2025 (भगवती प्रसाद कलाल) निदेशक

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड टोडाभीम

क्रमांक : 2457 2465 दिनांकः 08-01-2025

ई-निविदा सूचना संख्याः 10/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से जिला करौली (खण्ड टोडाभीम) में सड़क / भवन कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान एवं राज्य सरकार के अन्य विभागों तथा केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के यथोचित श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से कार्यों हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदा से संबंधित विवरण बेवसाईट साईट www.dipronline.org व www.eproc.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

1. UBN No. PWD2425WSOB13603

(के. के. मीना) अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. खण्ड टोडाभीम

DIPR/C/616/2025

कार्यालय उपवन संरक्षक धौलपुर

क्रमांक-उ.व.सं.धौ./लेखा/निविदा/2024-25/105-15 दिनांक-08.01.2025

Notice Inviting Bid

Bid for rate contract for various Advance Soil work though machines in Dholpur Division are invited from interested bidders upto 5:00 PM, 17-01.2025. other particulars of bid may be visited on the procurement portal http://sppp.raj.nic.in and https://eproc.rajasthan.gov.in of the state.

S. No.	Name of work	Amount (In lakhs)	UBN NO
1	Advance soil work through machines in bari range	13.10	FOR2425WSOB03711
2	Advance soil work Rate contract through machines in All range	50.00	FOR2425WSRC03712

DIPR/C/506/2025 DCF Dholpur

कार्यालय जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा जालोर

क्रमांक :- जिपस/जा/लेखा/2024-25/171 दिनांक :- 15/01/2025

NOTICE INVITING E-BID (NIB: 02/2024-25)

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, जयपुर के निर्देशानुसार जालोर जिले में संचालित कस्तुरबा गॉधी राजकीय विद्यालयों/स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालयों/कार्यालयों में मानव संसाधन लगाए जाने हेतु श्रम विभाग में पंजीकृत निविदादाताओं/फर्मो से मोहरबंद लिफाफे में ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा दिनांक 16.01.2024 से दिनांक 04.02.2025 को शाम 06:00 बजे तक ऑनलाईन आंमत्रित कि जाती जिसकी अनुमानित लागत 200.00 लाख रूपयें है। निविदा से सम्बधित अधिक जानकारी के लिए साईट http//eproc.rajasthan.gov.in एवं साईट http//sppp.rajasthan.gov.in पर नियम एवं शर्ते देखी जा सकती है।

UBN No. RSE2425SLRC02118

राज.संवाद/सी/24/10537 — जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा, जालोर

श्रीमाधोपुर में एक ही रात में दो मकानों में लाखों की चोरी

श्रीमाधोपुर (निसं)। तपोवन कॉलोनी वार्ड नं. 16 श्रीमाधोपुर में चोरों ने एक ही रात में दो अलग-अलग सूने मकानों को निशाना बनाते हुए लाखों रुपए की नकदी और सोने-चांदी के आभूषण चुरा लिए। घटना ने पुलिस की रात्रि गश्त की पोल खोलकर रख दी है। इनमें से एक मकान बीएसएफ जवान महेंद्र रोहलानियां का था, जबकि दूसरा मकान एडवोकेट दीपेंद्र कुमार भारद्वाज का था।

पहली चोरी की घटना बीएसएफ जवान महेंद्र रोहलानियां के घर में हुई। महेंद्र के बेटे राहुल ने बताया कि 16 जनवरी को वह अपनी बहन प्रियंका के साथ मां कौशल्या देवी को इलाज के लिए हिसार ले गए थे। इस दौरान उनके पिता पंजाब में ड्यूटी पर थे। घर पूरी तरह से सूना था, जिसका फायदा उठाते हुए चोरों ने वारदात को अंजाम दिया।

■ बीएसएफ जवान व बार संघ महासचिव के घर को चोरों ने निशाना बनाया

रात करीब 12 बजे तीन बदमाश दीवार फांदकर घर में घुसे। उन्होंने मेन गेट का ताला तोड़ा और अलमारी के बाद लॉकर से लगभग 9 लाख रुपए के सोने-चांदी के गहने उड़ा लिए। चोरी गए गहनों में सोने की चेन, मंगलसूत्र, अंगूठी, नथ, झूमर, चांदी के सिक्के और पाजेब शामिल थे। सोमवार सुबह जब राहुल घर लौटे और सीसीटीवी फुटेज चेक किए, तो चोरों की हरकतें साफ दिखाई दी। फुटेज में तीनों बदमाश स्पष्ट नजर आ रहे थे। उन्होंने तुरंत पड़ोसियों को सूचित किया और घटनास्थल पर पहुंचे वहां का नजारा देखकर वे हैरान रह गए। घर का सारा सामान बिखरा हुआ था।

चोरों ने दूसरी घटना में स्थानीय एडवोकेट दीपेंद्र कुमार भारद्वाज अभिभाषक संघ श्रीमाधोपुर के महासचिव के घर को निशाना बनाया। बदमाशों ने कमरे की अलमारी के ताले तोड़े और उसमें रखे करीब ढाई लाख रुपए नकद और एक सोने की नथ चुरा ली। उन्होंने कमरे में रखे अन्य सामान को भी अस्त-व्यस्त कर दिया। घटना के बाद वकील भारद्वाज ने बताया कि उनकी गैर मौजूदगी का फायदा उठाकर चोरों ने बड़ी ही सफाई से इस वारदात को अंजाम दिया। उन्होंने स्थानीय पुलिस को घटना की जानकारी दी। सूचना पर मौके पर पुलिस ने घटनास्थल पर सबूत इकट्ठा किए हैं। हालांकि, चोरी के मामलों में अब तक कोई ठोस सुराग हाथ नहीं लगा है।

कार्यालय नगर निगम जोधपुर उत्तर
पोलोटेक्निक कॉलेज, रेजीडेन्सी रोड, जोधपुर, phone Number : 0291 2651483 mail : nnjnorth@gmail.com

क्रमांक :- 1678 दिनांक :- 20/01/2025

Notice Inviting Open Bids

On behalf of Municipal Corporation Jodhpur North, tenders are invited in the prescribed tender form for the work mentioned below. Those interested contractors who want to participate in the tender should submit their sealed envelope copy to the Municipal Corporation Jodhpur Office at Health Branch, 4th floor on date 31/01/2025 can be sent by 03:00 PM.

Received tenders will be opened on the same day at 04:00 PM in the presence of the Bidder. Tender forms can be get on the website of Jodhpur Municipal Corporation North **www.lsg.rajasthan.gov.in/mcjn and www.sppp.rajasthan.gov.in.**

Sr.	Name of Work and Site	Estimated Cost of Work	Amount of EMD (2%)	Price of Tender Fee	Date of downloading tender form	Last Date and time for submission of tender	Last Date and time of tender opening	Contract Period
01	Conducting various awareness campaign, Encourage Behavioral changes and Foster Community-Driven Actions to Reduce Air Polution by utilize social media platforms (Facebook, Instagram, WhatsApp) and Conduct workshops targeting shopkeepers, market vendors and local business owners to educate them on adopting eco-friendly Practices for Swachh Vayu Survekshan Under The National Clean Air Programe (NCAP) for 3 Months.	7.20	14,400	1000	Dated from 20.01.2025 to Dated from 31.01.2025 till	31.01.2025 till 03:00 pm	31.01.2025 by 04:00 pm	3 Months

UBN No. : DLB2425WSOB15245
राज.संवाद/सी/24/10567 — Commissioner, Municipal Corporation Jodhpur (North)

मेजर मिनरल ब्लॉकों के ऑक्शन में राजस्थान को पहला पुरस्कार

■ माइनिंग सेक्टर में राजस्थान ने समूचे देश में परचम फहराया

जयपुर। राज्य के माइंस विभाग ने मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा जो स्वयं खान मंत्री भी है के नेतृत्व में समूचे देश में माइनिंग सेक्टर में राजस्थान का परचम पहरा दिया है। राजस्थान के प्रमुख शासन सचिव माइंस, भूविज्ञान व पेट्रोलियम टी. रविकान्त को सोमवार को ओडिशा के कोणार्क में केन्द्रीय खान मंत्री जी. किशन रेड्डी, ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी और केन्द्रीय खान सचिव वी. कान्ताराव ने वर्ष 2023-24 में देश भर में एक्जेम्प्लेरी परफारमेंस इन मिनरल ब्लॉक ऑक्शन का पहला पुरस्कार प्रदान किया है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा जो स्वयं खान मंत्री भी है के मार्गदर्शन में प्रदेश में खनिज क्षेत्र में नई नीतियों से लेकर खोज खनन और राजस्व संग्रहण के क्षेत्र में एतिहासिक उपलब्धियां अर्जित की गई है। केन्द्र सरकार ने राजस्थान की उपलब्धि को अनुकरणीय परफारमेंस बताया है।

कोणार्क में खान मंत्रियों की कॉन्फ्रेंस में प्रमुख सचिव माइंस टी. रविकान्त ने पुरस्कार प्राप्त किया।

प्रमुख सचिव माइंस टी. रविकान्त को यह पुरस्कार ओडिशा के कोणार्क में आयोजित नेशनल माइनिंग मिनिस्टर्स कॉन्फ्रेंस में दिया गया। प्रमुख सचिव टी. रविकान्त ने राजस्थान के खान विभाग के लिए इसे एतिहासिक उपलब्धि बताते हुए कहा कि राज्य में वर्ष 2023-24 में देश भर में सर्वाधिक 31 मेजर मिनरल ब्लॉकों की नीलामी की गई। यह समूचे देश में सर्वाधिक होने के साथ ही राजस्थान के माइनिंग इतिहास में भी पहली बार हुआ। नई सरकार आने के बाद तीन माह में ही मेजर मिनरल ब्लॉकों के ऑक्शन के योजनाबद्ध प्रयासों से राजस्थान यह उपलब्धि अर्जित की है। उन्होंने कहा कि माइंस एवं भूविज्ञान विभाग की पूरी टीम द्वारा टीम भावना से किए गए समग्र प्रयासों से संभव हो पाया है। इस उपलब्धि के लिए उन्होंने विभाग के अधिकारियों, कार्मिकों, माइनिंग सेक्टर के स्टेक होल्डर्स सहित प्रदेशवासियों को बधाई दी।

रविकान्त ने बताया कि 31 मेजर मिनरल ब्लॉकों में 22 माइनिंग लीज व 9 कंपोजिट लाइसेंस के लिए नीलामी की गई। इनमें लाईम स्टोन के 22 ब्लॉक, आयरन ओर के 4 ब्लॉक और बेसमेटल के पांच ब्लॉक है। उन्होंने बताया कि मिनरल ब्लॉकों की नीलामी के क्षेत्र में इस वित्तीय वर्ष में भी राजस्थान नया रिकार्ड रचने जा रहा है। निदेशक माइंस भगवती प्रसाद कलाल ने बताया कि राजस्थान में खनिज खोज, खनन प्लाटों का डिलेनियेशन, भारत सरकार के ई पोर्टल पर नीलामी, अवैध खनन पर प्रभावी रोक व अवैध गतिविधियों के खिलाफ अभियान चलाकर कार्यवाही आदि से विभाग को नई गति व राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनी है।

कलाल ने बताया कि वर्ष 2023-24 में 31 मेजर मिनरल ब्लॉकों का ऑक्शन किया गया जिसमें नई सरकार के तीन माह के समय में ऑक्शन में तेजी आने से राजस्थान समूचे देश में पहला स्थान प्राप्त करने में सफल रहा। दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस में अतिरिक्त निदेशक भूविज्ञान एसएन डोडिया और अधीक्षण खनि अभियंता विजिलेंस प्रताप मीणा भी हिस्सा ले रहे हैं। दो दिवसीय नेशनल माइनिंग मिनिस्टर्स कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन मंगलवार को राजस्थान के प्रमुख सचिव माइंस टी. रविकान्त भी ऑक्शन और बेस्ट प्रेक्टिसेज पर प्रदेंगेशन देंगे।

मोबाइल व दुपहिया चुराने वाले गिरफ्तार

जयपुर। प्रताप नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मोबाइल स्नैचिंग और दुपहिया वाहन चुराने वाले गिरोह के तीन शातिर बदमाशों को पकड़ा है। जिसमें में एक बाल अपचारी भी है। पुलिस आरोपियों के पास से चोरी की बाइक,एक लैपटॉप सहित स्नेचिंग के दौरान छीने गए आठ मोबाइल फोन बरामद किए है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व तेजस्वनी गौतम ने बताया कि प्रताप नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मोबाइल स्नैचिंग और दुपहिया वाहन चुराने वाले गिरोह के शातिर बदमाश आसू उर्फ रवि गुर्जर निवासी सांगानेर जयपुर और नवीन उर्फ लुक्का निवासी उच्चैन जिला भरतपुर को गिरफ्तार किया गया है।

असिस्टेंट प्रोफेसर भर्ती के परिणाम में अनियमितता पर जवाब मांगा

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने हिंदी विषय के लिए आयोजित असिस्टेंट प्रोफेसर भर्ती-2023 के परिणाम में अनियमितता बरतने पर आरपीएससी और राज्य सरकार से जवाब तलब किया है। इसके साथ ही अदालत ने भर्ती में दी जा रही नियुक्तियों को याचिका के निर्णय के अधीन रखा है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश अंजना चौधरी व अन्य की ओर से दायर याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता प्रेमचंद देवंदा ने अदालत को बताया कि आरपीएससी ने हिंदी विषय के असिस्टेंट प्रोफेसर पद के लिए साल 2023 में भर्ती निकाली थी। लिखित परीक्षा के बाद आयोग ने मॉडल उत्तर कुंजी जारी कर आपत्तियां मांगी, लेकिन बाद में अंतिम उत्तर कुंजी ही जारी नहीं की। वहीं भर्ती के 214 पदों के मुकाबले तीन गुणा अभ्यर्थियों को बुलाने के बजाए 1612 अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए बुलाया गया। जबकि नियमानुसार पदों के तीन गुणा से अधिक अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए नहीं बुलाया जा सकता। याचिका में यह भी कहा गया कि आयोग ने असफल अभ्यर्थियों के अंक भी सार्वजनिक नहीं किए। याचिकाकर्ता की ओर से बताया गया कि अभ्यर्थियों के अंकों को सार्वजनिक नहीं करना भर्ती की पारदर्शिता पर संदेह उत्पन्न करता है। मॉडल उत्तर कुंजी और लिए गए साक्षात्कार के हिसाब से याचिकाकर्ताओं को अंतिम परीक्षा परिणाम की मुख्य सूची में स्थान मिलना चाहिए था, लेकिन आयोग की मनमर्जी से उन्हें चयन से वंचित कर प्रतीक्षा सूची में डाल दिया। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब करते हुए नियुक्तियां को याचिका के निर्णय के अधीन रखा है।

पेयजल को लेकर नीति पेश करने के दिए आदेश

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने बीसलपुर बांध से पीने के पानी के लिए सप्लाई को वरीयता देने के मामले में राज्य सरकार को पॉलिसी ने पेश करने के लिए चार सप्ताह का समय दिया है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस भुवन गोयल की खंडपीठ ने यह आदेश लोकेन्द्र जैन की ओर से दायर जनहित याचिका व प्रदेश में पेयजल की समस्या पर लिए गए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि पानी कहां और कैसे सप्लाई करना है, यह राज्य सरकार का नीतिगत निर्णय है। वहीं इस संबंध में नीति बनाई जा रही है। इस साथ ही लोकेन्द्र जैन की ओर से दायर याचिका सारहीन हो गई है। दूसरी ओर न्यायमित्र प्रतीक कासलीवाल ने कहा कि अभी तक ईआरसीपी से पानी नहीं मिला है। इस पर अदालत ने कहा कि वे चाहते हैं कि हर घर में पानी पहुंचना चाहिए। अदालत इस मामले में पूर्व में रिट स्वीकार कर चुकी है, जबकि यह मुद्दा को जनहित याचिका में उठाया गया है। इस पर एजी ने कहा कि उन्हें इस संबंध में बनाई जा रही नीति पेश करने के लिए समय दिया जाए। इस पर अदालत ने राज्य सरकार को चार सप्ताह का समय दिया है। जनहित याचिका में कहा गया कि बीसलपुर बांध के पानी की पहली प्राथमिकता पेयजल की होनी चाहिए। यदि पानी सरप्लस होता है तो उसे कृषि के उपयोग के लिए छोडा जा सकता है। वहीं यदि बांध के पानी को कृषि के लिए आरक्षित रखा गया तो आने वाले समय में जयपुर, अजमेर और टोंक के निवासियों के लिए पेयजल का संकट खडा हो सकता है। ऐसे में बीसलपुर बांध से पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित की जाए।

'हाईकोर्ट प्रशासन अपना रुख करे स्पष्ट'

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने हाईकोर्ट प्रशासन को कहा है कि शहर में नए कोर्ट कॉम्पलैक्स के लिए जेडीए की ओर तलाशी गई जमीनों को लेकर अपना रुख स्पष्ट करने को कहा है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस भुवन गोयल की खंडपीठ ने यह आदेश दीनदयाल खंडेलवाल व धर्मेन्द्र मुलवानी की जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा कि जेडीए अपने प्रस्ताव में नए कोर्ट कॉम्पलैक्स के लिए नींदड में सौ बीघा जमीन और अजमेर रोड पर रिंग रोड के पास गांव पीपला भगतसिंह में भूमि आरक्षित रखने की जानकारी दे चुका है, लेकिन हाईकोर्ट प्रशासन ने अभी तक उस पर अपना रुख स्पष्ट नहीं किया है।

बजट के लिये सी.आई.आई. ने राज्य सरकार को सिफारिशें सौंपी

■ राइजिंग राजस्थान की सफलता के लिए बधाई भी दी

जयपुर। प्री बजट मेमोरेंडम (पीबीएम) 2025 के लिए सीआईआई ने राज्य सरकार को सिफारिशें सौंपीं।

सीआईआई राजस्थान के वाईस चेयरमैन संजय अग्रवाल ने मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री, उद्योग मंत्री, मुख्य सचिव, अतिरिक्त मुख्य सचिव को राइजिंग राजस्थान की सफलता के लिए बधाई प्रेषित करते हुए क्हा कि एमओयु के क्रियान्वयन के लिए राज्य सरकार द्वारा स्टेप्स लेने पर धन्यवाद दिया।

प्री बजट मेमोरेंडम (पीबीएम) 2025 के लिए सीआईआई ने राज्य सरकार को निम्न सिफारिशें सौंपी। राज्य सरकार ने नई राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना (रिप्स) 2024 एवं 9 नई पॉलिसीज निकाली है। यह एक अभूतपूर्व निर्णय है, मगर पॉलिसीज का इम्प्लीमेंटेषन सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। लोगों में इसकी अवेयरनेस की कमी है। हालांकि सीआईआई अपने स्तर पर इसे उद्योगों को सुचित करता रहता है मगर हमारा मानना है कि सरकार के प्रतिनिधि सीआईआई के साथ राज्य के विभिन्न शहरों में इसकी पब्लिसिटी करें, जिसके इसके अच्छे परिणाम मिलेंगे, ऐसा पहले भी होता रहा है।

रिप्स 2024 में क्लाज 6.3 में एमएसएमईज् के एक्सपॉनशन पर कोई इन्सेन्टिव नहीं है। पहले रिप्स 2022 में एमएसएमईज् को एक्सपॉनशन पर इन्सेन्टिव मिलता था। एमएसएमईज् हर स्टेट के रेवेन्यु एण्ड एम्पलॉयमेंट में सबसे बड़ा योगदान देती है। इसी तरह क्लाज 6.2 में रिप्स 2022 को राहत दी गई है पर ऐसे कई उद्योग हैं जिनका प्रोडक्शन कोविड के कारण लंबित हुआ था। इसलिए इस पर हमारा आग्रह है कि इस क्लाज में रिप्स पॉलिसी 2019 को भी शामिल किया जाए। वैसे तो राज्य सरकार एमओयु के क्रियान्वयन के लिए उचित उपाय कर रही है पर हमारा मानना है कि इंडस्ट्री को इसमें साथ लेंगे तो जो लोग रेस्पोण्ड नहीं कर रहे हैं सीआईआई इसमें उन मेंबर्स को मोटिवेट करके एमओयु के इंप्लीमेंटेशन में मदद कर सकता है। ऐसे बहुत सी इंडस्ट्री मेंबर्स होते हैं जिन्हें इसमें मदद की जरूरत होती है। प्रधानमंत्री के नेट जीरो बाई 2070 को अचीव करने के लिए एन्वायरमेन्टल, सोषियल और गवर्ननेंस (ईएसजी), और ग्रीन बिल्डिंग मुवमेन्ट को प्रमोट करने की जरूरत है। लोगों में इसके अवेयरनेस की कमी है। हमारा मानना है कि सरकार ग्रीन बिल्डिंग्स, ईएसजी को प्रमोट करने एवं नेट जीरो बाई 2070 को अचीव करने के लिए उन्हें स्टांप ड्यूटी में 1 प्रतिषत की छूट दें जो ग्रीन बिल्डिंग्स बनाते और खरीदते है। रिन्यूएबल एनर्जी को सरकार प्रमोट कर तो रही है परंतु राज्य के लोगों को इसका लाभ कम ही मिल रहा है। राज्य सरकार को के मॉडल करियर सेंटर की तर्ज पर कम से कम हर डिविजनल हैडक्वाटर्स पर एक सेंटर खोलना चाहिए। हमें उम्मीद है कि इस तरह से एक साल में कम से कम 50 हजार लोगों को अतिरिक्त अपॉइंटमेंट मिलेगा। यदि स्किल को इंडस्ट्री के साथ क्लासमेट बनाया जाए तो गारमेंट्स, माइनिंग, टेक्सटाइल, हैंडीक्राफ्ट में एक लाख लोगों को और रोजगार मिलेगा। नए कोर्सेज जैसे ए आई, स्मार्ट एग्रीकल्चर और ड्रोन टेक्नोलॉजी, सोलर टेक्निकल, साइबर सिक्योरिटी के शॉर्ट टर्म क्लासेस की जरूरत है। आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात सरकारें पेटेंट और कॉपीराइट्स पर काफी काम कर रही है। वहीं के साथ मिलकर पीपीपी मॉडल पर सेंटर बनाए गए हैं जो स्टार्टअप और इंडस्ट्री को पेटेंट दिलाते में मदद करते हैं और साथ में अवेयरनेस सेशन भी करते है। राज्य में इस अवसर की कमी है और नए स्टार्टअप एवं इंडस्ट्री को इसके बारे में बताने तथा इसका लाभ लेने की जरूरत है। राज्य सरकार को राजस्थान टेक्नोलॉजिकल डेवलपमेंट सेंटर बनाने की जरूरत है।

राज्य सरकार ने 13 फैसिलिटी सेंटर का गठन किया है जिससे का रुका हुआ अमाउंट मिल सके जो की विभिन्न सरकारी विभागों एवं बड़े उद्योगों में 45 दिन से ज्यादा रुका हुआ है।

सीआईआई.राजस्थान के वरिष्ठ निदेशक एवं प्रमुख नितिन गुप्ता भी आज इसमें शामिल हुए।

फर्जी अनुभव प्रमाण पत्र से नौकरी हासिल करने को लेकर अभ्यावेदन तय करने के आदेश

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग में फर्जी अनुभव प्रमाण पत्र से नौकरी हासिल करने को चुनौती देने वाली याचिका पर विभाग के सचिव और एसओजी को याचिकाकर्ता के अभ्यावेदन को चार सप्ताह में तय करने को कहा है। अदालत ने याचिकाकर्ता को कहा है कि वह एक सप्ताह में अपना अभ्यावेदन पेश करे। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश याचिकाकर्ता डॉ. टीएन शर्मा की याचिका पर दिए।

याचिका में अधिवक्ता पीसी भंडारी ने बताया कि आरपीएससी ने साल 2014 में एनालिस्ट कम प्रोग्रामर के 29 पदों पर भर्ती निकाली थी। जिसमें लिखित परीक्षा आयोजित कर अंतिम परिणाम मई, 2017 में जारी किया गया। याचिका में कहा गया कि भर्ती में एक महिला अभ्यर्थी ने एक फर्म में कार्य करने का फर्जी अनुभव प्रमाण पत्र लगाया। जबकि आरटीयू, कोटा से आरटीई में मिली जानकारी के अनुसार महिला निजी इंजीनियरिंग कॉलेज में एसोसिएट प्रोफेसर के तौर पर कार्यरत थी। दूसरी ओर कॉर्पोरेट मंत्रालय से मिली जानकारी के अनुसार संबंधित फर्म ने जुलाई, 2013 के बाद काम ही नहीं किया। इसी तरह एक अन्य महिला अभ्यर्थी डीआरडीओ में रिसर्च स्कॉलर थी, लेकिन इस भर्ती के लिए ऐसे अभ्यर्थी पात्र ही नहीं थे। इस संबंध में एसओजी और विभाग में शिकायत की गई, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई।

डोटासरा बिना बॉल के फुटबॉल खेल रहे हैं, उनको स्वयं को नहीं पता वे क्या बोल देते हैं : मदन राठौड़

■ 'दिल्ली चुनाव को लेकर बयान देने से पूर्व पायलट पहले लीडरशीप के ढुलमुल रवैये को समझने का प्रयास करें'

■ 'निर्दलीय विधायक क्षेत्र के विकास में अटका रहे है रोड़ा, विकास में राजनीति नहीं करनी चाहिए'

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने विपक्ष के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि भाजपा सरकार जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य कर रही है, फिर चाहे विपक्ष को क्या लग रहा है, यह उनकी सोच है। सदन में विपक्ष की भूमिका जैसी होगी, सत्ता पक्ष भी उसी लहजे में उसका जवाब देगा। डोटासरा बिना बॉल के फुटबॉल खेल रहे हैं, उनको पता ही नहीं है कि क्या बोल रहे हैं, उनको बाद में पता चलता है कि मैंने क्या बोल दिया। ऐसे में मेरा विपक्ष से आग्रह है कि विपक्षी नेताओं को बोलने से पहले अपने घर में झांक लेना चाहिए, दूसरों के घर में ताकझांक करना अच्छी आदत नहीं है।

राठौड़ ने दिल्ली चुनावों को लेकर सचिन पायलट के बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि पायलट को याद रखना चाहिए कि दिल्ली में पिछली बार कांग्रेस को कितनी सीट मिली थीं। पायलट को अपने नेतृत्व और लीडरशीप के ढुलमुल नीति को समझने का भी प्रयास करना चाहिए। बिना सोचे समझे बयानबाजी नहीं करनी चाहिए। दिल्ली में जनता ने भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाने का मानस बना लिया है। भाजपा अपने एजेंडे और घोषणा पत्र के अनुरूप कार्य कर रही है, भाजपा को जनता का पूर्ण आशीर्वाद मिलेगा। उन्होंने कहा कि भाजपा नीतियों, सिद्धांतों पर आधारित राजनीति करती है, जातिवाद की राजनीति भाजपा में नहीं की जाती है। यहां जनता जो चाहेगी वो ही कार्य होगा। जातिगत आधार पर कार्य नहीं किया जाता। भाजपा ने जन अपेक्षाओं के अनुरूप उम्मीदवार उतारे है। भाजपा कभी भी रेवड़ियां बांटने का कार्य नहीं करती। विपक्ष आनन फानन में रेवड़ियां बांटकर चुनावी लाभ लेने के लिए योजनाओं की घोषणा करता है, फिर उनका क्रियान्वयन नहीं हो पाता।

एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स ने 204 किलो गांजे से भरा हुआ ट्रक-कंटेनर पकड़ा

उडीसा से तस्करी कर हरियाणा ले जा रहा था 2.50 करोड़ रु. का गांजा

जयपुर (कासं)। एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स पुलिस मुख्यालय, झुंझुनूं जिले की चिड़ावा और सूरजगढ़ पुलिस ने 204 किलो गांजे से भरा ट्रक और कंटेनर पकड़ा है। पुलिस ने कई घंटों तक ट्रक का पीछा करने के बाद आरोपी ट्रक ड्राईवर को दबोचा। कंटेनर की बॉडी में बने गुप्त स्थान से 204 किलो से अधिक गांजा बरामद किया है। इस मामले में आरोपित ट्रक चालक सुभाष चन्द्र जाट (40) निवासी झोझू जिला चरखी दादरी (हरियाणा) को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस की अनुसार जब्त मादक पदार्थ गांजा की कीमत करीब 2.50 करोड़ रुपए आंकी गई है।

एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स पुलिस मुख्यालय, झुंझुनूं जिले की चिड़ावा और सूरजगढ़ पुलिस ने 204 किलो गांजे से भरा ट्रक पकड़कर आरोपी को गिरफ्तार किया।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स दिनेश एमएन ने बताया कि झुंझुनू जिले की चिड़ावा एजीटीएफ को सूचना मिली कि उडीसा से एक ट्रक कंटेनर में भारी मात्रा में गांजा आया है। सूचना को डवलप कर चिड़ावा और सूरजगढ़ थाना पुलिस को अवगत कराया गया।

एम.एन. ने बताया कि जहां टीम की ओर से हरियाणा नंबर के ट्रक कंटेनर की तलाश की गई। इस पर बगड की तरफ से आने की सूचना पर चिड़ावा पुलिस ने चिडावा बाईपास पर ट्रक कन्टेनर को रूकवाने की कोशिश की। लेकिन चालक चिड़ावा कस्बे से होता हुआ मेंन हाईवे से ट्रक को सूरजगढ की तरफ भगाने लगा। सूचना पर सूरजगढ़ पुलिस ने रघुनाथपुरा टोल बूथ पर नाकाबंदी शुरू की गई।

इसी दौरान कन्टेनर चालक के ट्रक को स्यालू की तरफ घुमा लेने की सूचना मिली। इस पर रघुनाथपुरा टोल नाका से आगे स्यालू की तरफ से आने वाले रास्तो पर नाकाबंदी शुरू की गई। इसी बीच रघुनाथपुरा से मण्डी सूरतगढ़ की तरफ वाले रास्ते पर कंटेनर आने की सूचना पर बरासिया कॉलेज के पास पावर हाउस मोड पर नाकाबंदी की गई। इस पर सूरजगढ की तरफ से कन्टेनर आता दिखाई दिया। रुकवाने पर चालक जानलेवा व खतरनाक तरीके से नाकाबंदी पर लगे जाब्ते पर ट्रक ऊपर चढाने की कोशिश कर हुए ट्रक को बुहाना रोड की और डिवाइडर पर चढाते हुए भागने लगा।

इस पर चिड़ावा-सूरजगढ़ थाना पुलिस एवं एजीटीएफ की टीम ने ट्रक का पीछा किया तो चालक सूरजगढ़ कस्बे मे कई वाहनों के टक्कर मारते हुए खतरनाक व जानलेवा तरीके से लगातार भागता रहा। पब्लिक एड्रेस सिस्टम से चालक को पुलिस ने ट्रक रोकने की कई बार हिदायत दी। लेकिन चालक लगातार भागता रहा। कन्टेनर को रूकवाने के लिए दो बार सावधानी रखते हुए बुहाना व सूरतगढ़ की तरफ से कोई वाहन व राहगीर आते हुए नहीं दिखाई देने पर खाली जगह होने पर जाखोद बाईपास तिराहे से पहले सर्विस पिस्टल से हवाई फायर कर भी चेतावनी दी गई।

इसके बावजूद भी भी चालक कन्टेनर को लगातार दौड़ाते हुए जाखोद रोड से कासनी की तरफ चला। सभी टीमों ने ट्रक के आगे पीछे गाड़ी लगा रोकना चाहा तो ट्रक लेकर खेत में घुस गया। ट्रक के टायर जमीन में धंसने की वजह से आरोपी भागने लगा।

जिसे मौके पर ही टीम ने दबोच लिया। ट्रक कंटेनर की तलाशी ली गई तो पीछे की बॉडी में केबिन की तरफ करीब 2 फुट चौड़ा अलग से केबिन बनाया हुआ था। जो बाहर से दिखाई नहीं देता। ऊपर अलग से स्क्रू कसे हुए मिले। जिसे खोल कर देखा तो कुल 6 प्लास्टिक के कट्टे रखे हुए मिले। जिनमें कुल 40 पैकेट रखे हुए थे, इन पैकेटों में कुल 204 किलो 85 ग्राम गांजा मिला। ट्रक एवं अवैध मादक पदार्थ जब्त कर पुलिस ने आरोपी चालक सुभाष चंद्र को गिरफ्तार कर लिया।

आरोपित चालक सुभाष चन्द्र हरियाणा के चरखी दादरी में एनडीपीएस के मामले में पूर्व में गिरफ्तार हुआ था। जिसमें इसे 10 साल की कैद हुई थी। साल 2017 में बेल मिलने पर आरोपित फरार हो गया। आरोपित हरियाणा का उद्घोषित अपराधी है। जिसके ऊपर इनाम भी रखा गया है। पुलिस की टीम आरोपित से गहनता से पूछताछ कर रही है और इसके आपराधिक रिकार्ड के बारे में जानकारी ली जा रही है।

इस कार्रवाई में एजीटीएफ पुलिस मुख्यालय के हेड कांस्टेबल मोहन लाल व कमल डागर एवं एजीटीएफ झुंझुनूं एजीटीएफ के हेड कांस्टेबल शशिकांत एवं कांस्टेबल अमित की विशेष भूमिका रही। टीम में एजीटीएफ पीएचक्यू से उपनिरीक्षक सुभाष तंवर, एएसआई शंकर दयाल शर्मा, हेड कांस्टेबल अभिमन्यु, नरेंद्र, सुरेश, कांस्टेबल रतिराम व चालक सुरेश तथा झुंझुनू जिले से सीओ चिड़ावा विकास धिन्धवाल एवं एसएचओ सूरजगढ़ हेमराज शामिल थे।

3.72 ग्राम स्मैक के साथ तस्कर पकड़ा

जयपुर। कानोता थाना पुलिस और जिला स्पेशल टीम जयपुर पूर्व ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ स्मैक की तस्करी करने वाले एक शातिर तस्कर को गिरफ्तार किया है और उसके पास से 3.72 ग्राम स्मैक जब्त की है। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व तेजस्वनी गौतम ने बताया कि अवैध मादक पदार्थ स्मैक की तस्करी करने वाले तस्कर ओमी सिंह सिंघीवाल को गिरफ्तार किया।

16 मंडल अध्यक्षों की नियुक्ति पर रोक

जयपुर। भाजपा संगठन पर्व की प्रदेश अपील समिति की ओर से सोमवार को प्रदेश के 16 मंडल अध्यक्षों की नियुक्ति पर अंतरिम रोक लगाने तथा 5 मंडल अध्यक्षों की नियुक्ति को निरस्त करने की घोषणा की है। संगठन पर्व 2024 की प्रदेश अपील समिति के प्रदेश संयोजक घनश्याम तिवाड़ी, सह संयोजक सरदार अजयपाल सिंह और योगेंद्र सिंह तंवर ने सोमवार को बैठक कर प्रदेश के 16 मंडल अध्यक्षों के खिलाफ निर्वाचन मापदंडों के उल्लंघन का आरोप पाए जाने पर उनकी नियुक्ति पर रोक लगाने का निर्णय किया है।

समिति के प्रदेश संयोजक घनश्याम तिवाड़ी ने बताया कि जयपुर शहर से जलमहल और पौड्रिक मंडल, जयपुर देहात से चौमूं नगर, भरतपुर से सेवर, रूदावल, सिरोही से डूंगरखेडा, अलवर दक्षिण से मालाखेड़ा, चूरू के रतनगढ़, अलवर के खोह, बीकानेर शहर के रानीबाजार, जुनागढ, पुराना शहर, जस्सुसर, नया शहर, बूंदी के इन्द्रगढ़ ग्रामीण और हनुमानगढ के संगरिया नगर मंडल अध्यक्षों की नियुक्ति पर अंतरिम रूप से रोक लगाई गई।

उन्होंने बताया कि समिति ने प्रदेश के 5 मंडल अध्यक्षों के निर्वाचन को निरस्त करने की घोषणा की है। इनमें अलवर दक्षिण के थानागाजी, भरतपुर के उज्जैन, जालौर के भीनमाल नगर, उदयपुर देहात के डबोक और सिरोही के पोसलिया मंडल अध्यक्ष की नियुक्ति को निरस्त किया गया।

रबी सीजन 2025-26 में गेहूं खरीद हेतु सभी तैयारियां हो समयबद्ध रूप से पूरी : सुमित गोदारा

■ 'खरीद प्रक्रिया में सुगमता हेतु संबंधित एंजेंसिया उचित समन्वय के साथ काम करें'

जयपुर। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा की अध्यक्षता में सोमवार को सचिवालय में रबी सीजन 2025-26 में राज्य में समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीद के संबंध में महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रदेश में गेहूं खरीद करने वाली सभी पांच एंजेंसियों (एफसीआई, राजफेड, तिलमसंघ, एफसीसीएफ एवं नेफेड) के प्रतिनिधियों समेत सभी संबंधित विभागों के आला अधिकारी उपस्थित रहे।

गोदारा ने कहा कि राजस्थान एक कृषि प्रधान प्रदेश है। राज्य सरकार किसानों के हितों को संरक्षित करने हेतु कृत संकल्पित होकर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि गेहूं उत्पादन में राजस्थान अग्रणी राज्य बनकर उभर रहा है। आगामी रबी सीजन में गेहूं के समर्थन मूल्य पर खरीद हेतु सभी तैयारियां समयबद्ध रूप से पूरी कर ली जाएं। उन्होंने कहा कि खरीद प्रक्रिया में शामिल सभी पांच एजेंसियां एफसीआई, राजफेड, तिलमसंघ, एफसीसीएफ एवं नेफेड आपस में उपयुक्त समन्वय के साथ कार्य करें ताकि गेहूं खरीद से लेकर भुगतान तक की प्रक्रिया में किसानों को किसी भी प्रकार की दिक्कत ना हो। अधिक उत्पादन की संभावना वाले क्षेत्रों में उचित चयन उपरांत आवश्यकतानुसार नए खरीद केंद्र खोले जाएं। इस हेतु अधिकारी जिलों के दौरे कर खरीद केंद्र की जरूरत वाले स्थानों को चिन्हित करें। गोदारा ने कहा कि मंडियों में खरीद के लिए उचित स्थान की व्यवस्था की जाए। आवश्यकतानुसार बारदाने की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। गिरदावरी की प्रक्रिया को पूर्ण पारदर्शिता के साथ पूरा किया जाए। साथ ही तो मंडियों में आवश्यक सफाई व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि उचित प्रचार प्रसार के माध्यम से आगामी रबी सीजन में राज्य में समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीद संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां किसानों को दी जाएं। हेल्पलाइन के माध्यम से भी किसानों द्वारा मांगी जाने वाली सूचनाओं को प्रभावी रूप से साझा किया जाए।

बैठक में राजस्थान राज्य भंडारण निगम के प्रबंध निदेशक संदीप वर्मा ने कहा कि रबी सीजन 2025-26 के मद्देनजर राज्य सरकार के निर्देशानुसार सभी भंडारगृहों में उचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही है। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के प्रमुख शासन सचिव सुबीर कुमार ने कहा कि आगामी रबी सीजन को देखते हुए सभी संबंधित अधिकारी अपनी जिम्मेदारियों का उत्कृष्ट निर्वहन करें।

बैठक में एफसीआई के प्रबंध निदेशक सौरव चौरसिया, तिलमसंघ के अध्यक्ष राजेश गुप्ता, राजफेड प्रबंध निदेशक नारायण सिंह, एफसीसीएफ से मधु शर्मा, नेफेड से महेंद्र सिंह रावत,अतिरिक्त खाद्य आयुक्त पूनम प्रसाद सागर सहित विभिन्न उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

लोन खाते को हैक कर 38.80 लाख की साइबर ठगी, तीन जने गिरफ्तार

आरोपियों द्वारा खाते खुलवाकर कमीशन बेस पर ठगी के रुपये प्राप्त किये जाते थे

दौसा, (निसं)। साइबर क्राइम थाना पुलिस ने साइबर शील्ड अभियान के तहत बड़ी कार्रवाई की है। परिवादी के ओ. डी. लोन खाते को हैक कर उसमें से 38 लाख 80 हजार रुपये की साइबर ठगी के मामले में तीन आरोपी गिरफ्तार किए हैं। आरोपियों द्वारा स्वयं के बैंक खाते खुलवाकर कमीशन बेस पर साइबर ठगी के रुपये प्राप्त किये जाते हैं।

जानकारी के अनुसार परिवादी हंसराज गुर्जर पुत्र रामकिशन गुर्जर निवासी खुरी ने 12 दिसंबर को पुलिस थाना साइबर क्राइम में इस आशय की रिपोर्ट पेश की कि मेरे पास एक्सिस बैंक के नाम से बैंक का डाटा अपडेट करने के लिये फोन आया। उसे एक पीडीएफ फाइल भेजी और कहा कि आपका डाटा चैक कर लीजिये। वह बिहारी टाइप की भाषा बोल रहा था। एक दो बार पीडीएफ खोल कर देखी तो यह फाइल नहीं खुली। तब बैंक खाते का बैलेंस चैक किया तो बैलेंस सेम था, लेकिन कुछ दिन बाद पत्नी बादाम देवी के ओडी (लोन) खाता के बैलेंस को चैक किया तो उसमे से 22 से 27 नवंबर के मध्य 38 लाख 80 हजार 112 रुपये ऑनलाइन बैंकिंग के माध्यम से विड्रोल मिला, जबकि हमने किसी प्रकार का ऑनलाइन बैंकिंग, यूपीआई व नेट बैंकिंग का उपयोग नहीं किया गया है।

साइबर ठगी के मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया।

- राशि को कमीशन बेस पर स्वयं के बैंक खातों में प्राप्त कर रुपयों को एटीएम के माध्यम से कैश कर लिया जाता था

एसपी रंजीता शर्मा ने साइबर क्राइम पुलिस के डीएसपी बृजेश कुमार मीना नेतृत्व में साइबर क्राइम पुलिस, थाना कोतवाली व साइबर सैल से एक विशेष टीम का गठन कर तकनीकी आधार पर आरोपी की तलाश कराई। इस पर 17 जनवरी को आसनसोल, निमटपुर जिला वर्धमान (पश्चिम बंगाल) से तीन आरोपियों ईशान ठाकुर पुत्र राजा ठाकुर नाई निवासी बुधा विलेज नियर शिव मंदिर आसनसोल जिला वर्धमान प. बंगाल व पारिजात घोष पुत्र प्रदीप घोष निवासी सी टाइप बंगलो पोस्ट सुंदरचौक पुलिस थाना कुल्टी जिला वर्धमान प. बंगाल व श्यामल रूईदास पुत्र ज्योति रूईदास निवासी हरिजनपारा मोहल्ला निमटपुर जिला वर्धमान पश्चिम बंगाल को गिरफ्तार कर आसनसोल न्यायालय में पेश कर ट्रांजिट रिमाण्ड प्राप्त किया गया। इसमें अन्य मुलजिमों की तलाश जारी है।

साइबर ठगों द्वारा ओडी (लोन) बैंक खाता को हैक कर के आम लोगों से ठगी कर घटना को अंजाम दिया जाता है। आरोपियों द्वारा साइबर ठगों द्वारा ठगी गयी राशि को कमीशन बेस पर स्वयं के बैंक खातों में प्राप्त कर रुपयों को एटीएम के माध्यम से कैश कर लिया जाता है।

संविदा कर्मियों की भर्ती में हुई धांधली को लेकर प्रदर्शन

कांग्रेस पदाधिकारियों ने कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन कर नारेबाजी की।

- कांग्रेस नेताओं ने भर्ती प्रक्रिया को लेकर मेडिकल कॉलेज प्रशासन और ठेकेदार एजेंसी पर मिलीभगत और भ्रष्टाचार का आरोप लगाया
- जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर भर्ती को निरस्त करने और नियमानुसार प्रक्रिया चलाने की मांग की

दौसा, (निसं)। मेडिकल कॉलेज में संविदा कर्मियों की भर्ती में हुई धांधली को लेकर सोमवार को कांग्रेस पदाधिकारियों ने कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन किया। कांग्रेस नेताओं ने इस भर्ती प्रक्रिया को लेकर मेडिकल कॉलेज प्रशासन और ठेकेदार एजेंसी पर मिलीभगत और भ्रष्टाचार का आरोप लगाया। प्रदर्शन के बाद कांग्रेस नेताओं ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर भर्ती को निरस्त करने और नियमानुसार प्रक्रिया चलाने की मांग की।

विधायक डीसी बैरवा ने आरोप लगाया कि मेडिकल कॉलेज दौसा में संविदा पर भर्ती करते समय योग्यता और मैरिट को पूरी तरह नजरअंदाज किया गया। उन्होंने कहा कि जब इस मुद्दे को लेकर मेडिकल कॉलेज प्रशासन से संपर्क किया गया तो कोई ठोस जवाब नहीं मिला। यह बेरोजगार युवाओं के लिए अन्यायपूर्ण है। प्रधान प्रहलाद मीणा ने कहा कि इस भर्ती प्रक्रिया में उन युवाओं को प्राथमिकता मिलनी चाहिए थी, जिन्होंने कोरोना महामारी के समय सीमित मेहनताने पर अपनी जान जोखिम में डालकर काम किया। ऐसे युवाओं को योग्यता और अनुभव के आधार पर मौका देना चाहिए था। नगर अध्यक्ष घनश्याम भांडारेज ने कहा कि भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता का अभाव है। कई योग्य बेरोजगार युवाओं के आवेदन स्वीकार तक नहीं किए गए। उन्होंने आरोप लगाया कि मेडिकल कॉलेज प्रशासन और ठेकेदार एजेंसी के बीच मिलीभगत से भ्रष्टाचार की बू आ रही है।

कांग्रेस नेताओं ने ज्ञापन में यह मांग की कि भर्ती प्रक्रिया को तुरंत निरस्त किया जाए, नई भर्ती नियमानुसार योग्यता और मैरिट के आधार पर की जाए, कोरोना काल में सेवा देने वाले योग्य युवाओं को प्राथमिकता दी जाए। इस विरोध प्रदर्शन में महिला कांग्रेस की जिला अध्यक्ष रुक्मणी गुप्ता, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष हेमराज अवाना, नरेंद्र जैमन, उमाशंकर बनियाना और शीतल चौबे समेत कई नेता और कार्यकर्ता शामिल रहे। कांग्रेस नेताओं ने चेतावनी दी है कि यदि उनकी मांगों को जल्द पूरा नहीं किया गया तो वे आंदोलन को और तेज करेंगे। वहीं, बेरोजगार युवाओं ने भी इस मुद्दे को लेकर आक्रोश जताया है।

लूट करने वाले दो गिरफ्तार

सांभरझील, (निसं)। राहगीर से लौटकर चांदी की चेन व मोबाइल लूट के मामले में पुलिस ने वांछित दो और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पूर्व में इस मामले में तीन जनों को जिसमें एक बाल अपचारी भी शामिल था, उनसे लूट का माल बरामद कर लिया गया है। थाना अधिकारी राजेंद्र कुमार वर्मा ने बताया कि पुलिस की गठित टीम द्वारा आसूचना संकलन व तकनीकी सहायता द्वारा लूट गिरोह के अन्य वांछित दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता मिली। लूट के आरोपी कैलाश गुर्जर निवासी कुणी थाना नावां व गोरधन गुर्जर निवासी लाखनपुरा चौसला थाना नावां जिला डीडवाना कुचामन के निवासी हैं।

महिला की संदिग्ध मौत मामले का खुलासा नहीं होने पर आक्रोश

नारायणपुर, (निसं)। उपखंड क्षेत्र की ग्राम पंचायत मुण्डावरा में एक सप्ताह पूर्व संदिग्ध परिस्थितियों में हुई अनीता सैनी की मौत का खुलासा नहीं होने और आरोपियों की गिरफ्तारी में हो रही देरी के कारण ग्रामीणों ने सोमवार को आक्रोश जताते हुए तहसीलदार अनिल कुमार को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। ग्रामीणों ने घटना का जल्द से जल्द खुलासा करने और दोषियों को गिरफ्तार करने की मांग की।

- तहसीलदार को ग्रामीणों ने सौंपा ज्ञापन, घटना का खुलासा करने की मांग की

जानकारी के अनुसार 12 जनवरी को अनीता सैनी की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई थी। मृतका के पीहर पक्ष ने आरोप लगाया था कि अनीता के ससुराल पक्ष में उनके पति, जेठ, सास और ससुर ने उसकी हत्या की है। उन्होंने बताया कि ससुराल वालों ने न तो पीहर पक्ष को अनीता की मौत की सूचना दी और न ही मौके पर किसी को बुलाया। बाद में गांव वालों ने पीहर पक्ष को फोन कर सूचना दी, जिससे पता चला कि अनीता की हत्या कर दी गई है। परिजनों और ग्रामीणों का आरोप है कि घटना के एक सप्ताह बाद भी पुलिस ने न तो मामले का खुलासा किया है और न ही आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इस लापरवाही से ग्रामीणों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। सोमवार को ग्रामीणों ने तहसील कार्यालय पहुंचकर अनीता को न्याय दो के नारे लगाए। इसके बाद उन्होंने तहसीलदार को ज्ञापन सौंपते हुए मुख्यमंत्री से मामले में हस्तक्षेप कर जल्द कार्रवाई की मांग की। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई, तो वे आंदोलन तेज करेंगे। इस दौरान रमेश, राजू, हीरा देवी, बाबूलाल, राहुल, योगेश, राकेश, रोहिताश, कैलाश, मोहन, ईमरती, कमला, ममता, मेघराज और घनश्याम सैनी समेत ग्रामीण और महिलाएं शामिल थी।

शिक्षक को मंडोर बुलाकर 10 लाख की डिमाण्ड की

जोधपुर, (कासं)। शहर के एक शिक्षक को इंस्टाग्राम आईडी पर लड़की से मैसेज करवाने के बाद दो सगे भाइयों ने ब्लैकमेल करने का प्रयास किया। उसे मंडोर बुलाया और एक स्थान पर मारपीट करते हुए दस लाख की डिमाण्ड रखी। उसके भाई को कॉल कर दस लाख रूपए मांगे गए। घटना शनिवार की है। पीड़ित शिक्षक के बहनोई ने रविवार को मंडोर थाने में इसकी रिपोर्ट दी। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई की और लोकेशन के आधार पर दो सगे भाइयों को बापर्दा गिरफ्तार कर दो मोबाइल जब्त किए। मामले में जांच की जा रही है।

मदेरणा कॉलोनी माता का थान निवासी राजेश पुत्र तुलसीराम चौधरी की तरफ से रिपोर्ट दी गई। इसमें बताया कि उसके साले शिक्षक नेताराम चौधरी को 18 जनवरी को इंस्टाग्राम आईडी पर लड़की का मैसेज आया और उसे मंडोर बुलाया गया। इस पर उसका साला नेताराम गांव से रवाना होकर सुबह मंडोर गया, जहां पर बाद में उसी नंबर से उसके बड़े भाई के पास में कॉल आया और दस लाख रूपयों की डिमाण्ड रखी। अन्यथा नेताराम को बदमान करने के साथ लड़की के केस में फंसाने के लिए धमकाया। नेताराम के साथ मारपीट भी करने लगे। पीड़ित के बहनोई ने पुलिस को सूचना दी और केस दर्ज करवाया।

आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की एक टीम डीएसटी पूर्व प्रभारी श्याम सिंह, मंडोर थाना प्रभारी एसआई अरूणा, एएसआई धन्नाराम, जगदीश चंद्र, हैड कांस्टेबल बंशीलाल, कांस्टेबल मुकेश, पांचाराम, साहबराम की गठित की गई। पुलिस ने आसपास मोबाइल लोकेशन निकालकर दो सगे भाइयों मथानिया के खुडियाला स्थित भाकारों की ढाणियां निवासी भिंयाराम पुत्र रामूराम एवं चौलाराम जाट को बापर्दा गिरफ्तार किया है।

25 लाख की ठगी

जोधपुर, (कासं)। निकटवर्ती बनाड़ क्षेत्र में रहने वाले व्यक्ति से सरकारी विभागों में नौकरी लगवाने के नाम पर 25 लाख की धोखाधड़ी हो गई। उससे चार सालों में यह रकम ऐठी गई। आखिर में आरोपी ने मना कर दिया। पीड़ित ने अब पुलिस की शरण लेकर केस दर्ज करवाया है। बनाड़ पुलिस ने बताया कि विश्नोईयों की ढाणी बनाड़ निवासी परसाराम पुत्र पुनाराम चौधरी की तरफ से रिपोर्ट दी गई। इसमें बताया कि चार साल पहले फरवरी 2021 में उसका संपर्क बनाड़ क्षेत्र में रहने वाले कैलाशचन्द्र पुत्र खेमाराम के साथ हुआ। उसने सरकारी विभागो में अपनी अच्छी पकड़ और अधिकारियों से पहचान का कहकर उसके पुत्रों और रिश्तेदारों को नौकरी दिलाने तथा अधिकारियों से मुलाकात कराने और नियुक्ति पत्र दिलाने का झांसा देकर उससे अलग अलग समय में करीब 25 लाख रूपये की राशि ले ली, लेकिन चार साल बाद भी न तो किसी की नौकरी लगाई और नहीं दिए गए रूपए वापिस लौटाए। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की है।

खेतड़ी को जिला बनाने की मांग

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी को जिला बनाने की मांग को लेकर सोमवार को ग्रामीणों ने एसडीएम का कार्यालय के सामने विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान तहसीलदार को ज्ञापन देकर खेतड़ी को जिला बनाने की मांग की गई। ग्रामीणों ने सरकार द्वारा जल्द मांग नहीं मानने पर बड़े स्तर पर आंदोलन की चेतावनी दी है।

- ग्रामीणों ने प्रदर्शन किया, तहसीलदार को ज्ञापन देकर मांग नहीं मानने पर बड़े स्तर पर आंदोलन की चेतावनी दी

ग्रामीणों ने एसडीएम कार्यालय के सामने विरोध प्रदर्शन किया।

तहसीलदार सुनील कुमार को दिए ज्ञापन में ग्रामीणों ने बताया कि खेतड़ी को जिला बनाओ की मांग संघर्ष समिति की ओर से पिछले काफी समय से की जा रही है। जिला बनाने की मांग को लेकर संघर्ष समिति व ग्रामीणों की ओर से उच्च स्तर पर भी अवगत करवाया जा चुका है, लेकिन आमजन की भावनाओं को देखते हुए सरकार की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा है। सरकार द्वारा कोई प्रभावी कदम नहीं उठाने से अब ग्रामीणों में रोष उत्पन्न होने लगा है। उन्होंने बताया कि खेतड़ी को जिला नहीं बनाए जाने से क्षेत्र के लोगों के लिए व्यापार में भी काफी परेशानी उठानी पड़ रही है। वहीं आवश्यक संसाधनों का अभाव होने से खेतड़ी लगातार विकास की गति में पिछड़ रहा है। खेतड़ी वर्तमान समय में जिला बनने की सभी शर्तें पूरी करने के बावजूद भी सरकार की ओर से अनदेखी की जा रही है। जब सरकार की ओर से नगर पालिका व उप तहसील जैसे क्षेत्रों को जिला बना दिया ऐसे में खेतड़ी को जिला नहीं बनाए जाने से खेतड़ी की जनता को गहरा आघात लगा हुआ है।

ग्रामीणों ने बताया कि ऐतिहासिक व भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो खेतड़ी पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान रखता है। खेतड़ी के राजा अजीत सिंह ने स्वामी विवेकानंद को शिकागो के धर्म सम्मेलन में भेजकर सनातन धर्म के प्रचार को लेकर महत्वपूर्ण कदम उठाया था, जिसकी वजह से खेतड़ी की पूरे विश्व में अपनी अलग पहचान बनी हुई है। ग्रामीणों ने बताया कि यदि जिला बनाने को लेकर सरकार ने जल्द ही कोई प्रभावी निर्णय नहीं लिया गया तो खेतड़ी क्षेत्र के ग्रामीणों की ओर से बड़े स्तर पर आंदोलन किया जाएगा।

इस मौके पर सुरेश कुमार, पवन शर्मा, राजेश सांखला, सुभाषचंद्र, जुगल किशोर, रामचंद्र, मुरलीधर, विशंभर दयाल, महावीर, संजय, सत्यनारायण, सीताराम कुमावत, संत कुमार, नागरमल, विष्णु दयाल, ओमप्रकाश, प्रवीण कुमार, खेमचंद, विकास कुमार, भरत, अशोक कुमार, रमेश चंद्र सहित अनेक लोग मौजूद थे।

सड़क बनाने की मांग, टंकी पर चढ़े ग्रामीण

टोंक, (निसं)। सदर थाना क्षेत्र की मंडावर पंचायत की देवगंज ढाणी के सात लोग गांव में रास्ता नहीं बनने से परेशान होकर करीब 70 फीट ऊंची टंकी पर चढ़ गए। इसकी सूचना मिलने पर सदर थाना पुलिस और प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची। पुलिस और प्रशासन ने लोगों को टंकी से उतरने के लिए समझाया, लेकिन वे नहीं माने।

ग्रामीणों ने बताया कि सदर थाना क्षेत्र की इस ढाणी में आजादी से अब तक रोड नहीं बना है, इसके चलते खासकर बारिश के दिनों में बच्चों समेत लोगों को परेशानी होती है। एक-एक फीट के गड्ढे हो जाते हैं, पूरा रोड कीचड़ से सना रहता है। इस समस्या को लेकर एक साल से तो ग्रामीण मुख्यमंत्री से लेकर मंत्री, कलेक्टर, स्थानीय विधायक सचिन पायलट आदि को ज्ञापन दे चुके हैं तथा कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन कर चुके हैं। हर बार आश्वासन मिला, लेकिन अभी तक पक्का रोड बना नहीं। देर शाम तक पुलिस मौके पर मौजूद थी। वहीं ग्रामीण सड़क निर्माण की स्वीकृति की मांग पर अड़े रहे।

पुलिस ने सात गो तस्करों को पकड़ा

किशनगढ़ बास, (निसं)। पुलिस थाना किशनगढ़ बास क्षेत्र के बहुचर्चित रहे रुध में पांच दिन पहले मिले गोवंश अवशेष मामले में खैरथल एसपी मनीष चौधरी के निर्देशन में किशनगढ़ बास अधिकारियों ने पुलिस टीम के साथ कार्यवाही कर 7 गो तस्करों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पकड़े गए गो तस्करों के पास से दो गाड़ियां भी जब्त की है। 2024 फरवरी माह में रूघ के जंगल में गोकशी का बड़ा मामला उजागर हुआ था।

थानाधिकारी जितेंद्र सिंह ने बताया कि 15 जनवरी को सूचना मिली कि पडासला के जंगल में चार-पांच गो वंश कटी पड़ी है। ब्रसंगपुर रुंध गिदावडा पहुंचे देखा तो मौके पर एक नाले में आधी दबी हुई गो वंश की चमड़ी नजर आई, जिसमें दुर्गंध आ रही थी। पशु चिकित्सा अधिकारी ललितेश कुमार शुक्ला ने निरीक्षण कर उक्त अवशेष गोवंश के होना बताया गया तथा करीब तीन-चार दिन पुराना होना बताया। मौके पर मिले मृत गोवंश के अवशेष जप्त कर कब्जा पुलिस लिया गया। पुलिस ने बिरसगपुर निवासी आरोपी मौसम पुत्र जोरमल, अनीश खान पुत्र कासम निवासी बाघोडा, तारुन खान पुत्र अब्दुल करीम निवासी मिर्जापुर, शौकीन पुत्र नबबी निवासी मिर्जापुर, कामिल पुत्र फजरू निवासी मिर्जापुर, खालिद उर्फ खली पुत्र अब्दुल करीम निवासी मिर्जापुर, सकी मोहम्मद उर्फ सकी पुत्र जोहरू निवासी बिरसगपुर को गिरफ्तार किया है।

साढ़े छह किलो गांजे के साथ दो गिरफ्तार

कपासन, (निसं)। कपासन थाना पुलिस ने अवैध मादक पदार्थ गांजा की तस्करी करने वाले दो आरोपियों गिरफ्तार उनके कब्जे से 6 किलो 580 ग्राम अवैध गांजा जब्त किया है। मामले में पुलिस ने एक स्कूटी जब्त की है। दोनों आरोपियों को दो दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

- एक स्कूटी जब्त, दो दिन के पुलिस रिमांड पर सौंपा

पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी ने बताया कि जिले में अवैध मादक पदार्थों की धरपकड़ कार्यवाही एवं वांछित अपराधियों की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में चलाये जा रहे अभियान के तहत एएसपी सरिता सिंह व डीएसपी कपासन हरजीलाल यादव के सुपरविजन में थानाधिकारी रतनसिंह पु.नि. के निर्देश पर थाने के चन्द्रप्रभात उ.नि., कानिं. जितेन्द्र, रामपाल, सहदेव, कैलाश व विष्णुगिरी द्वारा थाना क्षेत्र में गश्त की जा रही थी। इसी दौरान एक स्कूटी पर सवार दो व्यक्तियों को रुकवाकर चैक किया तो उनके पास एक प्लास्टिक के कटटे में 6 किलो 580 ग्राम अवैध गांजा मिला। उक्त अवैध गांजा व स्कूटी को जब्त कर आरोपी सदर चित्तौड़गढ़ थाने के प्रतापनगर निवासी 25 वर्षीय दीपक पुत्र केसुराम खटीक व कोतवाली चित्तौड़गढ़ थाने के पावटा चौक निवासी 24 वर्षीय पीयूष उर्फ प्रियांश कुमार पुत्र रतनलाल टेलर को गिरफ्तार किया।

गांजा तस्करी का वांछित आरोपी गिरफ्तार : कपासन पुलिस ने मादक पदार्थों की तस्करी के मामले में दो साल से फरार चल रहे एक वांटेड अपराधी को गिरफ्तार किया है। राजसमंद जिले के रेलमगरा थाना क्षेत्र के छोगाबा का खेड़ा निवासी रोशन बंजारा (45) गुजरात में छिपकर फरारी काट रहा था।

एसपी सुधीर जोशी के निर्देशन में जिले में मादक पदार्थों की तस्करी रोकने के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत एएसपी सरिता सिंह और डीएसपी हरजी लाल यादव के पर्यवेक्षण में एसएचओ रतन सिंह के नेतृत्व में टीम ने कार्रवाई की। पुलिस टीम में शामिल एएसआई तेजमल, कांस्टेबल महेंद्र सिंह और राजेश ने मुखबिर नेटवर्क के जरिए सूचना जुटाई। जानकारी मिली कि वांटेड अपराधी रोशन बंजारा अपने गांव आया हुआ है। पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए उसे धर दबोचा। पूछताछ में पता चला कि वह पिछले दो सालों से गुजरात में छिपकर रह रहा था। कपासन पुलिस ने मादक पदार्थों की तस्करी के मामले में दो साल से फरार चल रहे एक वांटेड अपराधी को गिरफ्तार किया है।

चिकित्सा विभाग ने जांच कमेटी गठित की

भीलवाड़ा, (नि.सं.)। एंबुलेंस का गेट अटकने से महिला की मौत मामले से संबंधित खबर के बाद चिकित्सा विभाग ने तुरन्त संज्ञान लेते हुए घटना की जांच के लिए एक कमेटी का गठन किया है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सीपी गोस्वामी ने बताया कि 20 जनवरी को प्रकाशित खबरों में बताया गया था कि प्रतापनगर क्षेत्र में एक घायल महिला को अस्पताल लाने के दौरान 108 एम्बुलेंस का तकनीकी समस्या के कारण लॉक जाम हो गया। इस कारण महिला को कांच तोड़कर बाहर निकालना पड़ा और मौत हो गई। इस पर विभाग ने तुरन्त संज्ञान लेकर इस घटना की जांच के लिए आदेश जारी कर चार सदस्यीय जांच समिति का गठन किया गया है।

जांच कमेटी में जिला प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संजीव कुमार शर्मा, सहायक लेखाधिकारी प्रेमप्रकाश भाम्बी, डीपीओ एनएचएम योगेश वैष्णव, यूनिट हेड अबरार को शामिल किया गया है। सीएमएचओ डॉ. गोस्वामी ने मामले की विस्तृत जांच कर अविलंब तथ्यात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश जांच कमेटी को दिए, ताकि इस घटना की वास्तविकता सामने आ सके और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोका जा सके।

नर्सिंग अधिकारियों के स्थानांतरण के बाद अस्पताल की व्यवस्था चरमराई

पाटन सीएचसी में महज एक नर्सिंग ऑफिसर होने से मरीज परेशान हो रहे हैं

पाटन, (निसं)। कस्बे में स्थित मूलचंद दीवान राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में नर्सिंग अधिकारियों के स्थानांतरण के बाद चिकित्सालय की व्यवस्था पूर्ण रूप से डगमगा गई है। फिलहाल एक नर्सिंग ऑफिसर के भरोसे हॉस्पिटल चल रहा है, जिसके चलते मरीजों को अव्यवस्थाओं का सामना करना पड़ रहा है।

जानकारी के अनुसार चिकित्सालय में मरीजों की लंबी लाइन देखने को मिली जिनको अपने इंजेक्शन लगवाने का इंतजार हो रहा था। सीएचसी में महज एक नर्सिंग ऑफिसर होने के कारण मरीजों को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। चिकित्सालय में आठ नर्सिंग अधिकारियों की सीट स्वीकृत थी, जिसमें दो नर्सिंग अधिकारियों की नियुक्ति नहीं होने से 6 नर्सिंग अधिकारी अपनी सेवाएं दे रहे थे। छह में से एक नर्सिंग अधिकारी फर्स्ट ग्रेड का होने से पांच नर्सिंगकर्मी 30 बेड के अस्पताल को संभाल रहे थे। हाल ही में हुए ट्रांसफर में दो नर्सिंग कर्मियों का स्थानांतरण हो जाने से अब चिकित्सालय में तीन नर्सिंग कर्मियों का स्टाफ बचा हुआ है, जिसमें भी अलग-अलग ड्यूटियां लगी होने से मात्र एक नर्सिंग अधिकारी अपनी सेवा दे रहा है। ऐसे में अगर इनमें से किसी नर्सिंग अधिकारी को छुट्टी की जरूरत पड़ गई तो मरीजों की देखरेख करने वाला कोई भी नर्सिंगकर्मी नहीं रहेगा। वर्तमान में अस्पताल में 500 से ऊपर का आउटडोर रहता है, ऐसे में अगर चिकित्सालय में शीघ्र नर्सिंग अधिकारियों की नियुक्ति नहीं हुई तो हॉस्पिटल में अव्यवस्थाओं का आलम बढ़ जाएगा। चिकित्सालय में एक नर्सिंगकर्मी होने के कारण कभी आईपीडी में तो कभी इमरजेंसी में तो कभी सामान्य वार्ड में आकर के इंजेक्शन लगाने पड़ रहे हैं।

पाटन के मूलचंद दीवान राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मरीजों को अव्यवस्थाओं का सामना करना पड़ रहा है।

- चिकित्सालय में शीघ्र नर्सिंग अधिकारियों की नियुक्ति नहीं हुई तो हॉस्पिटल में अव्यवस्थाओं का आलम बढ़ जाएगा

बल्लुपुरा सरपंच हवासिंह वर्मा ने बताया कि मुझे अस्पताल में आए हुए दो घंटे हो गए हैं परंतु एक नर्सिंगकर्मी होने से मेरे इंजेक्शन नहीं लग पा रहा है।

वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी प्रभारी डॉ. अमित यादव ने बताया कि अस्पताल में पांच कंपाउंडर थे जिनमें से दो कंपाउंडरों का हाल ही में ट्रांसफर हो गया जिस कारण दो-तीन दिन से अस्पताल में अव्यस्थाएं हो रही है। अगर सरकार यहां कंपाउंडरों को नहीं हटाती तो कोई दिक्कत नहीं थी। अब देखते हैं कोई और कंपाउंडर आएंगे तब ही व्यवस्थाएं सुचारू रूप से चल पाएगी।

भारतीय टी20 टीम में सिर्फ सलामी बल्लेबाजों का क्रम ही तय है जबकि बाकी सभी बल्लेबाजों को क्रम को लेकर लचीला रूख अपनाना होगा। भारतीय टीम बुधवार को ईडन गार्डंस पर पहला मैच खेलेगी।

-अक्षर पटेल

भारत के उपकप्तान अक्षर पटेल बल्लेबाजी क्रम को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

नीरज चौपड़ा

भारत के भाला फेंक के स्टार खिलाडी नीरज चोपड़ा ने दो दिन पहले सोनीपत की हिमानी मोर से विवाह किया। स्टार खिलाड़ी 27 वर्षीय नीरज ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर विवाह की घोषणा की।नीरज ने विवाह समारोह की तस्वीरों के साथ एक पोस्ट में लिखा, "मैंने अपने परिवार के साथ अपने जीवन का एक नया अध्याय शुरू किया। हर उस आशीर्वाद के लिए आभारी हूं जिसने हमें इस पल तक पहुंचाया। प्यार से बंधे, हमेशा खुश रहें।" हिमानी वर्तमान में अमेरिका में पढ़ाई कर रही हैं। "हां, विवाह दो दिन पहले भारत में हुआ। मैं यह नहीं बता सकता कि यह कहां हुआ।"

क्या आप जानते हैं? भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने आयरलैंड के खिलाफ435/5का स्कोर बनाकर वनडे में भारत का नया सर्वोच्च स्कोर दर्ज किया, जिसने पुरुष टीम का 418/5 (2011, वेस्टइंडीज के खिलाफ) का रिकॉर्ड तोड़ दिया।

ऑस्ट्रेलियन ओपन- वर्ल्ड नंबर-1 सिनर क्वार्टर फाइनल में पहुंचे: सिनर के सर्विस से नेट गिरा

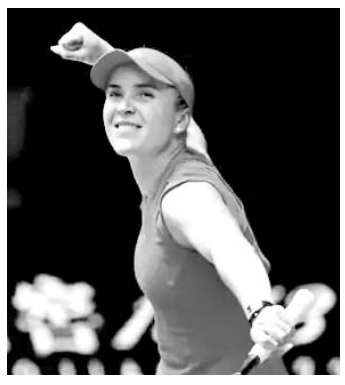

मेलबर्न, 20 जनवरी। दुनिया के नंबर-1 टेनिस खिलाड़ी जैनिक सिनर ऑस्ट्रेलियन ओपन में मेंस सिंगल्स के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए हैं। डिफेंडिंग चैंपियन इटली के सिनर ने डेनमार्क के होल्गर रूने को 6-3, 3-6, 6-3, 6-2 से हराया।

32 डिग्री सेल्सियस से अधिक टेम्परेचर में खेले गए इस मैच में अंपायर को मेडिकल टाइमआउट लेना पड़ा। बाद में सिनर की दमदार सर्विस से नेट गिर गया। जिससे खेल 20 मिनट रुका रहा।

सिनर को मेडिकल हेल्प लेनी पड़ी: रॉड लेवर एरिना में सोमवार को सिनर और 13वीं वरीयता प्राप्त रूने गर्मी से निपटने के लिये चेहरे पर ठंडा तौलिया को रखते दिखे। दोनों ने कई बार गर्दन पर पानी भी गिराया। तीसरे सेट में सिनर को 10 मिनट से ज्यादा लॉकर रूम में मेडिकल हेल्प लेनी पड़ी। सिनर का सामना अब आस्ट्रेलिया के आठवीं वरीयता प्राप्त एलेक्स डि मिनाउर या अमेरिका के गैर वरीय एलेक्स मिचेलसन से होगा।

लोरेंजो सोनेगो भी क्वार्टर फाइनल में : मेंस सिंगल्स में इटली के ही 55वीं रैंकिंग वाले लोरेंजो सोनेगो ने अमेरिकी लर्नर टीएन को 6-2, 6-3, 3-6, 6-1 से मात दी। अब उनका सामना अमेरिका के बेन शेल्टन से होगा। अन्य क्वार्टर फाइनल मुकाबलों में नोवाक जोकोविच की टक्कर कार्लोस अल्काराज और अलेक्जेंडर ज्वेरेव की भिडंत टॉमी पॉल से होगी।

विमेंस सिंगल्स में एलिना स्वितोलिना जीतीं : विमेंस वर्ग में यूक्रेन की 28वीं सीड एलिना स्वितोलिना ने 1-4 से पिछड़ने के बाद रूस की वेरोनिका कुदेरमेतोवा को 6-4, 6-1 से हराया। वह तीसरी बार आस्ट्रेलियाई ओपन क्वार्टर फाइनल में पहुंची हैं। स्वितोलिना का सामना अब 19वीं रैंकिंग वाली अमेरिका की मेडिसन कीस से होगा।

प्रधानमंत्री ने खो-खो विश्वकप जीतने पर भारतीय महिला टीम को दी बधाई

नई दिल्ली, 20 जनवरी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को खो-खो विश्वकप जीतने पर भारतीय महिला टीम को दी बधाई।मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, भारतीय महिला टीम को पहली बार खो-खो विश्व कप जीतने पर बधाई। यह ऐतिहासिक जीत उनके अद्वितीय कौशल, दृढ़ संकल्प और टीम वर्क का परिणाम है। इस जीत ने भारत के सबसे पुराने पारंपरिक खेलों में से एक को और अधिक सुर्खियों में ला दिया है, जिससे देश भर के अनगिनत युवा एथलीटों को प्रेरणा मिली है। उम्मीद है कि यह उपलब्धि आने वाले समय में और अधिक युवाओं के लिए इस खेल को अपनाने का मार्ग प्रशस्त करेगी। मोदी इस संदेश के साथ महिला विश्वकप जीतने वाली भारतीय खो-खो टीम की जश्न मनाते हुए तस्वीर भी साझा की। उल्लेखनीय है कि आज भारतीय महिला टीम ने फाइनल मुकाबले में बेहतरीन खेला का प्रदर्शन करते हुए नेपाल पर दबदबा बनाते हुए 78-40 के स्कोर के साथ खो-खो विश्वकप का खिताब जीता।

रोमांचक मुकाबले में नाइजीरिया ने न्यूजीलैंड की महिला टीम को दो रनों से हराया

कुचिंग (मलेशिया), 20 जनवरी। कप्तान लक्की पिटी (19),लिलियन उडेह (18) रन की पारियों के बाद गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के दम पर नाइजीरिया की महिला टीम ने सोमवार को वर्षा बाधित मैच में न्यूजीलैंड को हराकर महिला अंडर-19 टी-20 विश्वकप में अपनी पहली जीत दर्ज की। आज यहां न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया।

बल्लेबाजी करने उतरी नाइजीरिया की टीम ने कप्तान लक्की पिटी (19), लिलियन उडेह (18) रन की पारियों के योगदान से निर्धारित 30 ओवरों में छह विकेट पर 65 रन बनाये। नाइजीरिया के छह बल्लेबाजों का स्कोर दहाई आंकड़े के नीचे रहा। नाइजीरिया के 65 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड की शुरुआत सलामी बल्लेबाज केट इरविन की पहले ही गेंद पर रन आउट होने से हुई। इसके बाद दूसरी सलामी बल्लेबाज एम्मा मैकलियोड तीसरे ओवर में दाएं हाथ के तेज गेंदबाज यूसेन पीस की गेंद पर आउट होकर पवेलियन लौट गई।

न्यूजीलैंड ने बीच के ओवरों में लगातार विकेट गंवाए और 11 ओवर की समाप्ति पर उसका स्कोर पांच विकेट पर 49 रन था। न्यूजीलैंड के लिए अनिका टोड (19), वेकलिन (18) और ईव वोलैंड ने (14) रन बनाये। न्यूजीलैंड को आखिरी दो ओवरो में 17 रन की जरूरत थी। न्यूजीलैंड ने कप्तान टैश वेकलिन के चौके की मदद से 12वें ओवर में आठ रन बनाये।

न्यूजीलैंड को अंतिम ओवर में नौ रन चाहिए थे। नाइजीरिया की उडेह ने शानदार गेंदबाजी करते हुए न्यूजीलैंड को केवल छह रन बनाने दिये और दो रन से मुकाबला जीत लिया।

पटना ने जीती 50वीं गोल्डन जुबली राज्य सीनियर पुरुष कबड्डी चैंपियनशिप

बेगूसराय, 20 जनवरी। 50 वीं गोल्डन जुबली राज्यस्तरीय सीनियर पुरुष कबड्डी प्रतियोगिता का खिताब पटना ने जीत लिया है।

बेगूसराय के बीहट स्थित महात्मा गांधी उच्च विद्यालय में चल रही 50वीं गोल्डन जुबली राज्यस्तरीय सीनियर पुरुष कबड्डी चैंपियनशिप के फाइनल में पटना ने बेगूसराय को 50-30 से हराया। पटना की ओर से सागर ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन किया। इससे पहले सेमीफाइनल मैच में बेगूसराय ने लखीसराय को 33-26 और पटना ने बक्सर को 49-25 से पराजित कर फाइनल का टिकट पाया था।

खिलाड़ियों को मुख्य अतिथि बेगूसराय नगर निगम की महापौर पिंकी देवी, बिहार राज्य कबड्डी संघ के चेयरमैन कुमार विजय सिंह, जिला कला संस्कृति पदाधिकारी श्याम कुमार सहनी, बेगूसराय जिला कबड्डी संघ के प्रधान संरक्षक उपेन्द्र प्रसाद सिंह, पूर्व विधान पार्षद भूमिपाल राय, पूर्व महापौर संजय कुमार, सुगेन्द्र बाबु, सीओ बरौनी सुरजकान्त, सामहो अकहा कुरहा के सीओ नवीन कुमार, निओ कार्बन के प्रबंधक जितेंद्र कुमार, उपमुख्य पार्षद ऋषिकेश कुमार ने पुरस्कृत किया।

दिल्ली की टीम के पूर्व कप्तान ऋषि कपूर का निधन

नई दिल्ली 20 जनवरी। दिल्ली की फुटबॉल टीम के पूर्व कप्तान और बेहतरीन कोच ऋषि कपूर का लीवर संबंधी परेशानी के कारण सोमवार सुबह निधन हो गया।

दिल्ली ऑडिट में कार्यरत ऋषि ने राजधानी के विभिन्न क्लबों के लिए खेला और खूब नाम कमाने के बाद कोलकाता के मोहनबागान के नियमित खिलाड़ी बने।

सातवीं नेशनल ओपन ताइक्वांडो चैंपियनशिप में उत्तर प्रदेश ओवरऑल चैंपियन

लखनऊ, 20 जनवरी। मेजबान उत्तर प्रदेश ने सातवीं नेशनल ओपन ताइक्वांडो चैंपियनशिप -2025 में दमदार प्रदर्शन के साथ सर्वाधिक 59 स्वर्ण पदक के साथ अपना दबदबा बनाते हुए ओवरऑल चैंपियनशिप ट्रॉफी अपने नाम कर ली।

ताइक्वांडो फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वावधान में उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन द्वारा आयोजित इस चैंपियनशिप के अंतिम दिन सीआरपीएफ की टीम उपविजेता रही जबकि मध्य प्रदेश को तीसरे स्थान से संतोष करना पड़ा। मेजबान उत्तर प्रदेश ने 59 स्वर्ण, 62 रजत व 109 कांस्य पदक सहित कुल 230 पदक के साथ पहला स्थान हासिल किया।

एलएसजी ने पंत को बनाया टीम का कप्तान

कोलकाता 20 जनवरी। लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) ने सोमवार को भारतीय टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत को टीम का कप्तान नियुक्त किया।

एलएसजी ने आज कोलकाता में ऋषभ पंत को टीम का कप्तान बनाये जाने की घोषणा की। यह दूसरी बार है जब पंत इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की किसी टीम की कमान संभालेंगे। पंत इससे पहले 2021, 2022 और 2024 सत्र में दिल्ली कैपिटल्स(डीसी) के कप्तान रह चुके है।

इस अवसर पर पंत ने कहा, मैं विशेष रूप से संजीव गोयनका सर (टीम मालिक) और पूरे प्रबंधन का धन्यवाद करना चाहता हूं। मैं अपना 200 प्रतिशत दूंगा। उन्होंने मुझ पर जो भरोसा दिखाया है, मैं उस पर खरा उतरने का पूरा प्रयास करूंगा। यह एक नई शुरुआत है। उम्मीद है कि हम नए सत्र में बेहतरीन प्रदर्शन करेंगे।

उन्होंने कहा, मैं अपनी इस नई टीम से बेहद खुश हूं। हमारी टीम में युवा और सीनियर खिलाड़ियों का अच्छा संतुलन है। अब हमें यह

सोचना है कि इस फ्रैंचाइजी को कैसे नई ऊंचाइयों पर पहुंचाई जाए। मुझे पता है कि यह एक नई शुरुआत है, नई फ्रैंचाइज है।

हालांकि मैं जिस तरह की कप्तानी करता हूं या क्रिकेट खेलता हूं, उसमें ज्यादा कुछ नहीं बदलेगा। हां, यह जरूर है कि उसमें काफी कुछ जुड़ेंगे। टीम की जो भी रणनीति होगी, उसके हिसाब से आगे बढ़ा जाएगा। उल्लेखनीय है कि एलएसजी ने पिछले वर्ष नवंबर की नीलमी में पंत को 27 करोड़ रूपये में खरीदा था। वह इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के सबसे महंगे खिलाड़ी है।

वीमेन अंडर23 टी20 ट्रॉफी में राजस्थान- मुंबई सेमीफाइनल मैच (मुंबई जीती)

जयपुर 20 जनवरी। त्रिवेंद्रम में खेली जा रही बीसीसीआई की वीमेन अंडर 23 टी20 ट्रॉफी में आज राजस्थान – मुंबई के मध्य खेले गए सेमीफाइनल मैच में मुंबई जीती मुंबई पारी 108 / 8

टीम के लिए माही ठक्कर नाबाद 44 रनो का योगदान दिया।

राजस्थान की गेंदबाज यशस्वी कट्टा 21/2, शानू 27/2, कौशल्या चौधरी 10/1, उषा परेरिया 12 /1 विकेट प्राप्त किये।राजस्थान पारी 78 / 7, लक्ष्य का पीछा करते हुए राजस्थान टीम निर्धारित 20 ओवर में 7 विकेट के नुकसान पर 78 रन ही बना सकीय। टीम के लिए ज्योति चौधरी 29 व आयुषी गर्ग 17 रन का योगदान दिया।

ऑस्ट्रेलियाई महिला टीम ने इंग्लैंड को 57 रनों से हराया

सिडनी 20 जनवरी। बेथ मूनी (75) रनों की अर्धशतकीय पारी के बाद जॉर्जिया वेयरहैम (तीन विकेट) और अलाना किंग (दो विकेट) के शानदार प्रदर्शन की बदौलत ऑस्ट्रेलिया की महिला टीम ने सोमवार को पहले टी-20 मुकाबले में इंग्लैंड को 57 रनों से हरा दिया हैं।

इसी के साथ ऑस्ट्रेलिया ने तीन मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली हैं। 199 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंग्लैंड की शुरुआत बेहद खराब रही और उसने मात्र चार रन के स्कोर पर अपने दोनों सलामी बल्लेबाजों के विकेट गवां दिये। मैया बाउचियर और डेनिएल वायट बिना खाता खोले ही पवेलियन लौट गई। इसके बाद सोफिया डंकली ने नेट साइबर ब्रंट के साथ पारी को संभालने का प्रयास किया।

ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजी आक्रमण के आगे इंग्लैंड के बल्लेबाज अधिक देर तक नहीं टिक सके। नेट साइबर ब्रंट (20) को अलाना किंग ने बोल्ड आउट किया। कप्तान हीथर नाइट (18), एमी जोंस (12), सोफी एकल्सटन (13) रन बनाकर आउट हुई। सोफिया डंकली ने इंग्लैंड के लिए 30 गेंदों में छह चौके और चार छक्के लगाते हुए (59) रनों की पारी खेली।

ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों ने इंग्लैंड की पूरी टीम को 16 ओवर में 141 के स्कोर पर समेट कर 57 रनों से मुकाबला जीत लिया। 75 रनों की अर्धशतकीय पारी खेलने वाली ऑस्ट्रेलिया की बल्लेबाज बेथ मूनी को 'प्लेयर ऑफ द मैच' से नवाजा गया।

ऑस्ट्रेलिया की ओर से जॉर्जिया वेयरहैम ने तीन विकेट और अलाना किंग ने दो विकेट लिये। मेगन शूट, किम गार्थ, ऐनाबेल सदरलैंड और तालिया मैक्ठाा ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले आज यहां इंग्लैंड की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया।

बल्लेबाजी करने उतरी ऑस्ट्रेलिया के लिये बेथ मूनी और जॉर्जिया वेयरहैम की सलामी जोड़ी ने पहले विकेट के लिए (40) रन जोड़े। चौथे ओवर में लॉरेन बेल ने जॉर्जिया वेयरहैम (21) को पगबाधा आउट कर इंग्लैंड को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद फीबी लिचफील्ड (25) रन आउट हुई। एलिस पेरी (सात), ऐनाबेल सदरलैंड (तीन) रन बनाकर आउट हुई।

कप्तान तालिया मैक्ठाा ने नौ गेंदों में 26 रनों की पारी खेली। ठोस हैरिस (14) रन बनाकर आउट हुई। बेथ मूनी ने 51 गेंदों में 11 चौकों की मदद से (75) रन बनाये। ऑस्ट्रेलिया की टीम ने निर्धारित 20 ओवरों में सात विकेट पर 198 का स्कोर खड़ा किया। इंग्लैंड की ओर से लॉरेन बेल और सोफी एकल्सटन ने दो-दो विकेट लिये। फ्रेया केंप और शार्लेट डीन ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

राजस्थान यूनाइटेड एफसी और डेम्पो एससी के बीच रोमांचक मुकाबला, 1-1 की बराबरी पर समाप्त

जयपुर, 20 जनवरी। आई-लीग के एक रोमांचक मुकाबले में राजस्थान यूनाइटेड एफसी और डेम्पो स्पोर्टिंग क्लब ने विद्याधर नगर स्टेडियम में खेले गए मैच में 1-1 से बराबरी की। यह मुकाबला दोनों टीमों के शानदार खेल और संघर्ष का उदाहरण बना, जिसने अंतिम सीटी तक दर्शकों को बांधे रखा।

राजस्थान यूनाइटेड एफसी ने 30वें मिनट में शानदार शुरुआत की, जब स्पेनिश फॉरवर्ड जेरार्ड आर्टिगास ने एक शानदार गोल कर टीम को बढ़त दिलाई। यह गोल मिडफील्डर एलन की परफेक्ट असिस्ट से आया, जिसने डेम्पो की डिफेंस को चीरते हुए आर्टिगास के लिए बेहतरीन मौका बनाया। इस गोल ने घरेलू दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया और राजस्थान यूनाइटेड ने पहले हाफ का अंत 1-0 की बढ़त के साथ किया।

हालांकि, राजस्थान यूनाइटेड के पास अपनी बढ़त को दोगुना करने का मौका था, जब एलन ने पेनल्टी स्पॉट से गोल करने की कोशिश की। लेकिन डेम्पो एससी के गोलकीपर ने एक शानदार सेव कर इस मौके को नाकाम कर दिया और अपनी टीम को मैच में बनाए रखा।

दूसरे हाफ में राजस्थान यूनाइटेड ने आक्रामक शुरुआत की और लगातार अटैक किया। लेकिन डेम्पो एससी ने 77वें मिनट में मैच में वापसी की और बराबरी का गोल दागा। यह गोल डेम्पो के बेहतरीन तालमेल और सूझबूझ का नतीजा था, जिसने स्कोरलाइन को 1-1 कर दिया।

अंतिम समय में दोनों टीमों ने जीत के लिए भरपूर कोशिश की। राजस्थान यूनाइटेड ने अंतिम पलों में कई मौके बनाए, लेकिन डेम्पो की डिफेंस ने मजबूती से उनका सामना किया। दोनों टीमों की आक्रामकता और संघर्ष के बावजूद, निर्णायक गोल नहीं हो सका। अंत में मैच का नतीजा 1-1 की बराबरी पर समाप्त हुआ, जहां दोनों टीमों ने अंक साझा किए।

जयपुर पोलो सीजन 2025, राजमाता गायत्री देवी मेमोरियल कप (06 गोल) में आज तीन मैच खेले जाएंगे

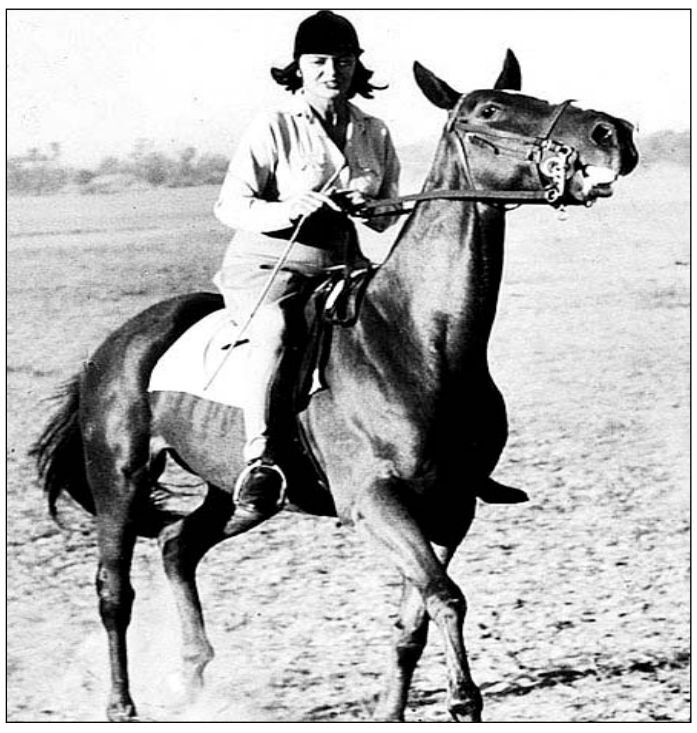

जयपुर, 20 जनवरी। जयपुर पोलो सीजन 2025, राजमाता गायत्री देवी मेमोरियल कप (06 गोल), 20 से 26 जनवरी तक रामबाग पोलो ग्राउंड आवर कैवेलरी ग्राउंड पर खेला जाएगा। इंटरनेशनल खिलाड़ियों ओर भारत के बेहतरीन खिलाड़ियों के आपसी खेल का तालमेल देखने को मिलेगा।

मंगलवार को तीन मैच खेले जाएंगे। कैवेलरी ग्राउण्ड पर दो मैच खेले जाएंगे जिनमे पहला मैच सूजैन इंडियन टाईगर्स बनाम जयपुर के बीच ओर दूसरा मैच आर्मी रेड बनाम चांदना मेफेयर के बीच खेला जाएगा। वहीं तीसरा मैच बेंगलोर ग्रेज/कृष्णा पोलो बनाम रामबाग पोलो टीम के बीच रामबाग पोलो ग्राउंड पर खेला जाएगा।

राजमाता गायत्री देवी मेमोरियल कप (06 गोल), की छह टीमों को तीन पूलों में बांटा गया है। जोकि निम्न प्रकार है।

पूल - ए : बैंगलोर ग्रेज़/कृष्णा पोलो-अनिरुद्ध मावाजी +0, अश्विनी शर्मा +0, नवीन सिंह +2, डैनियल ओटामेंडी +4

रामबाग पोलो- सिद्धांत सिंह +0, सलीम आज़मी +1, ध्रुवपाल गोदारा +2, शमशीर अली +3

अरावली पोलो- देविन्दर सिंह-1, डीनो धनखड़ +0, मैनुअल एफ लोरेंटे +6, जयवीर सिंह गोहिल +1

पूल-बी सुजान इंडियन टाइगर्स- सरदार जैसल सिंह +0, कुलदीप सिंह राठौड़ +2, भवानी सिंह कालवी +2, अंगद कलां +2

जयपुर- देवव्रत सिंह झालामंड -2, राव हिम्मत सिंह बेदला +1, लांस वाटसन +4, महाराजा सवाई पद्मनाभ +3

वी पोलो- विवान मेहता -2, मुकेश सिंह +0, हुर्र अली +2, गोंज़ालो यानज़ोन +4

पूल-सी : आर्मी रेड - मुकेश गुर्जर +0, रविंदर मांग +1, मेजर मृत्युंजय सिंह चौहान +0, लेफ्टिनेंट कर्नल विशाल चौहान +1, **चांदना/मेफेयर-** अनय शाह +0, अशोक चांदना +0, सिद्धांत शर्मा +3, सिमरन शेरगिल +3, **डेल्टा पोलो-** विश्वरूप बजाज +0, अक्षय मलिक +0, अभिमन्यु पाठक +3, जुआनकल मराम्बियो +3।

डा. आशुतोष बने सॉफ्ट हॉकी फेडरेशन के अध्यक्ष, रमेश सिंह सचिव

जयपुर, 20 जनवरी। एमेच्योर साफ्ट हॉकी फेडरेशन ऑफ इंडिया के रविवार को यहां संपन्न चुनावों में इंडियन आयल कार्पोरेशन के पूर्व स्वतंत्र निदेशक (सीएसआर) डा. आशुतोष पंत को नया अध्यक्ष चुना गया, जबकि महाराणा प्रताप और वशिष्ठ अवार्ड से सम्मानित रमेश सिंह एक बार फिर सचिव पद पर निर्वाचित हुए। केके प्रधान को कोषाध्यक्ष बनाया गया है। चुनाव अधिकारी तेजवीर सिंह के कार्यकारिणी के सभी पदों पर निर्विरोध निर्वाचन की घोषणा की। इस अवसर पर राजस्थान सरकार के कैबिनेट मंत्री अविनाश गहलोत भी मौजूद थे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े डॉक्टर पंत भाजपा के प्रबुद्ध जन प्रकोष्ठ, श्रेष्ठ भारत अभियान अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान और राजस्थान विज्ञान समिति समेत कई राष्ट्रीय राज्य स्तरीय संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। डॉ. आशुतोष पंत ने अध्यक्ष पद पर चुने जाने के बाद मीडिया से बातचीत में कहा कि जयपुर में संपन्न पहली राष्ट्रीय साफ्ट हॉकी लीग को मिली सफलता और लोकप्रियता के बाद इस बार नेशनल लीग का आयोजन एक साथ तीन शहरों जयपुर, ग्वालियर और पणजी (गोवा) में कराने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने बताया कि जल्दी ही जयपुर में रैफरी सेमिनार का आयोजन किया जाएगा और साफ्ट हॉकी खेल को ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स और स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया में शामिल कराने के लिए प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि साफ्ट हॉकी की पहली एशियन चैंपियनशिप का आयोजन भी जल्दी ही किया जाएगा। इसके लिए भारत के साथ थाईलैंड और मलेशिया अन्य संभावित आयोजन स्थल हैं।

विधानसभाध्यक्ष देवनानी सीने में दर्द की शिकायत के बाद पटना से जयपुर लौटे

- सोमवार देर शाम उन्हें सवाई मानसिंह अस्पताल की मेडिकल आई.सी.यू. में भर्ती किया गया, जहां विशेषज्ञ चिकित्सकों की देखरेख में उनका चैकअप किया जा रहा है।

वासुदेव देवनानी

जयपुर/अजमेर, 20 जनवरी (का.सं)। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की सोमवार को बिहार के पटना में अचानक तबीयत बिगड़ गई। उन्हें विशेष विमान से जयपुर लाकर देर शाम सवाई मानसिंह अस्पताल की मेडिकल आईसीयू में भर्ती कराया गया है, जहां विशेषज्ञ चिकित्सकों की देखरेख में उनका चैकअप किया जा रहा है। प्रोटोकॉल के अनुसार, देवनानी के इलाज के लिए पांच डॉक्टरों का मेडिकल बोर्ड बनाया गया है। यह बोर्ड लगातार राज्य सरकार को उनके स्वास्थ्य के बारे में अपडेट देता रहेगा।

गौरतलब है कि दो दिवसीय अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों की बैठक में भाग लेने के लिए वासुदेव देवनानी, राजस्थान विधानसभा के विशेष सचिव भारत भूषण शर्मा के साथ, रविवार को बिहार राज्य के पटना पहुंचे थे। सोमवार को पटना में आयोजित अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन के शुभारंभ के बाद, फोटोग्राफी सैशन के दौरान अचानक देवनानी की तबियत बिगड़ गई। उन्हें सीने में तेज दर्द की शिकायत के बाद, पी.एम.सी.एच. के इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियोलॉजी में भर्ती किया गया था। यहां उनकी हार्ट से जुड़ी जांचें की गईं। बताया जा रहा है कि डॉक्टर्स ने एंजियोग्राफी की सलाह दी थी, परंतु देवनानी ने पिछले साल ही एंजियोग्राफी करवाई थी, इसलिए उन्होंने एंजियोग्राफी से मना कर दिया।

आई.जी.आई.सी. के डॉक्टर्स के अनुसार, अस्पताल में ईसीजी, ट्रॉप-टी, इको, सिटी स्कैन की जांच नॉर्मल आई, ऐसे में हाइपर एसिडिटी का दर्द माना जा रहा है। देवनानी की जांच रिपोर्ट सामान्य आने के बाद, डॉक्टर्स ने राहत की सांस ली और इसकी सूचना तुरंत राजस्थान सरकार को भी दी गई। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने भी पटना के अस्पताल पहुंचकर देवनानी की कुशलक्षेम पूछी।

यहां तबियत सामान्य होने और हालत ठीक होने के बाद, वासुदेव देवनानी अपना कार्यक्रम बीच में छोड़कर सोमवार शाम को विशेष विमान से रवाना होकर जयपुर पहुंच गए। उन्हें जयपुर लाने के लिए मुख्यमंत्री की पहल पर यहां से विशेष विमान भेजा गया था, जिसमें सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य और सीनियर कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. दीपक माहेश्वरी के साथ, एसएमएस हॉस्पिटल के अतिरिक्त अधीक्षक डॉ. गिरधर गोयल और चिकित्सकों की टीम को भेजा गया था। सवाई मानसिंह अस्पताल के प्रिंसिपल और सीनियर कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. दीपक माहेश्वरी ने बताया कि अस्पताल के वरिष्ठ डॉक्टर्स की टीम देवनानी का इलाज कर रही है। उन्हें एसिडिटी की समस्या हुई थी, लेकिन एहतियात के तौर पर, उनकी सम्पूर्ण जांच की जा रही है। डॉक्टर्स ने उन्हें कुछ दिन आराम करने की सलाह भी दी है।

कल्हाडी घाट फोरेस्ट में दो नक्सली मारे गये

गरियाबंद, 20 जनवरी। छत्तीसगढ़-ओडिशा सीमा के पास कुल्हाड़ी घाट रिजर्व फॉरेस्ट में सोमवार की सुबह सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ में दो नक्सली मारे गये, जबकि एक जवान घायल हो गया। मुठभेड़ के दौरान, कोबरा बटालियन का एक जवान घायल हुआ है, जिसे हेलीकॉप्टर के जरिए रेस्क्यू कर लिया गया। घटनास्थल पर चलाए गए सर्च ऑपरेशन में भारी मात्रा में हथियार भी बरामद किए गए हैं।

गरियाबंद जिले के मैनपुर थाना क्षेत्र के इस इलाके में सुबह से ओडिशा और छत्तीसगढ़ के जवानों द्वारा संयुक्त सर्चिंग ऑपरेशन चलाया जा रहा है। मुठभेड़ में दो नक्सलियों के मारे जाने की खबर है। घायल जवान को एयरलिफ्ट कर रायपुर ले जाया गया। शुरुआती जानकारी के मुताबिक, इलाके की स्थिति को देखते हुए भाटीगढ़ स्टेडियम को छावनी में तब्दील कर दिया गया है। पुलिस के बड़े अधिकारी भी मैनपुर पहुंच चुके हैं। सुरक्षा बलों के संयुक्त ऑपरेशन के दौरान जंगल में नक्सलियों को घेरने की कोशिश की गयी।

'राजस्थान में सरकार के विधायकों की सुनवाई नहीं हो रही'

कांग्रेस महासचिव सचिन पायलट ने पत्रकारों से कहा कि राजस्थान के साथ उनका संबंध और रिश्ता अटूट है

- पायलट ने राजसमन्द यात्रा के बाद कहा कि राज्य सरकार के स्कूल बंद करने और जिले खत्म करने के निर्णय नकारात्मक हैं।

उदयपुर में डबोक स्थित महाराणा प्रताप एयरपोर्ट पर पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट का समर्थकों ने जोरदार स्वागत किया।

उदयपुर, 20 जनवरी (का.स.)। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव एवं राजस्थान के पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट ने सोमवार को राजसमन्द के एक दिवसीय प्रवास पर डबोक स्थित महाराणा प्रताप एयरपोर्ट पर, पत्रकारों के साथ मुलाक़ात में सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि राजस्थान सरकार ने स्कूलों को बंद करने और जिले खत्म करने के जो फैसले लिए हैं, वे सब नकारात्मक निर्णय हैं। प्रदेश में अफसरशाही बहुत हावी है। सरकार में बहुत पावर सेक्टर बन गए हैं, सत्ता दल के जो विधायक है, वे भी दर-दर भटक रहे हैं। सरकार की जवाबदेही तय हो, इसके लिए हम विधानसभा में अपनी बात रखेंगे।

उन्होंने कहा कि सरकार को पारदर्शिता के साथ अपनी बात रखनी चाहिए। सदन में हर विषय पर चर्चा हो, सरकार अपने जवाब दे, हम हमेशा सदन चलाने के पक्ष में हैं। पायलट ने कहा कि अलग-अलग नेताओं को पार्टी जिम्मेदारी देती है। मुझे छत्तीसगढ़ की जिम्मेदारी दे रखी है, लेकिन राजस्थान के साथ मेरा संबंध और रिश्ता अटूट है। यहां के कार्यकर्ताओं और जनता के प्रति हमारे दिल में जो जगह है, उसे कोई कम नहीं कर सकता। आज हम विपक्ष में हैं लेकिन कार्यकर्ताओं को जहां जरूरत है, वहां हम जाते हैं। एक परिवार के रूप में हम काम कर रहे है, यही हमारी ताकत है। राजस्थान से चुनकर गया हूं। यहां सत्ता और विपक्ष में रहकर काम करने का मौका मिला है। यहां के लोग, जनता, कार्यकर्ता और यहां की मिट्टी के साथ मेरा जो संबंध है, वही मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

दिल्ली चुनाव को लेकर पायलट ने कहा, दिल्ली में चुनाव होने वाले हैं, जो सरकार है, उसको दिल्ली की जनता ने कई बार मौके दिए हैं। पिछले 10 से 12 सालों से केन्द्र और राज्य सरकार के वर्चस्व की लड़ाई में दिल्ली के लोग पिस रहे हैं। इसमें कांग्रेस पार्टी बेहतर विकल्प बनकर सामने आई है। दिल्ली में शीला दीक्षित की कांग्रेस सरकार थी, तब जो विकास हुआ, उसको जनता आज याद कर रही है।

पायलट बोले कि शीशमहल और राजमहल में कितना रुपया खर्च हुआ, इन चर्चाओं से हटकर कांग्रेस ने मजबूत ब्लू प्रिंट तैयार किया है। कांग्रेस मजबूती से लड़ेगी और परिणाम अच्छे आएंगे और कांग्रेस का परफॉरमैंस बेहतर रहेगा। इंडिया गठबंधन पर पूछे एक सवाल पर पायलट ने कहा, यह पहले भी मजबूत था और आज भी मजबूत है। देश में भाजपा को चुनौती देने के लिए नेशनल लेवल पर कोई दल है तो कांग्रेस पार्टी है।

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर हमले पर सचिन ने कहा कि हिंसा का राजनीति में कोई स्थान नहीं होना चाहिए, लेकिन जनता जवाब मांग रही है। जिनको केन्द्र और दिल्ली में सत्ता दी, वही भाजपा और आप पार्टी आरोप-प्रत्यारोप में फंस गई हैं। ट्रम्प के अमेरिका के राष्ट्रपति बनने पर पायलट ने कहा कि भारत और अमेरिका दोनों देशों के संबंध मजबूत रहेंगे और संबंध पहले से और बेहतर होंगे। इस दौरान कांग्रेस नेता रघुवीर सिंह मीणा भी मौजूद रहे।

एयरपोर्ट पहुंचने पर पायलट का मेवाड़ी पगड़ी, सूत की माला, तिरंगा ऊपरना पहना कर स्वागत किया गया। इस दौरान, विभिन्न मंडलों के अध्यक्ष, एनएसयूआई, यूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने गर्मजोशी से उनका स्वागत किया।

'राजस्थान सरकार टैक्स...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

2024 में जीएसडीपी की वृद्धि दर 12.56 प्रतिशत दर्ज की गई है। उन्होंने कहा कि राज्य के पूंजीगत व्यय को भी 65.94 प्रतिशत बढ़ाया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना-2024 लाई गई है, जिससे प्रदेश के संतुलित एवं समावेशी विकास और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा मिलेगा। शर्मा ने कहा कि सरकार कृषि एवं कृषकों के सम्पूर्ण विकास के लिये प्रतिबद्ध है। सरकार द्वारा 66 लाख किसानों को किसान सम्मान निधि की अतिरिक्त किश्त 650 करोड़ रूपये की राशि सीधे बैंक खातों में स्थानान्तरित की गई।

शर्मा ने कहा कि कर केवल राजस्व संग्रह का माध्यम नहीं है, बल्कि यह प्रदेश के विकास का आधार है। कर से होने वाली आय का उपयोग अधिकतम जनकल्याणकारी कार्यों में हो, इसी सिद्धान्त को आत्मसात कर राज्य सरकार कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि करों के माध्यम से अर्जित राजस्व को शिक्षा, स्वास्थ्य, बुनियादी ढांचे और सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों में व्यय कर, विकास का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है।

इस अवसर पर, उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी, उद्योग मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड, उद्योग राज्य मंत्री के के विश्नोई, अतिरिक्त मुख्य सचिव ऊर्जा आलोक, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) शिखर अग्रवाल, प्रमुख शासन सचिव उद्योग अजिताभ शर्मा, प्रमुख शासन सचिव राजस्व दिनेश कुमार, प्रमुख शासन सचिव स्वायत्त शासन विभाग राजेश यादव एवं प्रमुख शासन सचिव नगरीय विकास वैभव गालरिया सहित, अन्य संबंधित अधिकारीगण मौजूद थे।

ट्रेनी डॉक्टर रेप मर्डर केस...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाता रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि हत्या और बलात्कार से संबंधित लगभग सभी साक्ष्यों को हत्या के बाद के दिनों में, अधिकारिक संरक्षण में मिटा दिया गया।

आज भी, आरोपी संजय रॉय ने अदालत में रोते हुए कहा कि उसे फंसाया जा रहा है और जूनियर डॉक्टर की हत्या व रेप में उसका हाथ नहीं था।

राज्य के डॉक्टर उत्तेजित हैं, उनका कहना है कि यह असली आरोपियों को छुपाने का प्रयास है। आमतौर पर माना जाता है कि प्रारंभिक रिपोर्ट और यहाँ तक कि आंशिक पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मृत डॉक्टर पर व्यापक हमले और शरीर पर भयानक चोटों के संकेत मिले हैं, जो यह संकेत देते हैं कि यह एक अकेले व्यक्ति का काम नहीं था।

अभी से लोगों के छोटे-छोटे ग्रुप इकट्ठे होने शुरु हो गए हैं, न्यायिक व जांच प्रक्रिया को लेकर अपना विरोध प्रकट करने के लिए। आम आदमी का मानना है कि यह फैसला असली आरोपियों का खुलासा नहीं कर रहा है।

जूनियर डॉक्टर के परिवार ने भी फैसले पर असंतोष व्यक्त करते हुए कहा कि इसमें अनगिनत खामियाँ थीं तथा राज्य प्रशासन ने उन्हें मामले पर दूर रखा तथा मामले से निपटने में उनकी भावनाओं का आदर नहीं किया।

जूनियर डॉक्टर के परिवार वालों ने बार-बार कहा कि उनके भारी विरोध के बावजूद आनन-फानन में शव का दाहसंस्कार कर दिया गया तथा उन्हें उनकी बेटी के शव के पास नहीं जाने की अनुमति नहीं दी तथा शव को पुलिस संरक्षण में अस्पताल से जल्दबाजी में ले जाया गया।

कई राजनैतिक नेताओं और विपक्षी दलों ने राज्य सरकार पर मामले में लीपापोती करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा हैरानी की बात है कि एक भीड़ हत्या के बाद हॉस्पिटल में घुसी और घटनास्थल पर तोड़फोड़ मचा दी, यहां तक बाथरुम, जहां संभवतया आरोपियों ने हाथ धोए होंगे, को तोड़ दिया गया।

राज्य पुलिस का आचरण भी बेहद ढुलमुल था वह ना तो सबूत बचा पाई और ना ही निष्पक्ष जांच कर पाई। स्थानीय पुलिस थाने के प्रभारी को भी सी.बी.आई. ने गिरफ्तार किया है।

अपना केस लड़ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सी.पी.ए. (फॉरेन करप्ट प्रैक्टिसेज़ एक्ट) के उल्लंघन के आरोप नहीं हैं, लेकिन यह जटिल केस अमेरिका की अदालत में चल रहा है।

गत 21 नवम्बर को, यू.एस. अधिकारियों ने गौतम अडानी तथा दो अन्य पर आरोप लगाया था कि उन्होंने सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (एस.ई.सी.आई.) से सोलर एनर्जी अनुबंध हासिल करने के लिए भारत के सरकारी अधिकारियों को लगभग 250 मिलियन डॉलर की रिश्वत दी।

गौतम अडानी, सागर अडानी तथा अन्य अधिकारियों के खिलाफ यू.एस. सिक्यूरिटीज़ एण्ड एक्सचेंजन कमीशन और न्यूयॉर्क के ईस्टर्न डिस्ट्रिक्ट द्वारा दायर केस अमेरिका की एकल जज अदालत को सौंपा गया है।

'सारी तैयारी ....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का कहना है कि भारत एक देश है तो कानून भी एक ही होना चाहिए। गुजरात ने भी 2022 में यू सी सी के क्रियान्वयन के लिए एक कमेटी बनाई थी। केन्द्रीय मंत्री पुरुषोत्तम रुपाला ने कहा था कि यू सी सी संविधान में प्रदत्त नागरिकों के मूल अधिकार नहीं छीनेगा। महाराष्ट्र, हरियाणा और गोवा भी यू सी सी के पक्ष में कदम उठा रहे हैं। कांग्रेस, वामपंथी दल, सपा, राजद आदि दल यू सी सी का विरोध कर रहे हैं। भाजपा, तेलुगूदेशम, शिवसेना व आप इसके पक्ष में हैं।

'फागी रोड पर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में मुहाना मोड से रिंग रोड तक की करीब सात किलोमीटर रोड को 200 फीट चौड़ी दर्शाया गया है। जेडीए की ओर से यहां सडक़ निर्माण के लिए कुछ जमीन को अवाप्त भी किया जा चुका है। वहीं, कई जगहों पर प्रभावशाली लोगों ने अतिक्रमण कर रखे हैं, लेकिन जेडीए ने उन पर अब तक कोई कार्रवाई नहीं की। याचिकाकर्ता की ओर से अदालत को बताया गया कि जेडीए की कार्रवाई को लेकर कुछ काश्तकारों ने स्टे ले रखा है, लेकिन उन काश्तकारों ने 200 फीट सडक़ निर्माण पर आपत्ति नहीं होने की अंडरटेकिंग दे रखी है। सुनवाई के दौरान, अदालती आदेश की पालना में जेडीए की ओर से तथ्यात्मक रिपोर्ट पेश की गई, जिसमें कहा गया कि करीब चार दर्जन खसरों पर स्टे लिया गया है और कई खसरों पर लोगों ने अतिक्रमण कर रखा है। इस पर अदालत ने कहा कि जब जेडीए स्वयं की अतिक्रमण होने की बात मान रहा है तो फिर उन पर कार्रवाई क्यों नहीं की गई। ऐसा कर क्या जेडीए स्वयं अतिक्रमण को बढावा देना चाहती है। इसके साथ ही, अदालत ने जेडीए सचिव को पेश होकर इस संबंध में अपना स्पष्टीकरण देने को कहा है।

किसानों का दिल्ली कूच 26 जनवरी तक स्थगित

- किसान मजदूर मोर्चा ने 14 फरवरी की केन्द्र सरकार की बैठक को पहले करने की मांग की।
- किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल से भी अपना अनिश्चितकालीन अनशन समाप्त करने की अपील की।

चंड़ीगढ़ , 20 जनवरी। किसान मजदूर मोर्चा ने केंद्र सरकार से प्रदर्शनकारी किसानों के साथ 14 फरवरी को प्रस्तावित बैठक जल्द आयोजित करने का सोमवार को आग्रह किया। साथ ही किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल से भी अपना अनिश्चितकालीन अनशन समाप्त करने की अपील की। किसान मजदूर मोर्चा ने 101 किसानों के समूह के 21 जनवरी (मंगलवार) को दिल्ली कूच करने के कार्यक्रम को भी 26 जनवरी तक स्थगित करने की घोषणा की है।

यह संगठन संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) के साथ मिलकर पिछले 11 महीनों से खनौरी और शंभू बॉर्डर पर जारी किसानों के विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहा है। शनिवार को कृषि मंत्रालय में संयुक्त सचिव प्रिय रंजन के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय केंद्रीय प्रतिनिधिमंडल ने खनौरी सीमा स्थल पर डल्लेवाल और एसकेएम (गैर-राजनीतिक) एवं केएमएम के प्रतिनिधियों से मुलाकात की। उन्हें 14 फरवरी को चंडीगढ़ में बातचीत फिर से शुरू करने के लिए आमंत्रित किया।

सोमवार को शंभू धरना स्थल पर मीडिया को संबोधित करते हुए केएमएम नेता सरवन सिंह पंढेर ने कहा कि किसानों के साथ बैठक के लिए जो तारीख (14 फरवरी) तय की गई है, उसमें काफी समय है। पंढेर ने कहा, 'सरकार ने बैठक आयोजित करने में बहुत समय लगा दिया। यह हमारी शर्त नहीं है, लेकिन हमारी मांग है कि बैठक जल्द हो और यह दिल्ली में हो।'

हाईकोर्ट के...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

खारिज कर दी है, लेकिन फिर भी हाईकोर्ट प्रशासन ने आदेश की पालना नहीं की है।

अवमानना याचिका में कहा कि हाईकोर्ट ने 14 फरवरी 2024 को एडीजे भर्ती की परीक्षा सेल को योग्य विधिवेत्ताओं व प्रोफेसरों की कमेटी बनाने का निर्देश दिया था। वहीं, कमेटी को कहा था कि वह हर पेपर की बीस कॉपियों को रेंडमली तौर पर परीक्षण कर मूल्यांकन करवाए और उनमें अंक दे। इसके अलावा, एडीजे भर्ती 2020 के खाली पदों को हाईकोर्ट की कार्रवाई के अधीन रखने के लिए कहा था। इसके बावजूद, हाईकोर्ट प्रशासन ने आदेश की पालना करने की बजाय इसे एसएलपी के जरिए सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी।

वहीं, सुप्रीम कोर्ट से एसएलपी खारिज होने पर भी हाईकोर्ट के आदेश की पालना नहीं हुई है।

'अमेरिका का स्वर्णिम युग आज से, ...

- गल्फ ऑफ मैक्सिको का नाम बदल कर गल्फ ऑफ अमेरिका किया।
- कोविड आदेश के उल्लंघन के कारण निष्कासित कर्मचारियों को फिर से नौकरी मिलेगी और हर्जाना भी मिलेगा।
- अपने नागरिकों को समृद्ध बनाने के लिए दूसरे देशों पर टैक्स लगाने की घोषणा की।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कर दिया है। उन्होंने कहा कि मेक्सिको बॉर्डर पर भारी संख्या में अमेरिकी सेना को तैनात किया जाएगा।

डोनाल्ड ट्रंप ने अपने भाषण में कहा कि देश की चुनौतियों को समाप्त कर दिया जाएगा। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका कट्टरपंथी और भ्रष्ट प्रतिष्ठान पर विश्वास के संकट का सामना कर रहा है।

ट्रंप ने कहा कि पिछली सरकार ने हमारे देश में अवैध रूप से प्रवेश करने वाले खतरनाक अपराधियों को शरण और संरक्षण प्रदान किया है।

ट्रम्प ने कहा कि अमेरिका जल्द ही पहले से कहीं अधिक महान, मजबूत और अधिक उत्कृष्ट होगा। उन्होंने कहा कि वह राष्ट्रपति पद पर आत्मविश्वास और आशावाद के साथ लौटे हैं। यह राष्ट्रीय सफलता के एक रोमांचक नए युग की शुरुआत है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि पूरी दुनिया पर सूर्य का प्रकाश फैल रहा है और अमेरिका के पास इस अवसर का लाभ उठाने का अभूतपूर्व अवसर है।

ट्रम्प ने अपने भाषण में अमेरिका के लिए अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, हमारी संप्रभुता पुन: प्राप्त की जाएगी, हमारी सुरक्षा बहाल की जाएगी, न्याय के तराजू को पुन: संतुलित किया जाएगा।

ट्रंप ने कहा कि अमेरिकी न्याय विभाग का क्रूर, हिंसक और अनुचित हथियारीकरण समाप्त हो जाएगा। उन्होंने कहा, हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना होगी जो गौरवान्वित, समृद्ध और स्वतंत्र हो। ट्रम्प ने राष्ट्रपति के रूप में अपने भाषण की शुरुआत अपने साथी राष्ट्रपतियों और कार्यक्रम में उपस्थित अन्य लोगों को संबोधित करके की, जिनमें पूर्व उपराष्ट्रपति कमला हैरिस और पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडेन भी शामिल रहे।

दस लाख ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बल्कि असलियत में उन्होंने एक मिलियन डॉलर यानि, 8.65 करोड़ रुपए का टिकट खरीदा था, इस आयोजन में भाग लेने के लिए।

कांग्रेस का नया मुख्यालय क्या प्रियंका गांधी ...

- क्या एक राजनीतिक पार्टी का दफ्तर, एक ''कॉरपोरेट ऑफिस'' जैसे चल सकता है। पार्टी मुख्यालय में साधारण कार्यकर्ता बड़े-बड़े नेताओं से मिलकर, पार्टी का भावी कार्यक्रम व दिशा निर्धारण में कुछ सक्रिय भूमिका अदा कर सकता है। पर क्या कार्यकर्ता व पत्रकारों की अनुपस्थिति में पार्टी, जनता से कट नहीं जायेगी?
- कांग्रेस, मुख्यालय के संचालन आदि में भाजपा का अनुसरण तो कर रही है। पर, भाजपा एक ''कैडर बेस्ड'' पार्टी है, वहां यह कल्चर चल सकता है।
- पर, कांग्रेस एक आन्दोलन पर निर्भर रहने वाली पार्टी है, जहां कार्यकर्ता ही पार्टी की आत्मा है, ऐसे में, ''कॉरपोरेट स्टाईल'' कल्चर क्या चल पायेगा।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

परिसर में प्रवेश करने तथा नेताओं से मिलने में कठिनाई महसूस होगी। इसके उद्घाटन वाले दिन समारोह में कार्यकर्ता थे ही नहीं, यहां तक कि मीडिया को भी न तो आमंत्रित किया गया था, और न ही घुसने दिया गया था। बाद में पत्रकारों को प्रैस ब्रीफिंग तथा लंच के लिए बुलाया गया था। इससे पहले, जयराम रमेश ने उनसे हाथ जोड़कर माफी मांगी थी तथा यह स्पष्ट किया था कि यह निर्णय उनका नहीं था, बल्कि ऊपर के स्तर पर लिया गया था। लेकिन अगर मीडिया को प्रवेश की अनुमति दी भी जायेगी, तो पत्रकार ग्राउन्ड फ्लोर के अलावा ऊपर की मंजिलों तक नहीं जा सकेंगे, जहां महासचिव तथा अन्य पदाधिकारी बैठेंगे।

मूल रूप से, यह ''नो एन्ट्री ज़ोन'' है। यह एक अभिजात्य कॉर्पोरेट आफिस है, जहां मौजूदा राजनैतिक माहौल, पार्टी के संघर्ष तथा भविष्य की राजनीति को संभालने के तौर-तरीकों झलक और गंध तक महसूस नहीं होती।

दैनिक आधार पर कांग्रेस की कवरेज के लिए जाने वाले नियमित पत्रकारों को पास जारी किये जायेंगे। यह तरीका उन अनेक कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों पर लागू नहीं होगा, जो पार्टी मुख्यालय में प्राय: आते-जाते रहते हैं।

किसी राजनैतिक पार्टी का मुख्यालय उस पार्टी का ह्रदय और आत्मा हुआ करता है, जहां पार्टी के निर्णयों तथा निर्देशों पर चर्चा करने के लिए मीटिंग हुआ करती हैं और उसके बाद वे निर्णय एवं निर्देश देश के कोने-कोने तक पहुंचते हैं।

24 अकबर रोड मुख्यालय के एक वरिष्ठ कर्मचारी के अनुसार, नया मुख्यालय भवन कार्यकर्ताओं तथा जनता के साथ जुड़ाव के अभाव को प्रदर्शित करता है, क्योंकि कांग्रेस विभिन्न हतिधारक समूहों, जातियों और समुदायों की गतिविधियों का केन्द्र हुआ करती थी, तथा विविधतापूर्ण विचारों और जीवन-शैलियों को दर्शाया करती थी।

इस बात की ज्यादा संभावना दिखाई दे रही है कि पार्टी 24, अकबर रोड से ही संचालित होती रहेगी तथा नया परिसर प्रियंका गांधी के पास रहेगा, जहां वे अपना स्वयं राजनैतिक कार्यालय चलायेंगी।

आगामी दिनों में, इससे ज्यादा या इससे कम की संभावना दिखाई नहीं दे रही। प्रियंका गांधी जब से वायनाड चुनाव जीती हैं वे संगठन को चलाने तथा विभिन्न निर्णय लेने में काफी रुचि ले रही हैं। नये भवन के उद्घाटन समारोह से मीडिया को दूर रखने का निर्णय इन्हीं निर्णयों में से एक था, जबकि वे स्वयं ऐसी ए आई सी सी महासचिव हैं, जिनके पास कोई विभाग नहीं हैं।

यह तथ्य, कि कांग्रेस गांधी परिवार के इर्द-गिर्द ही घूमती एवं विकसित होती है, ''इंदिरा भवन'' नामक इस नये मुख्यालय परिसर के तौर-तरीकों से दिखाई दे रहा है।

ऐसा लगता है कि कांग्रेस गांधी परिवार के अलावा, अपना सब कुछ खो चुकी है। स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व करने वाली 140 साल पुरानी पार्टी के लिए यह कितनी दुखद स्थिति है। स्वतंत्रता संघर्ष का नेतृत्व करने वाली पार्टी आज सभी गलत बातों में भाजपा की नकल कर रही है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, जी-1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौन सिटी, जिला करौली से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2008/27147 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908